इग्नू
जन-जन का
विश्वविद्यालय
इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
मानविकी विद्यापीठ

BHDE - 142
राष्ट्रीय काव्यधारा

खंड-3

राष्ट्रीय काव्यधारा

इकाई 14
काव्य वाचन एवं विश्लेषण : भारतवर्ष की श्रेष्ठता, हमारा उद्भव, हमारे पूर्वज, आर्य स्त्रियाँ 331

इकाई 15
काव्य वाचन एवं विश्लेषण : हमारी सभ्यता 347

इकाई 16
काव्य वाचन एवं विश्लेषण : पुष्प की अभिलाषा, कैदी और कोकिला 363

इकाई 17
काव्य वाचन एवं विश्लेषण : प्यारे भारत देश, अमर राष्ट्र, दीप से दीप जले 380

इकाई 18
काव्य वाचन एवं विश्लेषण : झाँसी की रानी 396

इकाई 19
काव्य वाचन एवं विश्लेषण : विप्लव गायन 411

इकाई 20
काव्य वाचन एवं विश्लेषण : हिमालय, समर शेष है, कलम आज उनकी जय बोल 428

इकाई 21
काव्य वाचन एवं विश्लेषण : हल्दीघाटी 'द्वादस सर्ग' 446

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

खंड 3 का परिचय

पाठ्यक्रम का यह खंड राष्ट्रीय काव्यधारा के पाठ्यक्रम हेतु निर्धारित कवियों की चयनित कविताओं के वाचन एवं विश्लेषण पर आधारित है। इसके अंतर्गत विद्यार्थी चयनित कविताओं की ससन्दर्भ व्याख्या, कठिन शब्द और काव्यगत विशेषताओं का अध्ययन करेंगे। इस खंड में निम्नलिखित कवि और कविताओं का अध्ययन अपेक्षित है। मैथिलीशरण गुप्त की 'भारत भारती' से (भारत वर्ष की श्रेष्ठता, हमारा उद्‌भव, हमारी सभ्यता), माखनलाल चतुर्वेदी (पुष्प की अभिलाषा, कैदी और कोकिला, प्यारे भारत देश, अमर राष्ट्र, दीप से दीप जले), सुभद्रा कुमारी चौहान (झांसी की रानी), रामधारी सिंह दिनकर (हिमालय, समर शेष है, कलम आज उनकी जय बोल), श्याम नारायण पाण्डेय (हल्दीघाटी 'द्वादस सर्ग')।

राष्ट्रीय काव्यधारा की कविताओं के विश्लेषण– विवेचन में यह खंड आपके लिए अत्यंत उपयोगी सिद्ध होगा।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

इकाई 14 काव्य–वाचन एवं विश्लेषण : भारतवर्ष की श्रेष्ठता, हमारा उद्भव, हमारे पूर्वज, आर्य स्त्रियाँ

इकाई की रूप रेखा

14.0 उद्देश्य

14.1 प्रस्तावना

14.2 चयनित कविताओं का पाठ एवं विश्लेषण

14.3 उपयोगी पुस्तकें

14.4 बोध प्रश्नों के उत्तर

14.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप–

- मैथिलीशरण गुप्त की चार कविताओं की विस्तृत व्याख्या समझ सकेंगी/सकेंगे;
- मैथिलीशरण गुप्त की कविताओं का मूल स्वर क्या है, इसे पहचान सकेंगी/सकेंगे;
- इन कविताओं के माध्यम से राष्ट्रीयता की भावना को समझ सकेंगी/सकेंगे;
- मैथिलीशरण गुप्त की काव्य–भाषा के तत्वों की पहचान करना सीख सकेंगी/सकेंगे;
- मैथिलीशरण गुप्त की कविताओं में शब्द–योजना और प्रयुक्त शब्दावली से परिचित हो जायेंगी/जायेंगे; और
- मैथिलीशरण गुप्त के जीवन और उनकी साहित्यिक–राजनीतिक यात्रा के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकेंगी/सकेंगे।

14.1 प्रस्तावना

जीवन परिचय–

मैथिलीशरण गुप्त का जन्म 3 अगस्त 1886 में उत्तर प्रदेश में झांसी के पास चिरगांव में हुआ था। इनके पिता का नाम सेठ रामचरण कनकने और माता का नाम काशी बाई था। गुप्त जी का पढ़ाई में मन नहीं लगता था। इसलिए उनकी पढ़ाई अधूरी ही रह गयी। घर में ही हिन्दी, बंगला, संस्कृत साहित्य का अध्ययन किया। कविताएं बचपन से ही लिखते आ रहे थे। सन 1904 में आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के सम्पर्क में आने के बाद, इन्होंने ब्रजभाषा में कविता लिखना छोड़ खड़ी बोली को अपनी रचना का माध्यम बनाया और खड़ी बोली को काव्य भाषा के रूप स्थापित करने का अथक प्रयास किया। उनकी खड़ी बोली की कवितायें महावीर प्रसाद द्विवेदी की मासिक पत्रिका 'सरस्वती' में प्रकाशित होती थीं।

गुप्त जी पहले कांग्रेस के गरम दल से प्रभावित थे। लेकिन सन् 1931 में राष्ट्रपिता गांधी जी के निकट सम्पर्क में आने के बाद गांधीवाद के समर्थक बने। गांधी जी ने उन्हें राष्ट्रकवि की संज्ञा प्रदान की। 16 अप्रैल 1941 को वे सत्याग्रह में भाग लेने के कारण गिरफ्तार कर लिए गए। पहले उन्हें झाँसी और फिर आगरा जेल ले जाया गया। आरोप सिद्ध न होने के कारण सात महीने बाद छोड़ दिया गया। 1952–64 तक के लिए वे राज्यसभा के सदस्य मनोनीत हुए।

उन्होंने 1911 में चिरगाँव में साहित्य सदन नाम से अपना प्रिंटिंग प्रेस स्थापित किया और बाद में झाँसी में 1954–55 में मानस–मुद्रण नामक प्रेस की स्थापना की। 12 दिसम्बर 1964 ई. को 78 वर्ष की आयु में उनका निधन हो गया।

अपने जीवन काल में उन्होंने दो महाकाव्य, 19 खण्डकाव्य, कुछ काव्यगीत और नाटिकाओं आदि की रचना की। हिन्दी में लेखन आरम्भ करने से पूर्व रसिकेन्द्र नाम से ब्रजभाषा में कविताएँ, दोहा, चौपाई, छप्पय आदि छंद लिखते थे। उनके प्रयास से खड़ी बोली हिन्दी की साहित्यिक भाषा का विकास हुआ। वे राष्ट्रवादी विचारों के कवि थे। अपनी कविताओं के माध्यम से उन्होंने नैराश्य में डूबी जनता को आत्मविश्वास भरी ऊर्जामयी वाणी दी, इससे उनकी प्रसिद्ध कृति 'भारत–भारती' जन–जन का कंठहार बन गई थी। इस कृति ने स्वाधीनता के लिए जन–जागरण का शंखनाद किया। हिन्दी साहित्य में गद्य को चरम तक पहुंचाने में जहां प्रेमचंद का विशेष योगदान माना जाता है, वहीं पद्य और कविता में राष्ट्र कवि मैथिलीशरण गुप्त को सबसे आगे माना जाता है।

कृतियां–

महाकाव्य– साकेत, यशोधरा

खण्डकाव्य– जयद्रथ वध, भारत–भारती, पंचवटी, द्वापर, सिद्धराज, नहुष, अंजलि और अघ्र्य, अजित, अर्जन और विसर्जन, काबा और कर्बला, किसान, कुणाल गीत, गुरु तेग बहादुर, गुरुकुल , जय भारत, युद्ध, झंकार, पृथ्वीपुत्र, वक संहार, शकुंतला, विश्व वेदना, राजा प्रजा, विष्णुप्रिया, उर्मिला, लीला, प्रदक्षिणा, दिवोदास, भूमि–भाग।

नाटक– रंग में भंग, राजा–प्रजा, वन वैभव, विकट भट, विरहिणी, वैतालिक, शक्ति, सैरन्ध्री, स्वदेश संगीत, हिड़िम्बा , हिन्दू, चंद्रहास

पुरस्कार, सम्मान–

- हिन्दुस्तान अकादमी पुरस्कार (साकेत के लिए,1935)
- मंगलाप्रसाद पुरस्कार (साकेत के लिए, हिन्दी साहित्य सम्मेलन द्वारा ,1937)
- साहित्य वाचस्पति (1946), पद्मभूषण (1954)

14.2 चयनित कविताओं का पाठ एवं विश्लेषण

एक

भारतवर्ष की श्रेष्ठता

भू–लोक का गौरव प्रकृति का पुण्य लीला–स्थल कहाँ ?
फैला मनोहर गिरी हिमालय और गंगाजल जहाँ ।

सम्पूर्ण देशों से अधिक किस देश का उत्कर्श है,
उसका कि जो ऋषिभूमि है, वह कौन? भारतवर्ष है।

हाँ, वृद्ध भारतवर्ष ही संसार का सिरमौर है,
ऐसा पुरातन देश कोई विश्व में क्या और है ?
भगवान की भव–भूतियों का यह प्रथम भण्डार है,
विधि ने किया नर–सृष्टि का पहले यहीं विस्तार है।।

यह पुण्य भूमि प्रसिद्ध है, इसके निवासी आर्य हैं
विद्या, कला–कौशल्य सबके, जो प्रथम आचार्य हैं।
संतान उनकी आज यद्यपि, हम अधोगति में पड़े,
पर चिन्ह उनकी उच्चता के, आज भी कुछ हैं खड़े।।

(भारत भारती, अतीत खण्ड)

संदर्भ और प्रसंग– प्रस्तुत कविता, राष्ट्र कवि मैथिलीशरण गुप्त के प्रसिद्ध खण्ड काव्य, ''भारत भारती'' के अतीत खंड में "भारत की श्रेष्ठता" शीर्षक से प्रकाशित है। "भारत भारती" के अतीत खण्ड की इस कविता में कवि ने भारत के गौरवशाली अतीत का वर्णन किया है। बताया है कि भारत ही विश्व का वह देश है जहाँ सर्वप्रथम सृष्टि आरम्भ हुई। यहाँ से ही समस्त विश्व में ज्ञान का प्रकाश फैला। समस्त संसार को ज्ञान–विज्ञान, कला–कौशल तथा सभ्यता–संस्कृति सिखाने वाला देश भारत ही है। भारत को अपने गौरवमय अतीत को स्मरण करना चाहिए तथा स्वदेश के उत्कर्ष के लिए कार्य करना चाहिए। 'भारत–भारती' राष्ट्रीयता की उद्घोषक रचना है।

कठिन शब्द

भू लोक–पृथ्वी लोक, **मनोहर**–सुंदर, **उत्कर्ष**–उन्नति, **सिरमौर**–सबसे ऊपर, **पुरातन**–प्राचीन, **भवभूति**–विश्व प्रसिद्ध मनुष्य, **नर–सृष्टि**–मनुष्य की उत्पत्ति, **अधोगति**–पतन।

व्याख्या

पहले अनुच्छेद में कवि प्रश्न करता है कि विश्व में वह कौन सी जगह है जहां से प्रकृति ने अपना सृष्टि विस्तार सबसे पहले आरम्भ किया? इस प्रश्न का स्वयं ही उत्तर देते हुए कवि कहता है कि उस देश में, जहां हिमालय जैसा सुंदर पर्वत है और गंगा जैसी पवित्र नदी बहती है। देश का नाम न लेकर यहां कवि हिमालय और गंगा के संकेत से बताना चाहता है कि हम उस महान भारत देश के निवासी हैं जहां हिमालय जैसा सुंदर पर्वत है, जहां गंगा जैसी पवित्र नदी है और जहां प्रकृति ने सबसे पहले अपनी सृष्टि का विस्तार करना प्रारम्भ किया। अगली पंक्ति में कवि पूछता है कि विश्व में सबसे उन्नत देश कौन रहा है? फिर उत्तर देता है– जिस देश में ऋषि निवास करते हैं, अर्थात भारत ही विश्व में सबसे उन्नत देश रहा है। यह हमारे लिए गौरव की बात है।

दूसरे बंद में कवि ने कहा है कि भारत विश्व का सबसे प्राचीन और श्रेष्ठ देश है। इतना प्राचीन देश पूरे संसार में दूसरा नहीं है। ईश्वर ने सृष्टि में जितने भी ऐश्वर्य प्रदान किये हैं,

भारत उन सबका भण्डार है। अर्थात विश्व का यह सबसे सम्पन्न देश है। ब्रह्मा ने सबसे पहले भारत में ही मनुष्य की रचना की। अर्थात भारत की मानव सभ्यता ही विश्व की सबसे प्राचीन सभ्यता है। अपने उक्त कथनों के समर्थन में कवि ने कुछ पुरातात्विक प्रमाणों का भी उल्लेख किया है, जिससे भारत की प्राचीनता प्रमाणित होती है। कवि ने बताया है कि पुराणों के अनुसार, ब्रह्म जी ने सबसे पहले ब्रह्मवर्त में ही सृष्टि–रचना का प्रारम्भ किया था। इस पैराणिक साक्ष्य से भारत का विश्व में प्राचीनतम देश होना सिद्ध होता है। कवि के अनुसार, राजस्थान में एक स्थान पर लिखा है कि आर्यावर्त के अतिरिक्त विश्व के किसी अन्य स्थान में सृष्टि के प्रारम्भ का प्रमाण नहीं मिलता। इंजील और कुरान से भी भारत का प्राचीन होना ही प्रमाणित होता है। जल प्रलय के बाद वृक्ष लताओं और मनुष्यों की उत्पत्ति सबसे पहले भारत में ही हुई थी।

तीसरे बंद में भी भारत के निवासियों–आर्यों को विद्या, कला और कौशल में विश्व का मार्गदर्शक बताया गया है और चिंता व्यक्त किया गया है कि इतने प्राचीन और श्रेष्ठ परम्परा वाले विश्व के सबसे उन्नत देश की संतानों की उन्नति रूकी पड़ी है। हम अवनति की दिशा में जा चुके हैं, फिर भी हमारी श्रेष्ठता के चिन्ह हमारी संस्कृति में आज भी मौजूद हैं।

काव्य सौष्ठव–

- भाषा की दृष्टि से इस कविता में मानक खड़ी बोली का प्रयोग किया गया है।
- भाषा संस्कृतनिष्ठ और सामासिक है
- पद्य का प्रवाह बड़ा आकर्शक है।
- प्रश्न शैली के प्रयोग से कविता में नाटकीयता का तत्व आ गया है। उससे कविता का सौंदर्य बढ़ गया है।
- इसका शब्द सौंदर्य और भाव सौंदर्य दोनों हमारी अस्मिता चेतना के अनुकूल है।

विशेष

भू–लोक, पुण्य लीला–भूमि, ऋषि, गंगा जल, भगवान, विधि, नर–सृष्टि, पुण्य भूमि, आचार्य, आदि शब्दों के प्रयोग से इस कविता में प्राचीन वैदिक पैराणिक समय के भारतीय वातावरण का बोध होता है। इसमें भारतीय दार्शनिक आध्यात्मिकता की गंध साफ महसूस की जा सकती है।

दो

हमारा उद्भव

शुभ शान्तिमय शोभा जहाँ भव–बन्धनों को खोलती,
हिल–मिल मृगों से खेल करती सिंहनी थी डोलती!
स्वर्गीय भावों से भरे ऋषि होम करते थे जहाँ,
उन ऋषिगणों से ही हमारा था हुआ उद्भव यहाँ।।

संदर्भ और प्रसंग–प्रस्तुत कविता, राष्ट्र कवि मैथिलीशरण गुप्त के प्रसिद्ध खण्ड काव्य, ''भारत भारती'' के अतीत खंड में ''हमारा उद्धव'' शीर्षक से प्रकाशित है। इस कविता में अपने पूर्वजों के समय और समाज को स्मरण किया गया है।

कठिन शब्द

भव–बंधन–जीवन मरण का बंधन, **स्वर्गीय भाव**–उच्च भाव, **होम**–यज्ञ हवन, **उद्‌भव**– उत्पत्ति।

व्याख्या–

इस कविता में भारत के प्राचीन समाज की शुभता और शांति को याद किया गया है। कवि कहता है कि कभी वह समय था जब देश में सब तरफ अच्छे विचारों, कर्मो और आध्यात्मिक चिंतन का प्रकाश फैला होता था। वैर भाव और हिंसा का नाम तक नहीं था। जंगलों में सिंहिनी और हिरन एक साथ खेलते थे। जहां ऋषि लोग सब तरफ यज्ञ और अनुष्ठान से आध्यामिक वातावरण बनाये रखते थे। कवि कहता है कि ऋषि ही हमारे पूर्वज थे। अर्थात आध्यात्मिकता हमारे संस्कार में रचा हुआ है।

काव्य सौष्ठव–

- पहली पंक्ति में, 'सुख–शांतिमय–शोभा' में अनुप्रास अलंकार के साथ–साथ समास का भी सुंदर प्रयोग हुआ है।
- इसी तरह दूसरी पंक्ति में ईकारांत और ईकारांत शब्दों के प्रयोग से प्रवाह सौंदर्य पैदा हुआ है।
- ऋषि आश्रम के पवित्र शांतिमय वातावरण का बहुत सुंदर बिम्ब निर्मित हुआ है।

विशेष–यह कविता हमारे अंदर एक महान ऋषि परम्परा का वंशज होने का गौरव बोध कराती है।

तीन

हमारे पूर्वज

उन पूर्वजों की कीर्ति का वर्णन अतीव अपार है,
गाते नहीं उनके हमीं गुण गा रहा संसार है ।
वे धर्म पर करते निछावर तृण–समान शरीर थे,
उनसे वही गम्भीर थे, वरवीर थे, ध्रुव धीर थे।।

उनके अलौकिक दर्शनों से दूर होता पाप था,
अति पुण्य मिलता था तथा मिटता हृदय का ताप था ।
उपदेश उनके शान्तिकारक थे निवारक शौक के,
सब लोक उनका भक्त था, वे थे हितैषी लोक के।।

लखते न अघ की ओर थे वे, अघ न लखता था उन्हें,
वे धर्म्म को रखते सदा थे, धर्म्म रखता था उन्हें !
वे कर्म्म से ही कर्म्म का थे नाश करना जानते,
करते वही थे वे जिसे कर्तव्य थे वे मानते।।

वे सजग रहते थे सदा दुख–पूर्ण तृष्णा–भ्रान्ति से ।
जीवन बिताते थे सदा सन्तोष–पूर्वक शान्ति से ।

इस लोक में उस लोक से वे अल्प सुख पाते न थे,
हँसते हुए आते न थे, रोते हुए जाते न थे।।

जिनकी अपूर्व सुगन्धि से इन्द्रिय–मधुपगण थे हिले,
सद्भाव सरसिज वर जहाँ पर नित्य रहते थे खिले ।
लहरें उठाने में जहाँ व्यवहार–मारुत लग्न था,
उन्मत्त आत्मा–हंस उनके मानसों में मग्न था।।

वे ईश–नियमों की कभी अवहेलना करते न थे,
सन्मार्ग में चलते हुए वे विघ्न से डरते न थे ।
अपने लिए वे दूसरों का हित कभी हरते न थे,
चिन्ता–प्रपूर्ण अशान्तिपूर्वक वे कभी मरते न थे।।

वे मोह–बन्धन–मुक्त थे, स्वच्छन्द थे, स्वाधीन थे
सम्पूर्ण सुख–संयुक्त थे, वे शान्ति–शिखरासीन थे।
मन से, वचन से, कर्म से वे प्रभु–भजन में लीन थे,
विख्यात ब्रह्मानन्द – नद के वे मनोहर मीन थ।।

उनके चतुर्दिक–कीर्ति–पट को है असम्भव नापना,
की दूर देशों में उन्होंने उपनिवेश–स्थापना ।
पहुँचे जहाँ वे अज्ञता का द्वार जानो रुक गया,
वे झुक गये जिस ओर को संसार मानो झुक गया।।

वर्णन उन्होंने जिस विषय का है किया, पूरा किया;
मानो प्रकृति ने ही स्वयं साहित्य उनका रच दिया ।
चाहे समय की गति कभी अनुकूल उनके हो नहीं,
हैं किन्तु निश्चल एक–से सिद्धान्त उनके सब कही।।

वे मेदिनी–तल में सुकृत के बीज बोते थे सदा,
पर दुःख देख दयालुता से द्रवित होते थे सदा ।
वे सत्वगुण–शुभ्रांशु से तम–ताप खोते थे सदा,
निश्चिन्त विघ्न–विहीन सुख की नींद सोते थे सदा।।

वे आर्य ही थे जो कभी अपने लिए जीते न थे,
वे स्वार्थ–रत हो मोह की मदिरा कभी पीते न थे।
संसार के उपकार–हित जब जन्म लेते थे सभी,
निश्चेष्ट होकर किस तरह वे बैठ सकते थे कभी?।।

संदर्भ और प्रसंग– यह कविता मैथिलीशरण गुप्त के प्रसिद्ध खण्ड काव्य 'भारत भारती' के 'अतीत खण्ड' में 'हमारे पूर्वज' शीर्षक से संकलित है। इस कविता में कुल 11 बंद हैं। इसमें धर्मपरायणता, सत्य निष्ठा, त्याग, पर–दुख कातरता, दानशीलता, सदाचार, सादगी,

शुचिता, सर्जनात्मकता, सिद्धांतवादिता, प्रभावशीलता आदि गुणों के लिए हमारे पूर्वजों की प्रशंसा की गयी है और हमें उनका वंशज होने का गौरव बोध कराया गया है। इस कविता का उद्देश्य पराधीनता से उपजी आत्महीनता की मनोदशा से उबार कर भारत वासियों के मन मे राष्ट्रीय गौरव जगाना है। यह कविता उस समय लिखी गयी थी जब हमारा देश अंग्रेजो की गुलामी के कठिन दौर से गुजर रहा था।

कठिन शब्द

अतीव– बहुत अधिक, **कीर्ति**– अच्छा काम, **वर वीर**– श्रेष्ठ बहादुर, **अलौकिक**– ईश्वरीय, **निवारक**– दूर करने वाला, **अघ**–पाप, **लखता था**–देखता था, **तृष्णा**–प्यास, **भ्रांति**–भ्रम, अल्प– थोड़ा, **मधुप**–भौंरा, **सरजित**– कमल, **नित्य**–रोज, **मारूत**– हवा, **अवहेलना**– अनादर, **उन्मत्त**–नशा में चूर, **सन्मार्ग**– सही रास्ता, **विघ्न**– समस्या, रूकावट, **मुक्त**– खुला, **स्वच्छन्द**– अपनी पसंद का जीवन, **स्वाधीन**– किसी के दबाव या बंधन में न होना, **शिखरासीन**– सबसे ऊपर, **विख्यात**– प्रसिद्ध, **नद**–नदी, **मनोहर**–सुंदर, **मीन**–मछली, **चर्तुदिक**– चारो ओर, **अज्ञता**– अज्ञानता, **मेदिनी**–पृथ्वी, **सुकृत**–अच्छे कर्म, **शुभ्रांशु**– सफेदी की चमक, **तम**–अंधकार, **मदिरा**–शराब, **निश्चेष्ट**– खामोश, प्रयास न करना।

व्याख्या–

इस बंद में कवि अपने पूर्वजों की प्रशंसा करते हुए कहता है कि हमारे पूर्वजों की कीर्ति का वर्णन केवल देश ही नहीं दुनिया भर के लोग करते हैं। उन्हें अपने धर्म से कोई डिगा नहीं सकता था। धर्म की रक्षा के लिए वे प्राणों का त्याग भी करने से हिचकते न थे।

हमारे पूर्वज इतने धर्मात्मा और महान थे कि उनके दर्शन मात्र से सारे पाप दूर हो जाते थे। मन में शांति का भाव पैदा हो जाता था। उनके उपदेशों से मन का सारा शोक समाप्त हो जाता था। वे इतने पुण्यात्मा थे कि पूरा विश्व उनका भक्त था और वे स्वयं सम्पूर्ण संसार का हित सोचते रहते थे।

हमारे पूर्वज पूरी तरह निष्पाप थे। पाप कर्म से हमेशा दूर रहते थे और कोई उनसे पाप कर्म के बारे में सोच भी नहीं सकता था। वे परम धार्मिक थे। धर्म उनका और वे धर्म का ध्यान रखते थे। वे कर्म से कर्म का नाश करना जानते थे और अपने कर्तव्य के प्रति पूरी तरह सजग थे। जो उचित होता था वही करते थे।

दुःख और लोभ को भ्रांति मानते थे। शांति और संतोष पूर्वक जीवन बिताना ही उनका लक्ष्य होता था। वे मृत्युलोक और स्वर्ग लोक, दोनों में एक ही तरह का आचरण करते थे। संसार में हों या स्वर्ग में हमेशा से एक जैसा भाव बनाये रखते थे। उन्हें न दुख परेशान करता था न सुख के लिए परेशान रहते थे।

पूर्वजों के सद्भाव पूर्ण व्यवहार और मर्यादित जीवन की तुलना मानसरोवर में खिले कमल के फूलों से करते हुए इस बंद में कवि कहता है कि हमारे पूर्वजों के स्वभाव की सुगंधि से चंचल इंद्रिय रूपी भंवरे हमेशा डोलते रहते थे। उनके सद्भाव का कमल हमेशा ही खिला रहता था। उनका व्यवहार ऐसा था मानों उसके प्रभाव से चारों तरफ शीतल हवा प्रवाहित हो रही हो और सुगंधि से भरे हवा के झोंको से आत्मा रूपी हंस मगन हो रहा हो।

कवि इस बंद में कहता है कि हमारे पूर्वज प्रकृति से बहुत प्यार करते थे। भगवान के बनाये नियमों का कभी उल्लंघन नहीं करते थे। अर्थात ईश्वर के बनाये विधानों के अनुरूप ही

जीवन यापन करते थे। वे न तो कभी गलत रास्ते पर जाते थे न किसी बाधा से भयभीत होते थे। अपने कर्तव्य पथ पर दृढ़ता पूर्वक चलते रहते थे। अपने हित के लिए किसी दूसरे को कष्ट देना उनका स्वभाव नहीं था। वे शांति पूर्वक जीवन जीते हुए चिंता मुक्त रहते थे। और चिंता मुक्त रहते हुए ही इस लोक से शांति पूर्वक प्रस्थान कर जाते थे।

अपने पूर्वजों के बारे में कवि कहता है कि हमारे पूर्वज जरा–माया–जन्म–मृत्यु–लाभ –लोभ–अहंकार आदि सभी तरह के लौकिक बंधनों से मुक्त एक स्वच्छंद, स्वाधीन और आत्म संतुष्ट जीवन जीते थे। उनका जीवन परम शांत और संतोष–सुख से भरा होता था। भगवान का स्मरण करते रहने में उन्हें सुख मिलता था। कवि उन्हें ब्रह्मानन्द रूपी नदी के मछली से उपमित करते हुए कहना चाहता है कि हमारे पूर्वज आध्यात्मिक आनंद में हमेशा डूबे रहते थे।

इस बंद में कवि हमारे पूर्वजों की कीर्ति और यश की प्रसंशा में कहता है कि उनकी कीर्ति चारो दिशाओं में फैली हुई थी। दूर दूर के देशों के लोग उनके ज्ञान का आदर करते थे। जहाँ–जहाँ हमारे पूर्वजों के कदम पड़े वहाँ–वहाँ से अज्ञान का अंधकार मिट गया। हमारे पूर्वजों का प्रभाव इतना अधिक था कि पूरा विश्व उनका अनुसरण करता था।

पूर्वजों की सर्जनात्मक प्रतिभा की प्रशंसा करते हुए इस बंद में कवि ने कहा है कि हमारे पूर्वज दृढ़ निश्चयी थे। जो भी काम हाथ में लेते थे उसे पूरा करके ही विश्राम करते थे। परिस्थितियां चाहे जितनी प्रतिकूल हों, अपने सिद्धांत से विचलित नहीं होते थे।

हमारे पूर्वज अच्छे–अच्छे कामों से भारत माता का मस्तक ऊंचा रखना अपना धर्म समझते थे। वे स्वभाव से दयालु थे। दूसरों के दुख से द्रवित हो जाते थे। अपने सदगुणों से समाज को सुखी बनाये रखते थे। उन्हें किसी प्रकार की चिंता नहीं सताती थी। निश्चिंत होकर पूरी नींद सोते थे।

कविता के अंतिम बंद में कवि कहता है कि हमारे पूर्वजों का जीवन परोपकार के लिए समर्पित रहता था। कभी वे स्वार्थ के वशीभूत होकर अहंकार का प्रदर्शन नहीं करते थे। जिनका जन्म ही परोपकार के लिए हुआ हो, वे भला दूसरों को दुखी कैसे देख सकते थे। अर्थात वे हमेशा दूसरों का दुख दूर करने में लगे रहते थे।

काव्य–सौष्ठव –

- गुप्त जी खड़ी बोली के पहले कवि हैं। इस संग्रह की कविताओं की काव्यभाषा पहले के संग्रहो की तुलना में काफी सुधरी हुई और रसात्मक है।
- इसमें खड़ी बोली को काव्यभाषा का सरस सौंदर्य प्रदान करने का कवि का प्रयास देखने को मिलता है।
- इस कविता में कुल ग्यारह बंद हैं। प्रत्येक बंद चार पंक्तियों का है।
- सभी पद शुद्ध संस्कृतनिष्ठ खड़ी बोली में, पद्यात्मक शैली में रचे गये हैं।
- पद्यात्मक और तुकांत होने के कारण इसे पढ़ने में रसानुभूति होती है।
- संस्कृतनिष्ठ होते हुए भी भाषा बहुत कठिन नहीं है।
- अपने अतीत के प्रति आदर भाव से प्रेरित होने के कारण कविता का भाव मन को आकर्षित करता है।

- कहीं–कहीं रूपक अलंकार का बड़ा ही सुंदर प्रयोग हुआ है।
- कविता का भाव सौंदर्य बहुत महत्वपूर्ण है।
- तुकों में स्वाभाविकता है। बलात तुक बैठाने का जोड़ तोड़ नहीं है।

विशेष–मैथिलीशरण गुप्त राष्ट्रवादी चेतना के कवि थे। उनका सम्पूर्ण जीवन और रचना कर्म राष्ट्रभारती की सेवा के लिए कृत संकल्पित था। वे कहते थे कि संसार में ऐसा कोई काम नहीं है जो समुचित उद्योग से सिद्ध न हो सके। परंतु उद्योग के लिए उत्साह की आवश्यकता होती है। इसी उत्साह को उत्तेजित करने के लिए कविता एक साधन है। गुप्त जी अपनी कविता को इसी उत्साह वर्धन का साधन बनाना चाहते थे।

चार

आर्य–स्त्रियाँ

केवल पुरुष ही थे न वे जिनका जगत को गर्व था,
गृह–देवियाँ भी थीं हमारी देवियाँ ही सर्वथा ।
था अत्रि–अनुसूया–सदृश गार्हस्थ्य दुर्लभ स्वर्ग में,
दाम्पत्य में वह सौख्य था जो सौख्य था अपवर्ग में।।

निज स्वामियों के कार्य में सम भाग जो लेती न वे,
अनुरागपूर्वक योग जो उसमें सदा देती न वे ।
तो फिर कहातीं किस तरह 'अर्द्धांगिनी' सुकुमारियाँ ?
तात्पर्य यह–अनुरूप ही थीं नरवरों के नारियाँ।।

हारे मनोहत पुत्र को फिर बल जिन्होंने था दिया,
रहते जिन्होंने नववधू के सुत–विरह स्वीकृत किया ।
द्विज–पुत्र–रक्षा–हित जिन्होंने सुत–मरण सोचा नहीं,
विदुला, सुमित्रा और कुन्तो–तुल्य माताएँ रहीं।।

बदली न जा, अल्पायु वर भी वर लिया सो वर लिया;
मुनि को सता कर भूल से, जिसने उचित प्रतिफल दिया ।
सेवार्थ जिसने रोगियों के था विराम लिया नहीं,
थीं धन्य सावित्री, सुकन्या और अंशुमती यहीं।।

मूँदे रही दोनों नयन आमरण गान्धारी जहाँ,
पति–संग दमयन्ती स्वयं बन बन फिरीं मारी जहाँ ।
यों ही जहाँ की नारियों ने धर्म्म का पालन किया,
आश्चर्य क्या फिर ईश ने जो दिव्य–बल उनको दिया।।

अबला जनों का आत्म–बल संसार में था वह नया,
चाहा उन्होंने तो अधिक क्या, रवि–उदय भी रुक गया !

जिस क्षुब्ध मुनि की दृष्टि से जलकर विहग भू पर गिरा,
वह भी सती के तेज–सम्मुख रह गया निष्प्रभ निरा !।।

संदर्भ और प्रसंग–

प्रस्तुत कविता मैथिलीशरण गुप्त के खण्ड काव्य, 'भारत भारती' में 'अतीत खंण्ड' के 'आर्य स्त्रियाँ' शीर्षक से संकलित है। चार–चार पंक्तियों के छः बंदों से बनी इस कविता में प्राचीन भारत की स्त्रियों के त्याग और पतिपरायणता, सेवा भाव, वीरता, दृढ़ता, और गृहस्थ जीवन को समान जिम्मेदारी से निर्वहन करने की कर्मशीलता, सतीत्व, धर्मशीलता आदि का उदाहरणों के साथ वर्णन किया गया है। कविता में विदुला, सुमित्रा, कुंती, सावित्री, सुकन्या, अंशुमती, गांधारी, दमयंती, आदि पौराणिक महिला पात्रों का उल्लेख हुआ है। पाठको की सुविधा के लिए इन महिलाओं के त्याग और बलिदान की पौराणिक कहानियों का फुटनोट में संक्षेप में वर्णन कर दिया गया है, जिससे कविता का अर्थ स्पष्ट हो गया है। इन कविताओं का लक्ष्य यह बताना है कि हमारी आर्य संस्कृति में स्त्रियों को पुरूषों के समान ही सम्मान और अधिकार प्राप्त था तथा वे कंधे से कंधा मिला कर समाज के उत्थान कार्य में सहयोग देती रहती थीं।

कठिन शब्द

गर्व–अभिमान, **गृह–देवियां**–गृहिणियां, **सर्वथा**–हर प्रकार से, **अत्रि–अनुसूया**–पौराणिक स्त्रियों के नाम, **सदृश**– जैसी, **गार्हस्थ्य**– गृहस्थी, **दाम्पत्य**–पति–पत्नी संबंध, **सौख्य**– प्रेमभावना, **अपवर्ग**–पूर्ति या संतुष्टि, **निज**–अपने, **स्वामी**– पति, **सम भाग**– बराबर का सहयोग, **योग**– सहयोग, **अर्द्धांगिनी**– पत्नी, **तात्पर्य**– अर्थ, मतलब, **अनुरूप**– जैसा होना चाहिए, **नरवर**– महापुरूष, **मनोहत**– मन से हारा हुआ, **नव–वधू**–नयी व्याह कर आई वधू, **सुत–विरह**– पुत्र के मरने का दुख, **सेवार्थ**– सेवा के लिए, **विराम**– विश्राम, सावित्री, सुकन्या, **अंशुमती**– पौराणिक स्त्रियों के नाम, **आमरण**– मृत्यु तक, जीवन भर, **गांधारी**– महाभारत में धृतराष्ट्र की पत्नी, **दमयंती**– राजा नल की पत्नी, **दिव्यबल**– अलौकिक शक्ति, **अबला**– स्त्री, **क्षुब्ध**–दुखी परेशान, **विहग**–पक्षी, **भू**–पृथ्वी, **निश्प्रभ**–हक्का बक्का, चकित,

व्याख्या–

कवि कहता है कि भारत का गौरव पूरे संसार में प्रकाशित था। संसार को हमारे महान आर्यपुरूषों के सुकृत्यों और धर्माचरण पर ही नहीं यहाँ की महान आर्य स्त्रियों, जो वास्तव में गृहिणियां थी, लेकिन, जिन्हें आदर से देवी कहा जाता था, के त्याग, वीरता, दृढ़ता और बुद्धिमत्ता पर भी गर्व होता था। हमारे देश की अत्रि और अनुसूया जैसी गृहस्थ स्त्रियों नें अपने दाम्पत्य जीवन में प्रेम और सद्‌भावना का जो उदाहरण पेश किया, वैसा उदाहरण स्वर्ग में भी दुर्लभ होगा।

आर्य स्त्रियाँ गार्हस्थ्य जीवन में अपने पतियों का सदा प्रेमपूर्वक सहयोग करती थीं, तभी उन्हें अर्द्धांगिनी कहा जाता था। तात्पर्य यह कि आर्य स्त्रियाँ अपने पतियों के अनुरूप व्यवहार करती थीं। किसी प्रकार का क्लेश नहीं होता था।

तीसरे बंद में पौराणिक प्रसंगों के हवाले से भारत की नारियों के त्याग की प्रसंशा की गयी है। माता विदुला ने अपने भयभीत पुत्र को युद्ध के लिए तैयार कर पुनः लड़ाई के मैदान में भेज दिया था, उर्मिला ने पुत्र मोह का त्याग कर लक्ष्मण को राम के साथ वन जाने की आज्ञा

दे दी। महा बलशाली राक्षस बकासुर से ब्राह्मण परिवार की रक्षा के लिए माता कुंती ने पुत्र भीम को युद्ध करने के लिए भेज दिया।

सावित्री, सुकन्या और अंशुमती जैसी महिलाओं की पतिपरायणता, धैर्य और बुद्धिमत्ता को याद करके कवि नें बताना चाहा है कि हमारे यहां की स्त्रियाँ संकट के समय अपने पतियों का दृढ़ता पूर्वक साथ देती रहीं हैं। गांधारी तो अपने जन्मांध पति के प्रति अपनी संवेदना के कारण आजीवन आंख पर पट्‌टी बांधे रहीं और दमयंती अपने पति के साथ वन में भटकती रही। कवि कहता है कि ऐसी धर्मपरायण आर्य स्त्रियों को यदि विधाता ने दिव्य बल दिया था तो यह उचित ही है। इसमें आश्चर्य करने की कोई बात नहीं है।

कविता के अंतिम बंद में पतिव्रता स्त्रियों को प्राप्त दिव्य शक्ति का उल्लेख किया गया है। पौराणिक कथा के अनुसार एक पतिव्रता स्त्री को एक ब्राह्मण ने शाप दे दिया कि सूर्योदय होते ही तुम्हारा पति मर जायेगा, शाप सुन पतिव्रता स्त्री ने कहा सूर्योदय होने ही नहीं पायेगा। उसने अपने पतिव्रत बल से सूर्योदय को ही रोक दिया था। एक अन्य पौराणिक कथा में एक मुनीश्वर ने अपने क्रोध से कौओं को राख कर दिया था। किन्तु एक पतिव्रता स्त्री के आगे उनकी एक न चली। उस स्त्री का पतिव्रत तेज इतना अधिक था कि मुनीश्वर हतप्रभ रह गये।

उपरोक्त कविता में कर्तव्य परायण, पतिपरायण और धर्म परायण आर्य स्त्रियों के आत्म बल, बुद्धि बल और सेवा बल का वर्णन किया गया है। इसे पढ़कर पाठक के मन में अपने प्राचीन भारत के जीवनादर्शो के प्रति गर्व की अनुभूति होती है और मन में राष्ट्र प्रेम पैदा होता है।

काव्य सौष्ठव–

- कविता में गंभीर रस की सृष्टि हुई है।
- पौराणिक दृष्टांतों से कविता में गाम्भीर्य आ गया है।
- यत्र तत्र रूपकों के प्रयोग से कविता में सौंदर्य पैदा हो गया है।
- खड़ी बोली में काव्य सर्जना के आरम्भिक प्रयास के तौर पर देखने से यह कविता बहुत परिपक्व जान पड़ती है।
- कहीं कहीं अलंकारों की छटा भी देखने को मिल जाती है।

विशेष–परम्परा के प्रति भारतीयों में गौरव का बोध पैदा करना इस कविता का लक्ष्य है। मजबूत तर्कों और पौराणिक दृष्टांतों से पाठकों के मन पर अपेक्षित प्रभाव डालने में कविता सफल हुई है।

बोध प्रश्न–1

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दें–

1. 'भारत वर्ष की श्रेष्ठता' कविता के आधार पर स्पष्ट करें कि भारत वर्ष को दुनिया में क्यों श्रेष्ठ माना जाता है?

   ....

   ....

   ....

2. मैथिलीशरण गुप्त के जीवन के बारे में क्या जानते हैं?

....

....

....

3. 'भारत भारती' खण्ड काव्य किस विषय पर केन्द्रित है। इसके बारे में आप क्या जानते हैं?

....

....

....

4. कवि ने, 'विधि ने किया नर–सृष्टि का पहले यहां विस्तार है' क्यों कहा है?

....

....

....

5. कवि के अनुसार, हमारा उद्भव किससे हुआ है?

....

....

....

6. 'हमारे पूर्वज' कविता के आधार पर अपने पूर्वजों के गुणों और आचरण आदि के विषय में क्या जानते हैं, संक्षेप मे वर्णन करें।

....

....

....

7. कविता में पूर्वजों को शिखरासीन कहने का क्या आशय है?

....

....

....

8. कविता के किस बंद में पूर्वजों के निःस्वार्थी, परोपकारी और हमेशा कर्मलीन होने की बात कही गयी है?

....

....

....

9. 'हमारे पूर्वज' कविता में अनुप्रास का बड़ा सुंदर प्रयोग हुआ है। उदाहरण देकर समझाइए?

....

....

....

10. आर्य स्त्रियों की क्या खूबियां थीं?

....

....

....

11. गांधारी के बारे में क्या जानते हैं। 'हमारे पूर्वज' कविता में उनका किस अर्थ में नाम आया है?

....

....

....

12. किसके चाहने से रवि उदय रूक गया था? इसकी अंतर्कथा पर प्रकाश डालिए।

....

....

....

बोध प्रश्न–2

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

i. मैथिलीशरण गुप्त ने कितने महाकाव्य लिखे थे?

क) एक ख) दो ग) तीन घ) एक भी नहीं।

ii. गुप्त जी का जन्म कब हुआ था?

क) सितम्बर 1986 ख) अगस्त 1876 ग) 3 अगस्त 1886

घ) 3 अगस्त 1904

iii. गुप्त जी आरम्भ में किस भाषा में कविताएं लिखते थे?

क) खड़ी बोली में ख) ब्रजी में ग) मगधी में घ) बुंदेली में।

iv. 'साकेत' महाकाव्य के लिए गुप्त जी को कौन सा पुरस्कार मिला था?

क) भारत भारती ख) साहित्य वाचस्पति ग) साहित्य अकादमी

घ) हिन्दुस्तान अकादमी

v. 'भारत भारती' खण्ड काव्य किस बोली का काव्य है?

क) खड़ी बोली ख) ब्रजी बोली ग) बैसवाड़ी घ) मिश्रित बोली

vi. 'भारत भारती' में कुल कितने खण्ड हैं?

क) दो ख) तीन ग) पांच घ) सात

vii. 'भारत की श्रेष्ठता' कविता किस खंड से ली गयी है?

क) भविष्य खण्ड से ख) अतीत खण्ड से ग) वर्तमान खण्ड से घ) मंगलाचरण से।

viii. किस कविता में भारत को ऋषि–भूमि कहा गया है?

क) हमारे पूर्वज ख) हमारा उद्‌भव ग) भारत की श्रेष्ठता घ) आर्य स्त्रियाँ।

ix. 'भारत की श्रेष्ठता' नामक कविता में भारत को 'वृद्ध भारत वर्ष' क्यों कहा गया है?

क) क्योंकि भारत में बूढ़े रहते हैं ख) क्योंकि भारत बूढ़ों का देश है ग) क्योंकि भारत प्राचीन देश है घ) क्योंकि भारत गरीब है।

x. 'जिनकी अपूर्व सुगन्धि से इन्द्रिय–मधुपगण थे हिले,' यह कथन किसके लिए आया है?

क) आर्य स्त्रियों के लिए ख) पूर्वजों के लिए ग) भारत वर्ष के लिए घ) कवि के लिए

xi. कवि की मृत्यु किस सन में हुई थी?

क) 1970 में ख) 1986 में ग) 1964 में घ) 1931 में।

xii. सृष्टि की रचना सबसे पहले कहां हुई थी?

क) ब्रह्मावर्त में ख) लक्षद्वीप में ग) अफगानिस्तान में घ) स्वर्ग में।

14.3 उपयोगी पुस्तके

भारत भारती–मैथिलीशरण गुप्त

14.4 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न–1

1. कवि का मानना है कि भारत ही विश्व का वह देश है जहाँ सर्वप्रथम सृष्टि आरम्भ हुई। यहीं से समस्त विश्व में ज्ञान का प्रकाश फैला। विश्व को ज्ञान–विज्ञान, कला–कौशल तथा सभ्यता– संस्कृति सिखाने वाला देश भारत ही है। यह सबसे प्राचीन है। इन्हीं कारणों से भारत को दुनिया में सर्वश्रेष्ठ देश माना जाता है।

2. गुप्त जी का जन्म एक वैष्णव परिवार में हुआ था। उनकी शिक्षा दीक्षा घर पर ही हुई थी। उन्होंने 1904 से ही कविता लिखना शुरू कर दिया था। पहले वे ब्रज भाषा में

लिखते थे किन्तु महावीर प्रसाद द्विवेदी से सम्पर्क में आने के बाद खड़ी बोली में लिखने लगे। गुप्त जी खड़ी बोली के पहले कवि है। वे राष्ट्रवादी चेतना के कवि थे। पहले कांग्रेस के गरम दल से प्रभावित थे। सन् 1931 में राष्ट्रपिता गांधी जी के निकट सम्पर्क में आने के बाद गांधीवाद के समर्थक बने। 1952–64 तक के लिए वे राज्यसभा के सदस्य मनोनीत हुये। उन्होंने साकेत और यशोधरा महाकाव्य तथा 19 से अधिक खण्ड काव्य लिखे थे।

3. 'भारत भारती' खण्ड काव्य में तीन खण्ड हैं– अतीत खण्ड, वर्तमान खण्ड और भविष्य खण्ड। पहले खण्ड में भारत के अतीत का गौरव गान है। दूसरे खण्ड में भारतीय जन जीवन में व्याप्त पस्ती और निराशा के कारण तथा निवारण पर विचार है और तीसरे खंड में भारत के आजाद होने की कल्पना की गयी है।

4. कवि ने राजस्थान में प्राप्त कुछ प्राचीन साक्ष्यों के आधार पर सिद्ध किया है कि विश्व में मानव की सृष्टि सबसे पहले भारत में ही हुई थी। मानव सभ्यता का विकास सबसे पहले भारत में ही हुआ।

5. कवि के अनुसार हमारा उद्भव ऋषि परम्परा से हुआ है। हम ऋषियों के वंशज हैं। कवि ने 'हमारे पूर्वज' कविता में कहा है, ''स्वर्गीय भावों से भरे ऋषि होम करते थे जहाँ, उन ऋषिगणों से ही हमारा था हुआ उद्भव यहां''।

6. हमारे पूर्वज निम्न गुणों के कारण महान समझे जाते थे– i) उन्हें अपने धर्म से कोई डिगा नहीं सकता था। ii) धर्म की रक्षा के लिए वे प्राणों का त्याग भी करने से हिचकते न थे। iii) पूरी तरह निष्पाप थे। iv) धर्म उनका और वे धर्म का ध्यान रखते थे। v) अपने कर्तव्य कें प्रति पूरी तरह सजग थें। जो उचित होता था वही करते थे। vi) दुख और लोभ को भ्रांति मानते थे।

7. 'भारत की श्रेष्ठता' कविता, 'भारत भारती' नामक खण्ड काव्य के 'अतीत खण्ड' से ली गयी है। इसमें भारतीय समाज और संस्कृति के गौरवशाली अतीत का वर्णन किया गया है।

8. हमारे पूर्वज कविता के आखिरी (ग्यारहवें) बंद में पूर्वजों के बारे में उक्त बाते कही गयी हैं। कविता के अनुसार – आर्य कभी अपने लिए नहीं जीते थे, कभी स्वार्थ और मोह के बंधन में नहीं फंसते थे। संसार का उपकार करना ही उनका लक्ष्य होता था।

9. 'वे मोह–बन्धन–मुक्त थे, स्वच्छन्द थे, स्वाधीन थे, सम्पूर्ण सुख–संयुक्त थे, वे शान्ति–शिखरासीन थे'। इन पंक्तियों में अनुप्रास अलंकार का बड़ा ही सुंदर प्रयोग हुआ है, जिसके कारण इस पद का काव्य सौंदर्य कई गुना बढ़ गया है।

10. आर्य स्त्रियाँ अपने दाम्पत्य जीवन में मैत्री और सहयोग की भावना से व्यवहार करती थीं। अपने पतियों के हर काम में हाथ बटांती थीं। उनकी प्रसन्नता के अनुरूप आचरण करती थीं। दृढ़ निश्चयी और बुद्धिमान होती थीं। त्याग और बलिदान के लिए तैयार रहती थीं। दया और करूणा से भरी होती थीं।

11. गांधारी का नाम 'आर्य स्त्रियाँ' कविता में आया है। गांधारी महाभारत की एक पात्र का नाम है। ये हस्तिनापुर के सम्राट धृतराष्ट्र की पत्नी और दुर्योधन की मां थीं। भारतीय इतिहास में इन्हें एक पतिपरायण नारी के रूप में आदर के साथ याद किया जाता है। इन्होंने जन्मांध धृतराष्ट्र से विवाह होने के उपरांत अपनी आँखों पर जीवन भर के लिए

पट्टी बांध ली थी। जिस संसार को उनके पति नहीं देख सकते थे, उसे देखना वे अपने पातिव्रत धर्म के विपरीत मानतीं थीं।

12. कवि ने एक पौराणिक कथा का जिक्र किया है। एक पतिव्रता स्त्री अपने कुष्ठरोगी पति को कंधे पर लादे जा रही थी। रास्ते में एक ऋषि से उसके पति का पैर छू गया। ऋशिवर ने क्रोधित होकर शाप दे दिया कि सूर्योदय के बाद तुम्हारा पति मर जायेगा। उस पतिव्रता ने कहा कि सूर्योदय मैं होने ही नहीं दूंगी। उसने अपने पतिव्रत के बल से सूर्योदय को रोक दिया। बाद में देवताओं के अनुनय विनय के बाद सूर्योदय होने दिया।

बोध प्रश्न–2

i. ख

ii. ग

iii. क

iv. घ

v. क

vi. ख

vii. ख

viii. ग

ix. ग

x. ख

xi. ग

xii. क

इकाई 15 काव्य–वाचन एवं विश्लेषण : हमारी सभ्यता

इकाई की रूपरेखा

15.0 उद्देश्य

15.1 प्रस्तावना

15.2 चयनित कविता का पाठ एवं विश्लेषण

15.3 उपयोगी पुस्तकें

15.4 बोध प्रश्नों के उत्तर

15.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप –

- मैथिलीशरण गुप्त की कविता, 'हमारी सभ्यता' की विस्तृत व्याख्या समझ सकेंगी/सकेंगे;
- मैथिलीशरण गुप्त की कविताओं का मूल स्वर पहचान सकेंगी/सकेंगे;
- इस कविता के माध्यम से राष्ट्रीयता की भावना को समझ सकेंगी/सकेंगे;
- मैथिलीशरण गुप्त की काव्य–भाषा के तत्वों की पहचान करना सीख सकेंगी/सकेंगे;
- मैथिलीशरण गुप्त की कविताओं में शब्द–योजना और प्रयुक्त शब्दावली से परिचित हो जायेंगी/जायेंगे; और
- मैथिलीशरण गुप्त के जीवन और उनकी साहित्यिक–राजनीतिक यात्रा के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकेंगी/सकेंगे।

15.1 प्रस्तावना

जीवन परिचय–

मैथिलीशरण गुप्त का जन्म 3 अगस्त 1886 में उत्तर प्रदेश में झांसी के पास चिरगांव में हुआ था। इनके पिता का नाम सेठ रामचरण कनकने और माता का नाम काशी बाई था। गुप्त जी का पढ़ाई में मन नहीं लगता था। इसलिए उनकी पढ़ाई अधूरी ही रह गयी। घर में ही हिन्दी, बंगला, संस्कृत साहित्य का अध्ययन किया। कविताएं बचपन से ही लिखते आ रहे थे। सन 1904 में आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के सम्पर्क में आने के बाद, इन्होनें ब्रजभाषा में कविता लिखना छोड़ खड़ी बोली को अपनी रचना का माध्यम बनाया और खड़ी बोली को काव्य भाषा के रूप स्थापित करने का अथक प्रयास किया। उनकी खड़ी बोली की कवितायें महावीर प्रसाद द्विवेदी की मासिक पत्रिका 'सरस्वती' में प्रकाशित होती थीं।

गुप्त जी पहले कांग्रेस के गरम दल से प्रभावित थे। लेकिन सन् 1931 में राष्ट्रपिता गांधी जी के निकट सम्पर्क में आने के बाद गांधीवाद के समर्थक बने। गांधी जी ने उन्हें राष्ट्रकवि की संज्ञा प्रदान की। 16 अप्रैल 1941 को वे सत्याग्रह में भाग लेने के कारण गिरफ्तार कर लिए गए। पहले उन्हें झाँसी और फिर आगरा जेल ले जाया गया। आरोप सिद्ध न होने के

कारण सात महीने बाद छोड़ दिया गया। 1952–64 तक के लिए वे राज्यसभा के सदस्य मनोनीत हुये।

उन्होंने 1911 में चिरगाँव में साहित्य सदन नाम से अपना प्रिंटिंग प्रेस स्थापित किया और बाद में झाँसी में 1954–55 में मानस–मुद्रण नामक प्रेस की स्थापना की। 12 दिसम्बर 1964 ई. को 78 वर्ष की आयु में उनका निधन हो गया।

अपने जीवन काल में उन्होंने दो महाकाव्य, 19 खण्डकाव्य, कुछ काव्यगीत और नाटिकाओं आदि की रचना की। हिन्दी में लेखन आरम्भ करने से पूर्व रसिकेन्द्र नाम से ब्रजभाषा में कविताएँ, दोहा, चौपाई, छप्पय आदि छंद लिखते थे। उनके प्रयास से खड़ी बोली हिन्दी की साहित्यिक भाषा का विकास हुआ। वे राष्ट्रवादी विचारों के कवि थे। अपनी कविताओं के माध्यम से उन्होंने नैराश्य में डूबी जनता को आत्मविश्वास भरी ऊर्जामयी वाणी दी, इससे उनकी प्रसिद्ध कृति 'भारत–भारती' जन–जन का कंठहार बन गई थी। इस कृति ने स्वाधीनता के लिए जन–जागरण का शंखनाद किया। हिन्दी साहित्य में गद्य को चरम तक पहुंचाने में जहां प्रेमचंद्र का विशेष योगदान माना जाता है, वहीं पद्य और कविता में राष्ट्र कवि मैथिलीशरण गुप्त को सबसे आगे माना जाता है।

कृतियां–

महाकाव्य– साकेत, यशोधरा

खण्डकाव्य– जयद्रथ वध, भारत–भारती, पंचवटी,द्वापर, सिद्धराज,नहुष, अंजलि और अर्घ्य, अजित, अर्जन और विसर्जन, काबा और कर्बला, किसान, कुणाल गीत, गुरु तेग बहादुर, गुरुकुल , जय भारत, युद्ध, झंकार , पृथ्वीपुत्र, वक संहार, शकुंतला, विश्व वेदना, राजा प्रजा, विष्णुप्रिया, उर्मिला, लीला, प्रदक्षिणा, दिवोदास, भूमि–भाग।

नाटक– रंग में भंग , राजा–प्रजा, वन वैभव , विकट भट , विरहिणी , वैतालिक, शक्ति, सैरन्ध्री, स्वदेश , संगीत, हिड़िम्बा , हिन्दू, चंद्रहास

पुरस्कार, सम्मान–

- हिन्दुस्तान अकादमी पुरस्कार (साकेत के लिए, 1935)
- मंगलाप्रसाद पुरस्कार (साकेत के लिए, हिन्दी साहित्य सम्मेलन द्वारा ,1937)
- साहित्यवाचस्पति (1946), पद्मभूषण (1954)

15.2 चयनित कविता का पाठ एवं विश्लेषण

हमारी सभ्यता

शैशव–दशा में देश प्रायः जिस समय सब व्याप्त थे,
निःशेष विषयों में तभी हम प्रौढ़ता को प्राप्त थे।
संसार को पहले हमीं ने ज्ञान–भिक्षा दान की,
आचार की, व्यवहार की, व्यापार की, विज्ञान की।।45।।

'हाँ और ना' भी अन्य जन करना न जब थे जानते,
थे ईश के आदेश तब हम वेदमंत्र बखानते ।
जब थे दिगम्बर रूप में वे जंगलों में घूमते,
प्रासाद–केतन–पट हमारे चन्द्र को थे चूमते।।46।।

जब मांस–भक्षण पर वनों में अन्य जन थे जी रहे,
कृषि कार्य करके आर्य तब शुचि सोमरस थे पी रहे ।
मिलता न यह सात्त्विक सु–भोजन यदि शुभाविष्कार का,
तो पार क्या रहता जगत में उस विकृत व्यापार का ?।।47।।

था गर्व नित्य निजस्व का पर दम्भ से हम दूर थे,
थे धर्म–भीरु परन्तु हम सब काल सच्चे शूर थे ।
सब लोकसुख हम भोगते थे बान्धवों के साथ में,
पर पारलौकिक–सिद्धि भी रखते सदा थे हाथ में।।48।।

थे ज्यों समुन्नति के सुखद उत्तुंग शृंगों पर चढ़े,
त्यों ही विशुद्ध विनीतता में हम सभी से थे बढ़े ।
भव–सिन्धु तरने के लिए आत्मावलम्बी धीर ज्यों,
परमार्थ–साध्य–हेतु थे आतुर परन्तु गम्भीर त्यों।।49।।

यद्यपि सदा परमार्थ ही में स्वार्थ थे हम मानते,
पर कर्म्म से फल–कामना करना न हम थे जानते ।
विख्यात जीवन–व्रत हमारा लोक–हित एकान्त था,
'आत्मा अमर है, देह नश्वर,' यह अटल सिद्धान्त था।।50।।

हम दूसरों के दुःख को थे दुःख अपना मानते,
हम मानते कैसे नहीं, जब थे सदा यह जानते–
जो ईश कर्त्ता है हमारा दूसरों का भी वही,
है कर्म्म भिन्न परन्तु सबमें तत्व–समता हो रही।।51।।

बिकते गुलाम न थे यहाँ हममें न ऐसी रीति थी,
सेवक–जनों पर भी हमारी नित्य रहती प्रीति थी ।
वह नीति ऐसी थी कि चाहे हम कभी भूखे रहें,
पर बात क्या, जीते हमारे जो कभी वे दुख सहें?।।52।।

अपने लिए भी आज हम क्यों जी न सकते हों यहाँ,
पर दूसरों के ही लिए जीते जहाँ थे हम जहाँ
यद्यपि जगत् में हम स्वयं विख्यात जीवन– मुक्त थे,
करते तदपि जीवन्मृतों को दिव्य जीवन–युक्त थे ।।53।।

कहते नहीं थे किन्तु हम करके दिखाते थे सदा।
नीचे गिरे को प्रेम से ऊंचा चढ़ाते थे हमीं,
पीछे रहे को घूमकर आगे बढ़ाते थे हमीं ।।54।।

होकर गृही फिर लोक की कर्त्तव्य–रीति समाप्त की।
हम अन्त में भव–बन्धनों को थे सदा को तोड़ते,
आदर्श भावी सृष्टिहित थे मुक्ति–पथ में छोड़ते ।।55।।

कोई रहस्य छिपे न थे पृथ्वी तथा आकाश के।
थे जो हजारों वर्ष पहले जिस तरह हमने कहे,
विज्ञान–वेत्ता अब वही सिद्धान्त निश्चित का रहे ।।56।।

है हानिकारक नीति निश्चिय निकट कुल में ब्याह की,
है लाभकारक रीति शव के गाड़ने से दाह की ।
यूरोप के विद्वान भी अब इस तरह कहने लगे,
देखो कि उलटे स्रोत सीधे किस तरह बहने लगे ! ।।57।।

निज कार्य प्रभु की प्रेरणा ही थे नहीं हम जानते,
प्रत्युत उसे प्रभु का किया ही थे सदा हम मानते।
भय था हमें तो बस उसी का और हम किससे डरे?
हाँ, जब मरे हम तब उसी के प्रेम से विह्वल मरे ।।58।।

था कौन ईश्वर के सिवा जिसको हमारा सिर झुके ?
हाँ, कौन ऐसा स्थान था जिसमें हमारी गति रुके ?
सारी धरा तो थी धरा ही, सिन्धु भी बँधवा दिया
आकाश में भी आत्म–बल से सहज ही विचरण किया ।।59।।

हम बाह्य उन्नति पर कभी मरते न थे संसार में,
बस मग्न थे अन्तर्जगत के अमृत–पारावार में।
जड़ से हमें क्या, जब कि हम थे नित्य चेतन से मिले,
हैं दीप उनके निकट क्या जो पद्म दिनकर से खिले ? ।।60।।

रौंदी हुई है सब हमारी भूमि इस संसार की,
फैला दिया व्यापार, कर दी धूम धर्म–प्रचार की ।
कप्तान 'कोलम्बस' कहाँ था उस समय, कोई कहे?
जब के सुचिन्ह अमेरिका में हैं हमारे मिल रहे ।।61।।

हम देखते फिरता हुआ जोड़ा न जो दिन–रात का–
करते कहो वर्णन भला फिर किस तरह इस बात का?
हम वर–वधु की भाँवरों से साम्य उसका कर चुके
अब खोजने जाकर जिसे कितने विदेशी मर चुके! ।।62।।

आरम्भ जब जो कुछ किया, हमने उसे पूरा किया,
था जो असम्भव भी उसे सम्भव हुआ दिखला दिया।
कहना हमारा बस यही था विघ्न और विराम से–
करके हटेंगे हम कि अब मरके हटेंगे काम से ।।63।।

यह ठीक है, पश्चिम बहुत ही कर रहा उत्कर्ष है,
पर पूर्व–गुरु उसका यही पुरु वृद्ध भारतवर्ष है।
जाकर विवेकानन्द–सम कुछ साधु जन इस देश से–
करते उसे कृतकृत्य हैं अब भी अतुल उपदेश से ।।64।।

वे जातियाँ जो आज उन्नति–मार्ग में हैं बढ़ रही,
सांसारिकी स्वाधीनता की सीढ़ियों पर चढ़ रही।
यह तो कहें, यह शक्ति उनको प्राप्त कब, कैसे हुई?
यह भी कहें वे, दार्शनिक चर्चा वहाँ ऐसे हुई ।।65।।

यूनान ही कह दे कि वह ज्ञानी–गुणी कब था हुआ ?
कहना न होगा, हिन्दुओं का शिष्य वह जब था हुआ।
हमसे अलौकिक ज्ञान का आलोक यदि पाता नहीं,
तो वह अरब यूरोप का शिक्षक कहा जाता नहीं ।।66।।

संसार भर में आज जिसका छा रहा आतंक है,
नीचा दिखाकर रूस को भी जो हुआ निःशंक है,
जयपाणि जो वर्द्धक हुआ है एशिया के हर्ष का,
है शिष्य वह जापान भी इस वृद्ध भारतवर्ष का ।।67।।

यूरोप भी जो बन रहा है आज कल मार्म्मिकमना,
यह तो कहे उसके खुदा का पुत्र कब धार्मिक बना?
था हिन्दुओं का शिष्य ईसा, यह पता भी है चला,
ईसाइयों का धर्म्म भी है बौद्ध साँचे में ढला ।।68।।

संसार में जो कुछ जहाँ फैला प्रकाश–विकास है,
इस जाति की ही ज्योति का उसमें प्रधानाभास है।
करते न उन्नति–पथ परिष्कृत आर्य्य जो पहले कहीं,
सन्देह है, तो विश्व में विज्ञान बढ़ता या नहीं ।।69।।

अनमोल आविष्कार यद्यपि हैं अनेकों कर चुके,
निज नीति, शिक्षा, सभ्यता की सिद्धि का दम भर चुके,
पर पीटते हैं सिर विदेशी आज भी जिस शान्ति को,
थे हम कभी फैला चुके उसकी अलौकिक कान्ति को ।।70।।

है आज पश्चिम में प्रभा जो पूर्व से ही है गई,
हरते अँधेरा यदि न हम, होती न खोज नई नई।
इस बात की साक्षी प्रकृति भी है अभी तक सब कहीं,
होता प्रभाकर पूर्व से ही उदित पश्चिम से नहीं ।।71।।

अन्तिम प्रभा का है हमारा विक्रमी संवत यहाँ,
है किन्तु औरों का उदय इतना पुराना भी कहाँ?

ईसा, मुहम्मद आदि का जग में न था तब भी पता,
कब की हमारी सभ्यता है, कौन सकता है बता ।।72।।

सर्वत्र अनुपम एकता का इस प्रकार प्रभाव था,
थी एक भाषा, एक मन था, एक सबका भाव था।
सम्पूर्ण भारतवर्ष मानो एक नगरी थी बड़ी,
पुर और ग्राम–समूह–संस्था थी मुहल्लों की लड़ी ।।73।।

हैं वायुमण्डल में हमारे गीत अब भी गुँजते,
निर्झर, नदी, सागर, नगर, गिरि, बन सभी हैं कूजते।
देखो, हमारा विश्व में कोई नहीं उपमान था,
नर–देव थे हम, और भारत ? देव–लोक समान था ।।74।।

संदर्भ और प्रसंग

प्रस्तुत कविता, राष्ट्र कवि मैथिलीशरण गुप्त के प्रसिद्ध खण्डकाव्य, ''भारत भारती'' के अतीत खंड में ''भारत की सभ्यता'' शीर्षक से प्रकाशित है। 'भारत भारती' मैथिलीशरण गुप्त की प्रसिद्ध रचना है। भारत जब परतंत्रता की बेड़ियों में जकड़ा हुआ था और अंग्रेजी शिक्षा के प्रभाव से हमारे देश की जनता में अपने अतीत के प्रति हीन भावना भरने का षडयंत्र चल रहा था, उस समय कवि ने अपने गौरवपूर्ण अतीत के शानदार अध्यायों की याद दिलाकर जनता में स्वाभिमान जाग्रत करने के लिए यह खण्डकाव्य लिखा था। इस खण्डकाव्य का जनता के मन पर बड़ा ही सकारात्मक प्रभाव पड़ा। लोगों की सोई हुई देश प्रेम की भावना फिर से जाग उठी। 'भारत भारती' के अतीत खण्ड की इस कविता में कवि ने प्राचीन भारत की गौरवशाली सभ्यता का वर्णन किया है। बताया है कि भारत ही विश्व का वह सबसे प्राचीन देश है जहाँ सभ्यता का जन्म हुआ। समस्त संसार को ज्ञान–विज्ञान, कला–कौशल तथा सभ्यता–संस्कृति सिखाने वाला देश भारत ही है। इस कविता से हमें अपने प्राचीन भारतीय सभ्यता के गौरवपूर्ण इतिहास का ज्ञान होने के साथ–साथ अपने गौरवशाली अतीत के प्रति प्रेम का भाव भी जाग्रत होता है। यह कविता पढ़ कर हमारे मन में विचार आता है कि हमें अपने गौरवमय अतीत का ज्ञान होना चाहिए तथा स्वदेश के उत्कर्ष के लिए कार्य करना चाहिए। यह राष्ट्रीयता की भावना जगाने वाली एक उद्‌घोषक रचना है।

कठिन शब्द

शैशव–दशा–बचपन, **दिगम्बर**–नंगा, **प्रासाद**– भव्य भवन, **केतन**– घर, **पट**–वस्त्र, **सोमरस**– मदिरा जैसा पेय, **शुचि**–पवित्र, **सात्विक**–शुद्ध शाकाहारी, **शुभाविष्कार**–मानव कल्याण के लिए की गयी खोज, **विकृत**– बिगड़ा हुआ, **गर्व**– अभिमान, **निजत्व**– अपने अस्तित्व, **धर्मभीरू**– धर्म के रास्ते से विचलित होने का भय, धार्मिक व्यक्ति, **शूर**–वीर, **पारलौकिक–सिद्धि**–आध्यात्मिक ज्ञान, **समुन्नति**–अच्छी दिशा में उन्नति, **उत्तुंग**–ऊंचा, **श्रृंग**–चोटी, **विनीतता**– विनम्रता, **भव**–सिन्धु– **आत्मावलम्बी**– अपने आप पर निर्भर, **परमार्थ**– दूसरों का कल्याण, **विख्यात**– प्रसिद्ध, **तत्व–समता**– मूल भूत समानता, **ईश**–ईश्वर, **जीवन्मृत**– जीवित और मृत, **गृही**–गृहस्थ या वह व्यक्ति जो अपने श्रम से जीवन चलाता है, **स्रिष्टि–हित**– संसार के लिए, **विज्ञान–वेत्ता**–विज्ञान के जानकार लोग, **प्रत्युत**–बल्कि, **विह्‌वल**– विभोर, **पद्‌म**–कमल का फूल, **दिनकर**–सूरज, **नित्य**– अमर, **विघ्न**–कठिनाई, **उत्कर्ष**–उन्नति,

कृतकृत्य– धन्य, **सांसारिकी**– दुनियादारी, **अलौकिक**– इस लोक से परे का, परलोक का, **निःशंक**– संदेह रहित, **जयपाणि**– जिसके हाथ में जीत का पताका है, **साक्षी**–गवाह, **प्रभाकर**–सूर्य, **सर्वत्र**–सब जगह, **निर्झर**–झरना, **गिरि**–पहाड़, **उपमान**– बराबरी करने वाला,

व्याख्या–

'अतीत खण्ड' की कविता 'हमारी सभ्यता' पद संख्या 45 से 74 तक, कुल 29 बंदों में लिखी गयी है। इसके पूर्व 'हमारी श्रेष्ठता', 'हमारे पूर्वज', आर्य स्त्रियाँ, 'आदर्श' आदि कविताओं में भी हमारे अतीत के गौरव का वर्णन किया गया है। उसी क्रम में इस कविता में भी भारत की सभ्यता को सबसे श्रेष्ठ और प्राचीन बताया गया है। गुप्त जी ने कविता में यथा स्थान इतिहास की पुस्तकों से प्रमाण भी दिये हैं, जिससे स्पष्ट होता है गुप्त द्वारा किया गया भारत की सभ्यता का गौरव वर्णन निराधार नहीं है।

45. कविता के पहले बंद में कवि कहता है कि संसार के दूसरे देश जब सभ्यता के शैशवावस्था में भी नहीं पहुंचे थे, जंगलों में अकेले नंगे घूमते थे तब तक हमारे देश में सभ्यता का विकास अपनी प्रौढ़ावस्था में पहुंच चुका था, अर्थात हम हर प्रकार से सभ्य हो चुके थे। संसार को ज्ञान विज्ञान आचरण व्यवहार और व्यापार आदि का ज्ञान हमारे पूर्वजों से मिला था। हम विश्व गुरू थे। यहीं से पहली बार पूरे संसार में ज्ञान विज्ञान और सभ्यता का प्रकाश फैला।

46. दुनिया में लोग जब ज्ञान और समझ के इतने निचले स्तर पर थे कि हां और ना कहना भी नहीं जानते थे, अर्थात उचित अनुचित का बिल्कुल ही विवेक नहीं था, उस समय हमारे ज्ञान का स्तर इतना ऊचां उठ चुका था कि हमारे पूर्वज ईश्वर के आदेश से वेद मंत्रों की रचना करने लगे थे। दुनिया जब आदिमानव की अवस्था में जंगलों में नंगे घूमती थी,उस काल में भी भारतीय लोग बाकायदा कपड़े पहनना और अपने बनाये आराम दायक घरों में रहना सीख चुके थे।

47. दुनिया के दूसरे हिस्सों के लोग जब अन्न उगाना नहीं जानते थे। केवल मांस भक्षण करके किसी तरह जीवन यापन कर पाते थे, उस समय तक हमारे पूर्वजों ने कृषि कार्य आरम्भ कर दिया था और अपने उगाये अन्न से तैयार भोजन और सोमरस का पान करने लगे थे। कृषि कर्म का सबसे पहले विकास भारत भूमि पर ही हुआ। यदि कृषि का आविष्कार हमारे पूर्वजों ने नहीं किया होता तो आज जो हम सात्विक भोजन कर रहे हैं, वह नहीं मिलता। ऐसी दशा में, कवि सवाल करता है, तब क्या जंगली जीवन से बाहर निकलना संभव हो पाता ?

48. कवि कहता है कि हमारे पूर्वज ज्ञान विज्ञान और सभ्यता में पूरी दुनिया में सबसे आगे थे। इस बात का उन्हें गर्व जरूर था लेकिन अहंकार बिल्कुल नहीं था। भारतीय आर्य जन वीर और निडर थे, धर्म के अलावा और किसी चीज से नहीं डरते थे। वे किसी भी दशा में अपने धर्म से च्युत नहीं होना चाहते थे। हमारे पूर्वज सुखोपभोग के लिए आवश्यक सभी सामग्री हासिल कर चुके थे। उनके जीवन में किसी चीज की कमी नहीं थी, फिर भी वे सांसारिक सुख साधनों में लिप्त रहना पसंद नहीं करते थे। उन्हें दैहिक से अधिक आध्यात्मिक सुख की कामना रहती थी। अर्थात सांसारिक सुख की तुलना में आध्यात्मिक सुख के लिए हमेशा प्रयत्नशील रहते थे।

49. इस बंद में कहा गया है कि हमारी सभ्यता और संस्कृति ज्यों–ज्यों उन्नत होती गयी, त्यों–त्यों हम विनीत होते गये। विनम्रता हमारी संस्कृति की विशेषता रही है। हमारे पास समुद्र को भी तैर कर पार करने का धैर्य और साहस दोनों था लेकिन ये साहस और धैर्य हमें परमार्थ के लिए प्रेरित करते थे। हमारे पूर्वज स्वभाव से अत्यंत गम्भीर थे किन्तु दूसरों के हितों की रक्षा के लिए वे कुछ भी कर डालने को तत्पर रहते थे।

50. हमारी संस्कृति में परमार्थ को बहुत महत्व दिया जाता था। हमारा कर्मफल सिद्धांत कहता था कि अच्छे कर्म का फल भी अच्छा ही होता है। इसलिए हम परमार्थ में ही अपना कल्याण देखते थे। लेकिन हम किसी लाभ या लोभ के वशीभूत होकर कोई काम नहीं करते थे। हमारा सिद्धांत निष्काम कर्म था। हम लोक हित की कामना को अपना धर्म समझते थे और संसार में हमें इसके लिए जाना जाता था। हालांकि लोक कल्याण की कामना करते हुए भी हम देह को नश्वर और आत्मा को अमर मानते थे। हमारे पूर्वजों की रूचि नश्वरता में नहीं बल्कि आत्मा की अमरता में थी।

51. कवि इस बंद में कहता है हमारी सभ्यता और संस्कृति हमें बताती है कि ईश्वर ही सबका रक्षक है। सब उसी की संतान हैं। वह सबको समान नजर से देखता है। इसीलिए हम सबके दुख को अपना दुख मानते हैं। हमारा धर्म दर्शन हमें यही सिखाता है कि कर्मानुसार एक दूसरे से भिन्न होते हुए भी तात्विक रूप से सभी मनुष्य एक जैसे ही होते हैं।

52. सभी मनुष्यों में ईश्वर का निवास मानने वाली हमारी संस्कृति में किसी को गुलाम बनाने की कोई अमानवीय रीति कभी नहीं रही। हमारे यहां सेवकों को भी हम मनुष्योचित गरिमा और प्यार देते थे। अपने भूखे रह कर भी अपने सेवक को भूखा नहीं रहने देते थे। यही हमारी संस्कृति थी।

53. हमारे पूर्वजों का यह आदर्श विचार था कि अपने लिए नहीं, हमें दूसरों के लिए जीना चाहिए। जीवन का अर्थ परोपकार करना है। जो परोकारी नहीं है, उसका जीवन व्यर्थ है। कवि कहता है कि हमारा दर्शन हमे मोक्ष की कामना करना सिखाता है।

54. हमारी संस्कृति में आत्मश्लाघा को अच्छा नहीं माना जाता है। हमारी संस्कृति विनम्रता की संस्कृति है। परोपकार की संस्कृति है। इसमें परोपकार किसी दिखावे के लिए नहीं, मानव कर्तव्य समझ कर किया जाता है। मुश्किल में फंसे हुए को उबारना, गिरे हुए को उठाना और विकास की राह में पीछे छूट गये को हाथ थाम कर आगे लाना हमारी सभ्यता का आदर्श रहा है।

55. कवि इस बंद में चार पुरूषार्थों का स्मरण दिलाता है। कहता है कि गृहस्थ जीवन व्यतीत करना हर मनुष्य का धर्म है। लोक की उन्नति के लिए यह आवश्यक है। लेकिन गृहस्थ धर्म का कर्तव्य करते हुए भी मनुष्य को याद रखना होता है कि अंतिम लक्ष्य तो इस जीवन से मोक्ष प्राप्त करना ही है। इसलिए भौतिक सुखों का उपभोग करते हुए उसके आकर्षण में बंध नहीं जाना चाहिए। भौतिक सुखों का बंधन छोड़ कर मुक्ति के मार्ग पर चलना हमारे जीवन का आदर्श रहा है।

56. यह बंद बताता है कि हमारी सभ्यता जितनी प्राचीन है, ज्ञान विज्ञान के मामले में उतनी ही समुन्नत भी थी। आज के पश्चिमी वैज्ञानिक विज्ञान की जो बातें कह रहे हैं, हमारे पूर्वज वह सब हजारों वर्ष पहले ही बता चुके थे। विज्ञान के जो रहस्य पश्चिमी दुनिया को बिल्कुल नए लग रहे हैं, हमारे देश में उन्हें बहुत पहले ही उदघाटित किया जा चुका है। अर्थात कवि कहना चाहता है कि हमारा देश ज्ञान विज्ञान ज्योतिष खगोल और गणित आदि विद्याओं के

मामले में प्राचीन काल में ही बहुत प्रगति कर चुका था। आज का पश्चिमी जगत उसी ज्ञान का फिर से अन्वेषण कर रहा है।

57. कवि कहना चाहता है कि हमारी जीवन पद्धति का आधार विज्ञान है। हमारी परम्पराओं के पीछे कोई न कोई वैज्ञानिक सोच होती है। पश्चिम जगत के लोग पहले हमारे शवदाह को सही नहीं मानते थे। इसी तरह, भारतीय संस्कृति में सगोत्रीय विवाह संबंध को वर्जित माना गया है, जबकि अन्य धर्मों और संस्कृतियों में इस वर्जना को नहीं माना जाता था। आज का पश्चिमी समाज शवदाह और विवाह दोनों मामलों में भारतीय नियमों परम्पराओं को मानने लगा है। कविता के फुटनोट में गुप्त जी ने यूरोप के कुछ डाक्टरों की राय का जिक्र किया है। डाक्टरों ने चिंता व्यक्त की है कि यदि सगोत्रीय विवाह की रीति प्रचलित रही तो विद्वान व तेजस्वी बालक उत्पन्न न होंगे। इसी तरह बताया है कि प्रसिद्ध योरोपियन तत्व वेत्ता हर्वट स्पेंसर पहले ही लिख गये हैं कि मरने के बाद उनके शव को गाड़ न जाय, जला दिया जाय। इससे पता चलता है कि स्पेंसर ने शवदाह की परम्परा को सही ठहराया था।

58. भारतीय संस्कृति और सभ्यता के बारे में कवि कहता है कि यहां की सभ्यता में माना जाता है कि जो कुछ होता है, सब ईश्वर की प्रेरणा से होता है। इसलिए हमारे पूर्वज कहते थे कि ईश्वर के अलावा और किसी से डरने की आवश्यकता ही नहीं है। ईश्वर के प्रेम में अगर मृत्यु भी हो जाये तो वह मृत्यु भली है क्योंकि ईश्वर की भक्ति से बड़ा सौभाग्य और कुछ नहीं है।

59. कवि अपनी संस्कृति और सभ्यता के गौरवपूर्ण अतीत को याद करते हुए कहता है कि इस पृथ्वी पर ईश्वर से बड़ा और कोई शक्तिशाली नहीं है जिसके सामने हमें सिर झुकाना पड़े। इस संसार में ऐसा कोई स्थान नहीं जहां हमारी पहुंच न हो। धरती तो धरती, हमारे पूर्वजों ने कभी समुद्र को भी अपने पराक्रम से बांध दिया था। हमारे पूर्वज अपने योग विद्या के बल पर आसमान में भी विचरण करने में सक्षम थे। अर्थात हमारे पूर्वजों के लिए धरती आकाश और पाताल कोई भी जगह अगम्य नहीं थी।

60. भौतिक सभ्यता में उन्नति के शिखर पर पहुंच कर भी हमारे पूर्वज कभी भौतिक सुख साधनों को बहुत महत्व नहीं देते थे। भारतीय संस्कृति में भौतिक की अपेक्षा आध्यात्मिक उन्नति में रमने की सीख दी जाती है। इस पद में कवि कहता है कि हमारे पूर्वज आत्मज्ञान के समुद्र में अवगाहन करने का आनन्द लेते थे। वे सांसारिक उन्नति के पीछे नहीं भागते थे। सुख के बारे में उनकी धारणा थी कि जिस प्रकार दीपक के प्रकाश में कमल नहीं खिलता, सूरज की रोशनी पाकर ही खिलता है, उसी प्रकार आत्मा रूपी कमल किसी भौतिक सुख से नहीं बल्कि आध्यात्मिक ज्ञान से ही संतुष्टि का अनुभव करता है।

61. इस पद में हमारी प्राचीन सभ्यता की यह कह कर प्रशंसा की गयी है कि हमारे ऋषि पूरी दुनिया के भूगोल से परिचित थे। अमरीका तक वे पहले ही जा चुके थे। इसके प्रमाण अब मिलने भी लगे हैं। कवि कहता है कि यह विश्वास भ्रामक है कि कोलम्बस ने अमरीका की खोज की। उससे न जाने कितने साल पहले ही भारतीय लोग अमरीका में जा कर रहने लगे थे। फुटनोट में कवि ने बताया है कि अमरीका में हिन्दुओं और बौद्धों के जा कर बसने के पुराने चिन्ह मिले हैं। दक्षिण अमेरिका के पेरू नामक राज्य में एक सूर्य मंदिर है। इसकी मूर्ति का आकार दंतिया के सूर्य मंदिर की मूर्ति से मिलता है।

62. इस पद में कालिदास की प्रसिद्ध कृति 'रघुवंशम' के एक श्लोक को आधार बनाया है। श्लोक में इंदुमती और आज के विवाह में भावरों की तुलना मेरू पर्वत का चक्कर लगाते दिन–रात के जोड़े से करते हुए कहा गया है कि ''परस्पर मिला हुआ दिन–रात का जोड़ा

जिस प्रकार मेरू पर्वत के चारों ओर घूमता हुआ सुशोभित होता है, उसी भांति अज और इंदुमती का जोड़ा बढ़ी हुई लपट वाली अग्नि की प्रदक्षिणा करता हुआ सुशोभित हुआ।'' इस पद के बहाने से कवि कहना चाहता है कि भारतीयों को प्राचीन काल से विश्वभूगोल और खगोल का ज्ञान था। विदेशी जिसे आज खोज रहे हैं वह भारत की प्राचीन पुस्तकों में पहले से ही उपलब्ध है।

63. हमारे पूर्वज दृढ़ प्रतिज्ञ और संकल्प धर्मा थे। जिस काम को हाथ में लेते थे, उसे पूरा करने के बाद ही विश्राम करते थे। अपनी दृढ़ इच्छा शक्ति से वे असम्भव प्रतीत होने वाले काम भी सम्भव करके दिखा देते थे। उनका कहना होता था कि जो काम शुरू करो उसे पूरा कर के ही छोड़ो। अपनी इसी दृढ़ इच्छा शक्ति से वे बड़ा से बड़ा काम कर डालते थे। भारत की सभ्यता इसीलिए श्रेष्ठ है कि इसके पीछे ऋषियों की दृढ़ इच्छा शक्ति काम कर रही थी।

64. इस बंद में कवि यह स्वीकार करता है कि पश्चिम के देश आज अपनी भौतिक उन्नति के शिखर पर हैं। लेकिन साथ में यह भी कहता है कि इतने भौतिक उन्नति के बावजूद पश्चिम हमें ही अपना आध्यात्मिक गुरू मानता है। आज भी हमारे साधुओं सन्यासियों की शिक्षा और ज्ञान का आदर करता है। कवि का संकेत विवेकानन्द के उस भाषण की ओर है जो उन्होनें शिकागो में दिया था। शून्य पर भाषण कर के उन्होंने पश्चिमी जगत को अपने ज्ञान से चकित कर दिया था और भारत की पूरी दुनिया में धाक जम गयी थी।

65. आधुनिक काल में पश्चिमी जगत की जो जातियां तेजी से भौतिक रूप से उन्नति कर रही हैं, और स्वाधीन हो चुकी हैं उनसे पूछा जाना चाहिए कि भौतिक उन्नति के रास्ते पर आगे बढ़ने का ज्ञान उन्हें कहां से प्राप्त हुआ। उन्हें अपने ज्ञान विज्ञान का स्रोत भी बताना चाहिए। उन्हें यह भी बताना चाहिए कि उनके यहां का दार्शनिक उत्थान किसकी प्रेरणा और प्रभाव से हुआ। दरअसल सवालों के बहाने से कवि कहना चाहता है कि पश्चिमी देशों का ज्ञान विज्ञान जो आज फल फूल रहा है, वह असल में भारत के प्राचीन ज्ञान पर आधारित है। ब्रिटिशर्स हमारी ज्ञान विज्ञान की पोथियों को चुरा ले गये थे। उन्हीं प्राचीन ग्रंथों से सीख कर आज वे उन्नति कर पा रहे हैं।

66. इस बंद में कवि कहना चाहता है कि भारत विश्व गुरू था। गुप्त जी ने कविता के फुट नोट में स्पष्ट किया है कि प्रायः सभी नये और पुराने इतिहासकार स्वीकार करते हैं कि दर्शन विज्ञान और सभ्यता सम्बन्धी सारी बातें यूनान ने भारतवर्ष से सीखी हैं। यूनान के प्राचीन इतिहास से पता चलता है कि कुछ अपरिचित लोग पूर्व से आकर यहां बसे थे। वे बड़े विद्वान बुद्धिमान और कला–कुशल थे। वहां से सारे संसार ने शिक्षा प्राप्त की। वहां की संस्कृति और सभ्यता पर भारत का सीधा प्रभाव था। यूनान ने भारत के गुरूओं से सीख कर अपनी उन्नति का रास्ता प्रशस्त किया था। अगर उसे भारत से अलौकिक ज्ञान न मिला होता तो वह योरोप और अरब के देशों का शिक्षक कहलाने के गौरव से वंचित रह जाता। इस बंद में हमारी प्राचीन ज्ञान परंपरा और भौतिक सभ्यता को संसार में सबसे प्राचीन और मौलिक ठहराया गया है।

67. कवि कहता है कि जापान, जो आजकल विश्व में सबसे अधिक शक्तिशाली देश के रूप में उभर रहा है, जिसने रूस को नीचा दिखा कर दुनिया पर अपना दबदबा बना लिया है और जिसने पूरी दुनिया में एशिया का नाम ऊंचा किया है, वह भी कभी प्राचीन भारत का शिष्य था। जैसा कि विदित है कि जापान एक बौद्ध मतानुयायी देश है। महात्मा बुद्ध की शिक्षा पर चलकर ही जापान ने इतनी उन्नति की है। कवि इसीलिए जापान को भारत का शिष्य कहता है।

68. कवि कहता है कि, योरोप, जो आज कल बहुत उदार बना फिर रहा है, उसे यह भी बताना चाहिए कि उसके खुदा के पुत्र अर्थात ईसा मसीह के धार्मिक बनने का इतिहास क्या है। कवि इस संबंध में कविता के फुटनोट में कहता है कि ''हाल ही में रूस के नोटविच नामक यात्री को तिब्बत के हीमिस नामक मठ में ईसा का एक प्राचीन हस्तलिपि में जीवन चरित्र मिला है। वह पालि में है और दो बड़ी–बड़ी जिल्दों में समाहित है। इससे पता चलता है कि ईसा बचपन में भाग कर हिन्दुस्तान आ गया था। यहां वह राजगृह, काशी और जगन्नाथ पुरी आदि स्थानों में घूमता रहा और आर्यो से वेदाध्ययन करता रहा। बाद में उसने पालि भाषा सीखी और बौद्ध हो गया। अपने देश जाकर उसने नया धर्म चलाने का प्रयास किया जिसकी वजह से उसे सूली पर लटका दिया गया। कवि ने कहना चाहा है कि ईसाई धर्म भी भारत वर्ष की धार्मिक सामग्री से ही तैयार हुआ है। उसमें उसका अपना मौलिक कुछ भी नहीं है।

69. कवि का मानना है कि संसार में विकास का जो प्रकाश फैला हुआ दिखाई दे रहा है, अर्थात जितनी प्रगति दिखाई दे रही है उसके पीछे प्राचीन भारतीय ज्ञान विज्ञान का योगदान है। 'थियोगानी आफ दि हिन्दूज' नामक पुस्तक के लेखक कौन्ट जार्न्स जेर्ना ने लिखा है कि ''आर्यावर्त केवल हिन्दुओं का ही घर नहीं है, वरन वह संसार की सभ्यता का आदि भण्डार है। हिन्दुओं की सभ्यता क्रमशः पश्चिम की ओर यूथोपिया, इजिप्ट और फोनेशिया तक, पूर्व दिशा में स्याम और जापान तक, दक्षिण में लंका, जावा, सुमात्रा तक और उत्तर की ओर पर्सिया, चाल्डिया और कोल्चिस और वहां से यूनान और रोम तक पहुंची।'' आज जो प्रगति दुनिया में दिखाई दे रही है, वह इसलिए संभव हुआ कि भारत में आर्य ऐसी प्रगति पहले ही कर चुके थे। यह सारा विकास प्राचीन भारत में सदियों पहले हो चुकी प्रगति का ही पुनराविष्कार है।

70. कवि इस बंद में पश्चिमी प्रगति की आलोचना करते हुए कहता है कि इतनी सारी भौतिक उन्नति के बावजूद पूरी दुनिया में अशांति और हायतौबा का जो वातावरण है वह आर्यो के प्राचीन भारत में नहीं था। प्राचीन भारत में प्रगति जब अपने चरम पर थी, तब भी शांति और सौहार्द का वातावरण था। आज की तरह अशांति नहीं फैली थी।

71. इस बंद में कवि पश्चिमी देशों में हुई प्रगति का सारा श्रेय भारत की प्राचीन सभ्यता और संस्कृति को देता है। वह कहता है कि पश्चिम का प्रबोधन (इनलाइटेनमेंट) भारत से निर्यातित ज्ञान विज्ञान का परिणाम था। यदि भारत ने पश्चिमी देशों को जाग्रत न किया होता तो आज भी वह अंधकार में डूबा हुआ होता और नयी नयी खोजें नहीं कर पाता। सूर्य को प्रकाश अर्थात चेतना या ज्ञान विज्ञान का स्रोत माना जाता है। कवि भारत की तुलना सूर्य से करते हुए कहता है कि जिस प्रकार सूरज पहले पूरब में उगता है,उसी प्रकार ज्ञान का उदय भी सबसे पहले प्राचीन भारत अर्थात पूरब में हुआ था। इस पद के संदर्भ में कवि ने फुटनोट में स्पष्ट किया है कि ''धीरे धीरे पश्चिमी विद्वान मानने लगे हैं कि प्राचीन भारत वर्ष खूब उन्नत अवस्था में था और इसी ने योरोप में तरह–तरह की विद्या और कला कौशल का प्रचार किया।''

72. भारतीय ज्ञान विज्ञान की प्राचीनता को याद करते हुए कवि इस बंद में कहता है कि विक्रमी संवत हमारे देश का अंतिम कैलेण्डर है। विक्रमादित्य ने शकों को पराजित करके भारत से निकाल दिया था। अपनी विजय की याद में उन्होंने विक्रमी संवत चलाया। भारत का यह सबसे नया संवत भी ईसवी सन से 57 वर्ष पहले ही चला दिया गया था। विक्रमी संवत ईसा और मुहम्मद से बहुत पुराना है। कोई नहीं जानता कि हमारी सभ्यता कितनी प्राचीन है।

73. भारतीय संस्कृति और सभ्यता अपने प्राचीन समय में काफी उन्नत थी। उस समय भाषा, विचार, मन और भावना आदि सभी स्तरों पर समाज में एकता का भाव था। पुर, ग्राम, ग्राम–समूह और मुहल्ले भारत वर्ष रूपी माला की लड़ी के समान थे। भारत अपने आप में एक विशाल नगरी की तरह था। जहां सब लोग पारिवारिक प्रेम भावना के साथ रहते थे।

74. हमारी प्राचीन सभ्यता की सुगंधि आज के समय में भी चारों तरफ वायुमण्डल में महसूस की जा सकती है। ये झरने, ये नदियां, ये सागर, ये पर्वत, ये वन हमारी प्राचीन सभ्यता के गीत गाते से प्रतीत होते हैं। मानों कह रहे हों कि विश्व में हमारी सभ्यता का कोई दूसरा उपमान नहीं था। भारत के लोग देव तुल्य थे और भारत देव लोक के समान सुख और सौख्य से भरा हुआ था।

काव्य सौष्ठव–

- भाषा की दृष्टि से इस कविता में मानक खड़ी बोली का प्रयोग किया गया है।
- भाषा संस्कृतनिष्ठ और सामासिक है
- सामासिक पदों के प्रयोग से पद्य का प्रवाह बड़ा आकर्षक हो गया है।
- कहीं कहीं कविता में प्रश्न शैली का प्रयोग किया गया है। इससे कविता में नाटकीय सौंदर्य पैदा हो गया है।
- कविता की शब्द योजना और पद विन्यास में प्रवाहात्मक माधुर्य है। प्राचीन गौरव का वर्णन–स्मरण करने के लिए वैसी ही धीर गम्भीर भाषा और उपमानों का प्रयोग हुआ है।
- इस संग्रह की काव्यभाषा काफी सुधरी हुई और रसात्मक है।
- इसमें खड़ी बोली को काव्यभाषा का सरस सौंदर्य प्रदान करने का कवि का प्रयास देखने को मिलता है
- गुप्त जी की भाषा स्वच्छ, स्पष्ट, व्यावहारिक, गद्यभाषा के निकट, व्याकरण सम्मत, समास युक्त, तत्सम और सरस है।
- सभी पद शुद्ध संस्कृतनिष्ठ खड़ी बोली में, पद्यात्मक शैली में रचे गये हैं।
- कविता में नवीन शब्दों का नवीन अर्थो में प्रयोग हुआ है।
- संस्कृतनिष्ठ होते हुए भी भाषा बहुत कठिन नहीं है।
- शब्द योजना में एक प्रवाह है जो कविता में पठनीयता पैदा करता है।
- अपने अतीत के प्रति आदर भाव से प्रेरित होने के कारण कविता का भाव मन को आकर्षित करता है।
- कहीं–कहीं रूपक अलंकार का बड़ा ही सुंदर प्रयोग हुआ है।
- कविता का भाव सौंदर्य बहुत महत्वपूर्ण है।
- तुकों में स्वाभाविकता है। बलात तुक बैठाने का जोड़ तोड़ नहीं है।

विशेष–

मैथिलीशरण गुप्त राष्ट्रवादी चेतना के कवि थें। उनके काव्य में राष्ट्रीय भावना मुखरित हुई है। उन्हें भारतीय संस्कृति और इतिहास की गहन काव्यात्मक समझ थी। यही कारण है

कि उनके काव्य का फलक बहुत सुविस्तृत है। अतीत का जो कुछ मूल्यवान है, उसे वे वर्तमान में चरितार्थ होते देखना चाहते हैं। भारतीय संस्कृति की मनोरम व्याख्या उनके काव्य का प्रधान गुण है। अतीत की याद दिलाकर अपने वर्तमान समय में राष्ट्रीयता की भावना जगाना उनका लक्ष्य था। वे कहते थे कि संसार में ऐसा कोई काम नहीं है जो समुचित उद्योग से सिद्ध न हो सके। परंतु उद्योग के लिए उत्साह की आवश्यकता होती है। इसी उत्साह को उत्तेजित करने के लिए कविता एक साधन है। गुप्त जी अपनी कविता को इसी उत्साह वर्धन का साधन बनाना चाहते थे।

बोध प्रश्न–1

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दें।

1. 'हमारी सभ्यता' कविता का सारांश लिखें।

   ....

   ....

   ....

2. मैथिलीशरण गुप्त की कविता 'हमारी सभ्यता' अभिधा शिल्प में लिखी गयी है। इसे कैसे सिद्ध करेंगे।

   ....

   ....

   ....

3. भारतीय सभ्यता के उन्नत ज्ञान विज्ञान के बारे में कवि ने क्या कहा है। संक्षेप में लिखें।

   ....

   ....

   ....

4. कप्तान 'कोलम्बस' कहाँ था उस समय, कोई कहे? यह कहने के पीछे कवि का क्या आशय था?

   ....

   ....

   ....

5. यूनान को भारत का शिष्य क्यों कहा गया है?

   ....

   ....

   ....

बोध प्रश्न–2

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. 'हमारी सभ्यता' कविता जिस काव्य में संकलित है, उसका नाम है–

   क) साकेत   ख) भारत भारती   ग) नहुष   घ) उर्मिला

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

2. गुप्त जी ने किसके सानिध्य में रह कर खड़ी बोली में कविता लिखना शुरू किया

   क) प्रसाद जी ख) भारतेंदु ग) हजारी प्रसाद द्विवेदी घ) महावीर प्रसाद द्विवेदी

3. गुप्त जी किस धारा के कवि थे?

   क) राष्ट्रवादी धारा ख) नवजागरण की धारा ग) भक्तिधारा घ) छायावादी।

4. 'जब मांस–भक्षण पर वनों में अन्य जन थे जी रहे,' में 'अन्य जन' से कवि का क्या आशय है

   क) भारतीय जन ख) पश्चिमी जगत ग) भारत के अलावा सभी जन
   घ) यूनानी जन

5. 'भारत भारती' किस शैली का काव्य है?

   क) प्रबंध शैली का काव्य ख) विवरणात्मक शैली का काव्य ग) गीति शैली का काव्य,

6 'हमारी सभ्यता' कविता 'भारत भारती' के किस खण्ड में संकलित है?

   क) अतीत खण्ड ख) वर्तमान खण्ड ग) भविष्य खण्ड घ) मंगलाचरण

7 मैथिली शरण गुप्त असहयोग आंदोलन में कब जेल गये थे?

   क) 1941 ख) 1956 ग) 1904 घ) 1964

8 कृषि कार्य सबसे पहले कहाँ शुरू हुआ?

   क) चीन में ख) यूनान में ग) भारत में घ) अमेरिका में।

9. ईसा किसका शिष्य था?

   क) कोलम्बस का ख) हिन्दुओं का ग) सुकरात का

10. मैथिलीशरण गुप्त को 'राष्ट्रकवि' की संज्ञा किसने प्रदान की थी?

    क) गांधी ने ख) विनोवा ने ग) नेहरू ने घ) महावीर प्रसाद द्विवेदी ने

15.3 उपयोगी पुस्तके

भारत भारती–मैथिलीशरण गुप्त

15.4 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न–1

1. सबसे पहले सभ्यता का उदय भारत में हुआ। कृषि की खोज भारत में हुई। भारत ने मांस के स्थान पर अन्न को आहार बनाया। जब दुनिया के लोग नंगे घूमते थे तब हमारे पास रहने को घर था और हम कपड़े पहनने लगे थे। धर्म, दर्शन का विकास सबसे पहले भारत में हुआ। भारत की सभ्यता और संस्कृति का प्रसार पहले यूनान में फिर वहां से पूरे संसार में फैला। हमारा ज्ञान विज्ञान बहुत उन्नत था। भूगोल और खगोल

से लेकर गणित ज्योतिष सब में भारत आगे था। यहां के नागरिक कोलम्बस से बहुत पहले अमेरिका में जाकर बस चुके थे। हम जितने उन्नत और शक्तिशाली थे उतने ही विनीत थे। परमार्थ ही हमारा आदर्श था। हम किसी को गुलाम नहीं बनाते थे। अपने सेवकों से मनुष्योचित व्यवहार करते थे।

2. मैथिलीशरण गुप्त द्विवेदी युग के कवि थे। उस युग की कविता इतिवृत्तात्मक और अभिधा शैली की खड़ी बोली की कविता थी। खड़ी बोली में कविता लिखने का काम सबसे पहले गुप्त जी ने ही शुरू किया था। अभिधा शैली उस शैली को कहते हैं जिसमें किसी बात को सीधे सरल शब्दों में कहा जाता है। कहीं–कहीं शब्दालंकार जरूर होते हैं लेकिन अर्थालंकार नहीं होता। व्यंग्य, वक्रोक्ति, रूपकों और संकेतों तथा प्रतीकों आदि का उपयोग नहीं होता। मैथिलीशरण गुप्त की कविताओं का अर्थ समझने में बहुत कठिनाई नहीं होती। कविता का अर्थ सतह पर विद्यमान होता है। जैसे इसी कविता का उनका एक पद अभिधा का उदाहरण हो सकता है –

   संसार में जो कुछ जहाँ फैला प्रकाश–विकास है,
   इस जाति की ही ज्योति का उसमें प्रधानाभास है।
   करते न उन्नति–पथ परिष्कृत आर्य्य जो पहले कहीं,
   सन्देह है, तो विश्व में विज्ञान बढ़ता या नहीं

3. कवि ने बताया है कि भारत का ज्ञान विज्ञान प्राचीन काल में बहुत उन्नत अवस्था में था। संसार में जो कुछ विकास का प्रकाश फैला हुआ है, वह भारत में सहस्राब्दियों पहले विकसित हुए ज्ञान विज्ञान का ही आभास है। अर्थात आज जो कुछ विज्ञान के नाम पर नया दिख रहा है वह भारत के प्राचीन ज्ञान की ही नकल है। भारत में यदि प्राचीन काल में विज्ञान का विकास न हो चुका होता तो आज के पश्चिमी जगत का विज्ञान भी कहीं नहीं होता।

4. दुनिया में पश्चिमी जगत ने प्रचार किया है कि अमेरिका की खोज कोलम्बस ने की थी। इसके पहले किसी को अमेरिका के बारे में पता नहीं था। कहता है कि यह प्रचार सत्य से परे और भ्रामक है। वास्तविकता यह है कि इस बात के प्रमाण मिल चुके हैं कि कोलम्बस से बहुत पहले ही भारत के हिन्दू और बौद्ध अमेरिका में जा चुके थे। दक्षिण अमेरिका में एक प्राचीन मंदिर मिला है जिसमें दंतिया के सूर्य मंदिर की मूर्ति जैसी एक मूर्ति मिली है। और भी कई प्रमाणों से अमेरिका में भारतीयों का जाना प्रमाणित होता है।

5. इतिहास ग्रंथो से प्रमाण देकर कवि ने बताया है कि यूनान में सभ्यता का प्रसार भारत से हुआ। भारत के कुछ लोगों ने जाकर वहां सभ्यता और ज्ञान विज्ञान की नींव रखी। भारत के बाद यूनान में सभ्यता और ज्ञान विज्ञान का विकास हुआ जो वहां से पश्चिमी देशों तक फैलता चला गया। इसीलिए यूनान को भारत का शिष्य और भारत को विश्व गुरू कहा जाता है।

बोध प्रश्न–2

1. ख
2. घ
3. क

4. ग
5. ख
6. क
7. क
8. ग
9. ख
10. क

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

इकाई 16 काव्य–वाचन एवं विश्लेषण : पुष्प की अभिलाषा, कैदी और कोकिला

इकाई की रूप रेखा

16.0 उद्देश्य

16.1 प्रस्तावना

16.2 चयनित कविताओं का पाठ एवं विश्लेषण

16.3 उपयोगी पुस्तकें

16.4 बोध प्रश्नों के उत्तर

16.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप–

- माखनलाल चतुर्वेदी की दो कविताओं की विस्तृत व्याख्या समझ सकेंगी/सकेंगे;
- माखनलाल चतुर्वेदी की कविताओं की दिशाओं को जान सकेंगी/सकेंगे;
- इन कविताओं के माध्यम से देश प्रेम और आजादी की भावना की विशिष्टताओं को समझ सकेंगी/सकेंगे;
- माखनलाल चतुर्वेदी की काव्य–भाषा को समझने का प्रयास कर सकेंगी/सकेंगे;
- माखनलाल चतुर्वेदी की शब्द–योजना और शब्दावली को जान सकेंगी/सकेंगे; और
- माखनलाल चतुर्वेदी के जीवन के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकेंगी/सकेंगे।

16.1 प्रस्तावना

माखनलाल चतुर्वेदी का जन्म 4 अप्रैल सन् 1889 को मध्यप्रदेश के होशंगाबाद जिले के बाबई नामक स्थान पर हुआ था। इनके पिता जी का नाम नन्दलाल चतुर्वेदी तथा माता जी का नाम सुंदरी बाई था। इनका विवाह ग्यारसी बाई से हुआ था। सन 1905 में जबलपुर से प्राइमरी टीचर्स ट्रेनिंग, नार्मल शिक्षा उत्तीर्ण करने के बाद ये अध्यापक हो गये। इन्हें हिन्दी के अतिरिक्त संस्कृत, बंगला, गुजराती, अंग्रेजी, भाषा पर भी समान अधिकार प्राप्त था। हिन्दी के प्रतिष्ठित कवि, कुशल वक्ता, पत्रकार, सम्पादक तथा लेखक होने के साथ–साथ माखनलाल चतुर्वेदी जी स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी भी थे। असहयोग आन्दोलन के दौरान उन्हें लगभग दस माह तक कारावास की सजा हुई। वे बिलासपुर की जेल में बंद रहे। 'पुष्प की अभिलाषा' नामक कालजयी कविता की रचना उन्होंने जेल में रहते हुए ही लिखी। बाद में शिक्षक पद से त्याग पत्र देकर, पत्रकारिता के क्षेत्र में आ गये। प्रसिद्ध राष्ट्रवादी पत्रकार गणेश शंकर विद्यार्थी से वे बहुत प्रभावित थे।

माखनलाल चतुर्वेदी की पहचान एक राष्ट्रवादी कवि के रूप में रही है। राष्ट्रवाद इनकी रचनाओं में भी प्रमुखता से मौजूद रहा है। इनके काव्य का मूल स्वर राष्ट्रीयतावादी है। भारतीय राष्ट्रीय स्वाधीनता की अनुगूंजें इनकी कविताओं में देखने को मिलती हैं। इन्होंने

कुछ आध्यात्मिक और रहस्यवादी भावबोध की कवितायें भी लिखी हैं। मगर मुख्यतः वे राष्ट्रवादी विचारों के एक अच्छे कवि थे और इसी कारण से इन्हें साहित्य जगत में 'भारतीय आत्मा' कहा जाता है।

रचनाएं–

चतुर्वेदी जी ने गद्य और पद्य दोनों विधाओं में लिखा है। इनकी प्रमुख कृतियों के नाम हैं–

काव्य संग्रह–

हिम किरीटिनी (सन 1943), हिम तरंगिणी (सन 1949), माता (सन1951), युग चरण (सन 1956), समर्पण (सन 1956), वेणु ले गूंजे धरा (सन 1960), बिजुरी काजल आंज रही (सन 1954 से 64 के बीच की रचनाओं का संकलन, सन 1980 में प्रकाशित)

कहानी संग्रह– कला का अनुवाद

गद्य काव्य– साहित्य देवता (निबंध संग्रह)

नाटक– कृष्णार्जुन–युद्ध, सिरजन और मंचन

संपादन– कर्मवीर, प्रताप, प्रभा (पत्रिका एवं समाचार पत्र)

निबंध– समय के पांव (1962, संस्मरणात्मक)

निबंध संग्रह – अमीर इरादे : गरीब इरादे (1960), रंगों की होली (सन 1944 तक के निबंधों का संकलन, 1980 में प्रकाशित)

भाषण संग्रह– चिंतन की लाचारी (1965)

सम्मान– सागर विश्वविद्यालय से डी. लिट. की उपाधि, सन 1969 में। पद्म भूषण सम्मान (सन 1963)

पुरस्कार– साहित्य अकादमी पुरस्कार, देव पुरस्कार

16.2 चयनित कविताओं का पाठ और विश्लेषण

एक

पुष्प की अभिलाषा

चाह नहीं, मैं सुरबाला के गहनों में गूँथा जाऊँ।
चाह नहीं, प्रेमी–माला में बिंध प्यारी को ललचाऊँ।।

चाह नहीं, सम्राटों के शव पर, हे हरि, डाला जाऊँ।
चाह नहीं, देवों के सिर पर चढ़ूँ, भाग्य पर इठलाऊँ।।

मुझे तोड़ लेना वनमाली।
उस पथ पर देना तुम फेंक।।
मातृ–भूमि पर शीश चढ़ाने।
जिस पथ जावें वीर अनेक।।

('हिम तरंगिनी' संग्रह से)

संदर्भ और प्रसंग–

प्रस्तुत कविता 'पुष्प की अभिलाषा' 'हिम तरंगिनी' काव्य संग्रह में संग्रहीत है। यह माखनलाल चतुर्वेदी जी की सबसे प्रसिद्ध कविता मानी जाती है। यह कविता उन्होंने भारत की आजादी के लिए हो रहे आंदोलनों के दौर में देश प्रेम की भावना जगाने के लिए रची थी।

इस कविता में पुष्प के माध्यम से देश के नागरिकों को देश प्रेम का संदेश देने का प्रयास किया गया है।

कठिन शब्द –

चाह–इच्छा, **सुरबाला**– सुंदर युवती, **प्रेमी–माला**–प्रेमिका के लिए प्रेमी द्वारा तैयार की गयी माला, **गहना**–आभूषण, **बिंध**–माला में गुंथ जाना। **ललचाऊं**–आकर्षित करूं। **सम्राट**–राजा, **भाव**– मृत शरीर, **हरि**– ईश्वर, **इठलाऊं**– घमंण्ड करूं। **वनमाली**–फूलों के बगीचे का देख भाल करने वाला, **शीश**–सिर,मस्तक, **पथ**–रास्ता

व्याख्या–

कविता का संदर्भ यह है कि माली बगीचे में फूल तोड़ रहा है। फूल सोच रहा है कि माली फूलों को गूंथ कर माला बनायेगा। माला किसी युवती के आभूषण की शोभा बढ़ाने के काम आयेगी या प्रेमिका के गले में डाल दी जायेगी। यह भी हो सकता है कि कोई देवी देवता या किसी मृत राजा के शव पर चढ़ा दे। मगर फूल की इच्छा न युवती के गले का आभूषण बनने की है न देवता के सिर या सम्राट के शव पर चढ़ाये जाने की। उसकी इच्छा देश के लिए मर मिटने वाले वीरों के कदमों के नीचे बिछ जाने की है। इसलिए वह माली से अपनी इच्छा का इजहार करते हुए कहता है कि–हे माली! सुनो! मैं नहीं चाहता कि मुझे किसी सुंदर स्त्री के आभूषण में गूंथा जाय। किसी सुंदरी के गले का आभूषण बनने की इच्छा बिल्कुल ही नहीं है। किसी प्रेमी की प्रेमिका को ललचाने की भी मुझे कोई इच्छा नहीं है।

फूल ईश्वर से प्रार्थना के भाव में कहता है कि हे प्रभो! मुझे किसी सम्राट के शव पर डाले जाने से बचाना। हमें तो किसी देवता के सिर पर चढ़ने का सौभाग्य प्राप्त करने की भी इच्छा नहीं है।

कविता के तीसरे बंद में फूल कहता है– हे माली! मेरी एक मात्र अभिलाषा यह है कि मुझे उस रास्ते पर बिखेर दिया जाय, जिस रास्ते से होकर, देश की आजादी के लिए बलिदान होने की उच्च भावना के साथ, मातृभूमि के सपूत जाते हैं। मैं उनके पांवों को छू कर धन्य होना चाहता हूँ। भावार्थ यह है कि पुष्प किसी सम्राट, देवता, या सुंदरी के माथे की शोभा बन कर गौरव महसूस करने की जगह वीर सैनिकों के पावों तले कुचले जाने में अपने को धन्य समझता है। वह खुद देश की रक्षा के काम नहीं आ सकता, जो देश के लिए जीवन की बाजी लगाने के लिए तैयार हैं, उनके रास्ते में बिछ कर उनके प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त करना चाहता है।

काव्य सौष्ठव–

- यह एक प्रतीकात्मक कविता है। इसमें फूल को स्वतंत्रता प्रेमी भारतवासी का प्रतीक बनाया गया है। फूल का मानवीकरण करने से इस कविता का प्रभाव बहुत बढ़ गया है।

- कविता की भाषा सरल और प्रांजल है।
- राष्ट्रप्रेम जैसी गम्भीर भावना को सरल शब्दों में बड़े ही कलात्मक ढंग से अभिव्यक्त किया गया है।
- इस गीत में केवल दो बंद हैं। पहले बंद में 30 मात्राओं की चार पंक्तियां हैं, जबकि दूसरा बंद 17 और 15 मात्राओं वाली दो युगल पंक्तियों से मिल कर बना है।
- इस कविता को धुन में गाया जा सकता है। इसकी गेयता बहुत आकर्षक और मधुर है।

विशेष–

माखनलाल चतुर्वेदी के काव्य में राष्ट्रीय चेतना का उदात्त स्वर देखने को मिलता है। उनकी कविताओं में भारतीय आत्मा को वाणी दी गयी होती है। 'पुष्प की अभिलाषा' एक महान गीत होने की योग्यता रखता है। राष्ट्रगान (जनगणमन अधिनायक), राष्ट्रगीत (वंदे मातरम) और 'सारे जहां से अच्छा' के बाद यह चौथा गीत है जो सारे देश में गाया जाता है। कवि ने पुष्प की अभिलाषा के माध्यम से राष्ट्रप्रेम प्रदर्शित करने की जैसी शुभ कामना व्यक्त की है, वह अप्रतिम है।

दो

कैदी और कोकिला

1

क्या गाती हो?
क्यों रह–रह जाती हो?
कोकिल बोलो तो!
क्या लाती हो?
सन्देशा किसका है?
कोकिल बोलो तो!

2

ऊँची काली दीवारों के घेरे में,
डाकू, चोरों, बटमारों के डेरे में,
जीने को देते नहीं पेट भर खाना,
मरने भी देते नहीं, तड़प रह जाना!
जीवन पर अब दिन–रात कड़ा पहरा है,
शासन है, या तम का प्रभाव गहरा है?
हिमकर निराश कर चला रात भी काली,
इस समय कालिमामयी जगी क्यूँ आली ?

3

क्यों हूक पड़ी?
वेदना–बोझ वाली–सी;
कोकिल बोलो तो!

''क्या लुटा?
मृदुल वैभव की रखवाली सी;
कोकिल बोलो तो।''

4

बन्दी सोते हैं, है घर–घर श्वासों का
दिन के दुख का रोना है निःश्वासों का,
अथवा स्वर है लोहे के दरवाजों का,
बूटों का, या सन्त्री की आवाजों का,
या गिनने वाले करते हाहाकार।
सारी रातें है–एक, दो, तीन, चार–!
मेरे आँसू की भरीं उभय जब प्याली,
बेसुरा! मधुर क्यों गाने आई आली?

5

क्या हुई बावली?
अर्द्ध रात्रि को चीखी,
कोकिल बोलो तो!
किस दावानल की
ज्वालाएँ हैं दीखीं?
कोकिल बोलो तो!

6

निज मधुराई को कारागृह पर छाने,
जी के घावों पर तरलामृत बरसाने,
या वायु–विटप–वल्लरी चीर, हठ ठाने
दीवार चीरकर अपना स्वर अजमाने,
या लेने आई इन आँखों का पानी?
नभ के ये दीप बुझाने की है ठानी!
खा अन्धकार करते वे जग रखवाली
क्या उनकी शोभा तुझे न भाई आली?

7

तुम रवि–किरणों से खेल,
जगत् को रोज जगाने वाली,
कोकिल बोलो तो!
क्यों अर्द्ध रात्रि में विश्व
जगाने आई हो? मतवाली
कोकिल बोलो तो!

8

दूबों के आँसू धोती रवि–किरनों पर,
मोती बिखराती विन्ध्या के झरनों पर,
ऊँचे उठने के व्रतधारी इस वन पर,
ब्रह्माण्ड कँपाती उस उद्दण्ड पवन पर,
तेरे मीठे गीतों का पूरा लेखा
मैंने प्रकाश में लिखा सजीला देखा।

9

तब सर्वनाश करती क्यों हो,
तुम, जाने या बेजाने?
कोकिल बोलो तो!
क्यों तमपत्र पर विवश हुई
लिखने चमकीली तानें?
कोकिल बोलो तो!

10

क्या?–देख न सकती जंजीरों का गहना?
हथकड़ियाँ क्यों? यह ब्रिटिश–राज का गहना,
कोल्हू का चर्रक चूँ? –जीवन की तान,
मिट्टी पर अँगुलियों ने लिक्खे गान?
हूँ मोट खींचता लगा पेट पर जूआ,
खाली करता हूँ ब्रिटिश अकड़ का कूआ।
दिन में करुणा क्यों जगे, रुलानेवाली,
इसलिए रात में गजब ढा रही आली?

11

इस शान्त समय में,
अन्धकार को बेध, रो रही क्यों हो?
कोकिल बोलो तो!
चुपचाप, मधुर विद्रोह–बीज
इस भाँति बो रही क्यों हो?
कोकिल बोलो तो!

12

काली तू, रजनी भी काली,
शासन की करनी भी काली
काली लहर कल्पना काली,
मेरी काल कोठरी काली,
टोपी काली कमली काली,
मेरी लौह–श्रृंखला काली,
पहरे की हुंकृति की व्याली,
तिस पर है गाली, ऐ आली!

13

इस काले संकट–सागर पर
मरने को, मदमाती!
कोकिल बोलो तो!
अपने चमकीले गीतों को
क्योंकर हो तैराती!
कोकिल बोलो तो!

14

तेरे 'माँगे हुए' न बैना,
री, तू नहीं बन्दिनी मैना,
न तू स्वर्ण–पिंजड़े की पाली,
तुझे न दाख खिलाये आली!
तोता नहीं; नहीं तू तूती,
तू स्वतन्त्र, बलि की गति कूती
तब तू रण का ही प्रसाद है,
तेरा स्वर बस शंखनाद है।

15

दीवारों के उस पार!
या कि इस पार दे रही गूँजें?
हृदय टटोलो तो!
त्याग शुक्लता,
तुझ काली को, आर्य–भारती पूजे,
कोकिल बोलो तो!

16

तुझे मिली हरियाली डाली,
मुझे नसीब कोठरी काली!
तेरा नभ भर में संचार
मेरा दस फुट का संसार!
तेरे गीत कहावें वाह,
रोना भी है मुझे गुनाह!
देख विषमता तेरी मेरी,
बजा रही तिस पर रण–भेरी!

17

इस हुंकृति पर,
अपनी कृति से और कहो क्या कर दूँ?
कोकिल बोलो तो!
मोहन के व्रत पर,
प्राणों का आसव किसमें भर दूँ!
कोकिल बोलो तो!

18

फिर कुहू!–––अरे क्या बन्द न होगा गाना?
इस अंधकार में मधुराई दफनाना?
नभ सीख चुका है कमजोरों को खाना,
क्यों बना रही अपने को उसका दाना?
फिर भी करुणा–गाहक बन्दी सोते हैं,
स्वप्नों में स्मृतियों की श्वासें धोते हैं!
इन लौह–सीखचों की कठोर पाशों में
क्या भर देगी? बोलो निद्रित लाशों में?

क्या? घुस जायेगा रुदन
तुम्हारा निःश्वासों के द्वारा,
कोकिल बोलो तो!
और सवेरे हो जायेगा
उलट–पुलट जग सारा,
कोकिल बोलो तो!

प्रसंग और संदर्भ–

प्रस्तुत कविता 'कैदी और कोकिला' प्रसिद्ध राष्ट्रवादी कवि माखन लााल चतुर्वेदी के कविता–संग्रह 'हिमकिरीटिनी' से ली गयी है। कवि ने इस कविता की रचना उस समय की थी जब देश पराधीनता की बेड़ियों में जकड़ा हुआ था। कवि को स्वयं भी आजादी के आंदोलनों में जेल जाना पड़ा था। इसलिए कहा जा सकता है कि यह कविता कवि ने स्वयं के जेल अनुभव से प्रेरित होकर लिखी है। जेल में प्रताड़ना और दुर्व्यवहार का चित्रण करके जनता के सामने प्रस्तुत करना और कोयल के माध्यम से लोगों में आजादी की चेतना पैदा करना इस कविता का उद्देश्य प्रतीत होता है।

कविता का वाचक स्वतंत्रता सेनानी है। गोरी हुकूमत ने उसे कैद कर दिया है। रात का समय है, चारों तरफ अंधेरा है और खामोशी छायी हुई है। ऐसे में कोयल का बोलना सुन कर कैदी अर्थात स्वतंत्रता सेनानी के मन में प्रश्न उठता है कि आखिर इतनी रात में कोयल के बोलने का क्या कारण हो सकता है? क्या वह कोई शुभ या अशुभ सूचना लाई है? इस प्रश्न का उत्तर पाने के लिए वह कोयल से इतनी रात में गाने का कारण पूछने लगता है। कविता अपने आप में, कोयल से पूछी गयी, एक प्रश्न माला है। वास्तव में कोयल काव्य–प्रतीक है, जिसे माध्यम बनाकर कवि नें देशवासियों के मन में राष्ट्रीयता की भावना को जगाने का सार्थक प्रयास किया है।

विशेष–

यह कविता राष्ट्रप्रेम की भावना से प्रेरित हो कर लिखी गयी है। कोयल का इस कविता में बड़े ही सुंदर ढंग से मानवीकरण हुआ है। रूपक और उपमा अलंकार के प्रयोग से काव्य सौंदर्य बहुत आकर्षक बन गया है। इस कविता से हमें आजादी के आंदोलन के समय देश के युवाओं में प्रवाहित देश प्रेम और त्याग बलिदान की भावना का अनुमान होता है।

कठिन शब्द

कोकिल–कोयल, **रह–रह जाना**–कुछ कहने की इच्छा के साथ रूक जाना, **बटमार**–लुटेरे, **प्रभाव**–असर, **तम**–अंधेरा, **हिमकर**–चंद्रमा, **कालिमा मई**–काली अंधेरी, **आली**–सखी, **वेदना**–कष्ट,दर्द, **हूक**–दर्द भरी टीस, **मृदुल**–कोमल, मीठा, **वैभव**–समृद्धि, ऐश्वर्य, **बावली**–पगली, **दावानल**–जंगल की आग, **ज्वालायें**–लपटें, **दीखीं**–दिखाई दीं, **चर्रक**–चर्रक–चर्र चर्र की आवाज, **तान**–मधुर आवाज, **गान**–गीत, **अकड़**–ऐंठ, सख्ती, **मोट**–कुएं से पानी खींचने का चरसा, **गजबढ़ाना**–उपद्रव या आतंक, **करूणा**–दया, **बेधना**–काटना, छेद करना, **विद्रोह**–बीज–विरोध की शुरूआत, **रजनी**–रात, **करनी**–क्रिया कलाप, व्यवहार, **कल्पना**–विचार, शैली, भावना, सोच, **कालकोठरी**–जेल की कोठरी जिसमें गम्भीर अपराधी बंदी बनाये जाते हैं, **कमली**–कम्बल, **लौह शृंखला**–लोहे की जंजीर, **हुंकृति**–हुंकार, **व्याली**–सांपिन, **संकट–सागर**–संकटों

या दुखों का समुद्र, कभी न खत्म होने वाला दुख, **मदमाती**– मस्ती से भरी हुई, नशे में चूर, **तैराती**–यादों में लाती, **नसीब**–भाग्य, तकदीर, **गुनाह**–पाप, **विषमता**– अंतर, भेद, **रणभेरी**–युद्ध के समय बजाया जानेवाला नगाड़ा, **कृति**–रचना, **व्रत**–संकल्प, **आसव**–मदिरा, **नभ–भर**–पूरा आकाश, **वाह कहावें**–प्रशंसा पावें

व्याख्या–

1. कविता के पहले बंद में कैदी के माध्यम से कवि कोयल से पूछता है–हे कोयल! तुम क्या गा रही हो? गाते–गाते कभी चुप हो जाती हो! आखिर बात क्या है? क्या कोई संदेश लेकर आई हो? कुछ बोलती क्यों नहीं! अगर कोई संदेश लेकर आई हो तो बताओ! बोलते–बोलते चुप क्यों हो जाती हो? और यह भी तो बताओ कि यह संदेश तुम्हें कहां से मिला है? कुछ तो बोलो!

2. दूसरे बंद में कवि जेल की यातनाओं के वर्णन के बहाने अंग्रेजों के अत्याचार को सबके सामने प्रस्तुत किया गया है। कवि अर्थात बंदी कहता है कि जेल की दीवारें काली और ऊंची हैं। इसके घेरे में तरह तरह के चोर बटमार, लुटेरे, डाकू रहते हैं। यहां पेट भर भोजन के लिए तरस जाना पड़ता है। हालत यह है कि न जीने दिया जाता है न मरने। तड़प कर रह जाना पडता है। यहाँ आजादी नाम की चीज ही नहीं है। हर समय कड़े पहरे में जीवन बिताना पडता है। पता नहीं यह कैसा शासन है कि सब तरफ उत्पीड़न का अंधकार ही अंधकार है। चंद्रमा भी कहीं चला गया है। धरती से आसमान तक सब जगह निराशा का अंधकार छाया हुआ है। उम्मीद की कहीं कोई रोशनी नहीं है और रात भी भयानक रूप से काली है। कैदी के माध्यम से कवि पूछता है कि हे कोयल! इस कालिमाम रात में तू क्यों जाग रही हो? तुम्हारे जागने का प्रयोजन क्या है?

3. कविता के तीसरे बंद में कोयल के स्वर में बहुत गहरी वेदना है। इस वेदना में पराधीन भारत की वेदना की तरफ संकेत किया गया है। जेल में बंद स्वतंत्रता सेनानी को लगता है कि कोयल ने अंग्रेज सरकार द्वारा किये जाने वाले अत्याचार को देख लिया है। इसीलिए उसके कंठ से वेदना का स्वर सुनाई पड़ रहा है। कोयल की कुहुक दर्दीली हूक में बदल गयी है। कैदी को लगता है कि कोयल अपनी वेदना सुनाना चाहती है। इसलिए पूछता है, तुम्हें किस बात की चिंता है? किस वेदना के बोझ से कराह रही हो? कुछ बोल क्यों नहीं रही हो? कैदी सोचता है कि कोयल शायद उसके दर्द को समझ रही है, इसलिए उसके मुख से वेदना का स्वर फूट रहा है। वह कोयल से पूछना चाहता है कि मेरी आजादी की तरह क्या तुम्हारा भी कुछ लुट गया है? तुम्हारी मीठी आवाज, जिसके वैभव की तुम स्वामिनी हो, लगता है किसी दुख के कारण कहीं गुम हो गयी है। तुम्हारी बोली में मिठास नहीं है। ऐसा कौन सा दुःख का पहाड़ तुम पर टूट पड़ा है? मुझे भी तो बताओ!

4. इस बंद में जेल के भीतर रात के वातावरण का वर्णन किया गया है। बंदी कोयल से कहता है, इस रात में यहां तुम क्या सुनने आई हो? ये जो तुम्हें घर्र–धर्र की आवाजें सुनाई दे रही हैं, सो रहे बंदियों की स्वांसो की आवाजें हैं। रात में यहां तुम्हें तरह–तरह की आवाजें सुनाई देंगी–यातनाओं के दर्द से रो रहे कैदियों की सिसकियों की आवाजें, जेल के भारी भरकम लोहे के फाटक के खुलने बंद होने की आवाजें, सिपाहियों के बूटों की आवाजें, संत्रियों की आवाजें, कैदियों की गिनती के समय–एक दो तीन चार की आवाजें। हे कोयल! जेल की भयावनी रात में, जब हमारे दोनों नेत्रों की प्याली आंसुओं

से भरी हुई है, तुम असमय अपना मधुर गाना सुनाने क्यों चली आई हो। दुख की इस मानसिकता में तुम्हारा यह मधुर गान बिल्कुल बेसुरा लग रहा है।

5. पांचवे बंद में सेनानी कैदी को इतनी रात में कोयल का चीखना बड़ा अजीब लग रहा है, इसलिए वह कोयल से पूछता है कि क्या तुम बावली हो गयी हो जो आधी रात को इस तरह चीख रही हो? आखिर तुम्हें हुआ क्या है? आधी रात के सन्नाटे में क्यों चीख रही हो? तुम्हारा इस तरह आधी रात में चीखना मुझे आशंकित कर रहा है। कहीं तुमने जंगल में लगी आग तो नहीं देख लिया है? हे कोयल! कुछ तो बोलो!! यहां कवि ने जंगल की आग के बहाने कहना चाहा है कि कोयल ने अंग्रेजी हुकूमत के अत्याचारों से जनता में मची चीख पुकार देख लिया है।

6. कैदी कोयल से पूछता है कि हे कोयल! कहीं ऐसा तो नहीं कि कारागार की भयावहता से क्लांत सेनानी कैदियों के घायल हृदय की पीड़ा को अपने मधुर गीत के अमृत से शांत करने आई हो? या अपने गीत से पेड़ों और हवाओं और जेल की ऊंची दीवारों, की बाधाओं को चीर कर तुम अपनी ताकत आजमाना चाहती हो? यहां कवि संकेतों में कोयल के माध्यम से कहना चाहता है कि जेल की दीवारें भी साहसी सेनानियों के लिए अभेद्य नहीं हैं। गुलामी जितनी भी कड़ी हो, जैसे कोयल अपने हठ से जेल की अलंघ्य दीवारों और पेड़ों की बाधाओं को पार कर अपनी आवाज से जेल को गुंजायमान कर सकती है, वैसे ही गुलामी की कठोर बेड़ियां भी तोड़ी जा सकती हैं। आगे कैदी पूछता है कि कहीं ऐसा तो नहीं कि हमारी आंखों में भरे आंसू अर्थात हमारी पीड़ाओं का शमन करने के लिए, तुमने जेल के ऊंचे टावरों पर जलते हुए गुलामी के दीपों को बुझाने का प्रण कर लिया है? कोयल! ये दीप तो अंधकार को नष्ट करने के लिए लगाये गये हैं ताकि जेल (अंग्रेज सरकार) की रखवाली किया जा सके! तुम्हें क्या नभ के इन जलते हुए दीपों (अंग्रेजी सरकार के बने रहने) की शोभा अच्छी नहीं लगती है? अर्थात क्या तुम अंग्रेजो का राज मिटाना चाहती हो?

7. यहाँ कैदी कोयल से कहता है कि हे कोयल! तुम्हें लोग इसलिए प्यार करते हैं कि तुम रोज प्रातःकाल सूरज की किरणों के साथ ही अपनी मीठी धुन से सारे संसार को जगाती हो। लेकिन आज इस काली अंधेरी रात में क्यों जगा रही हो? क्या तुम सचमुच ही मतवाली हो गयी हो? बोलो! बताओ!

8. इस बंद का काव्य सौंदर्य बड़ा ही मोहक है। इसमें छायावादी बिम्बों और उपमाओं का सघन प्रयोग दिखता है। कवि इस बंद में प्रकाश की किरणों पर कोयल के गीतों को चमकते हुए देखता है। कहता है–हे कोयल! मैंने, पृथ्वी पर उगी हरी–हरी दूबों पर पड़ी ओस की बूंदों को सुखाती, विन्ध्या के झरनों पर मोती बिखेरती, गगन ऊँचे–ऊँचे पेड़ों वाले वनों और पूरे ब्रहमाण्ड को झकझोर देने वाली हवाओं पर अठखेलियां करती प्रातः कालीन किरणों पर तुम्हारे गीतों को थिरकते हुए देखा है।

9. कैदी के माध्यम से कवि कहता है कि हे कोयल! मीठे गान सुना कर संसार का मन प्रसन्न करना तुम्हारा स्वभाव है। मुश्किल समयों में भी तुम अपना स्वभाव नहीं छोड़ती। फिर ऐसा क्यों है कि तुम इस काली रात में, जेल की दीवारों के भीतर जल रहे दीप को बुझाना चाहती हो? इसका सर्वनाश करना चाहती हो? अंधकार के पत्तों पर अपनी चमकीली तानें लिखने की तुम्हारी विवशता का क्या कारण है? अर्थात गुलामी के अंधकार को क्यों मिटाना चाहती हो?

10. कैदी कोयल से पूछता है– क्या हमें इन जंजीरों में जकड़े देखना तुम्हें सह नहीं लग रहा? फिर स्वयं ही कोयल को समझाते हुए कहता है कि अरे! ये हथकड़ियां नहीं हैं, ये तो हम सेनानियों को ब्रिटिश राज का दिया आभूषण है। हम सेनानियों को गुलाम देश में यही शोभा देता है। और कोल्हूं का यह चर्रक चूं ? यह तो अब हमारे जीवन की लय बन चुका है–प्रेरणा का संगीत। यातनाओं के कोल्हूं में पिसते रहना ही हम सेनानियों के जीवन का यथार्थ है। पत्थर तोड़ते–तोड़ते हमारी उंगलियां उन्हीं पत्थरों पर भारत माता की आजादी का गाना लिखने लगती है। हम पेट पर 'मोट' का जुआं बांध कर ब्रिटिश राज की अकड़ के कुंए को खाली कर रहे हैं। अर्थात इतनी यातनायें सहकर हम ब्रिटिश राज की अकड़ ढीली कर रहे हैं। हमारे अंदर यातनाओं को सहने का गजब का धैर्य है। हम नहीं चाहते कि हमारी यातना देख लोगों के भीतर करूणा का संचार हो, लोगों की आंख में आंसू आये। परन्तु इतनी रात में तुम्हारी वेदना भरी चीख से मेरा मन विदीर्ण हो रहा है।

11. इन पंक्तियों में कवि कोयल को संबोधित करते हुए कहता है कि वातावरण में सन्नाटा पसरा है, चारों ओर अंधकार फैला हुआ है। तुम्हारी रूलाई इस अंधकार को बेध रही है। मगर यह तो बताओ कि तुम रो क्यों रही हो? ब्रिटिश शासन के विरुद्ध विद्रोह का मधुर–बीज क्यों बो रही हों? क्या तुम भी स्वतंत्रता सेनानियों की तरह देशभक्ति का व्रिदोह–बीज बोना चाहती हो?

12. इस बंद में जेल में सेनानियों के साथ हो रहे उत्पीड़न का वर्णन है। कवि कोयल से कह रहा है कि देखो! तू भी काली है और ये दुखों की रात भी काली है। हम जिस कोठरी में रहते हैं, वह भी काली है और आस–पास चलने वाली हवा के साथ–साथ यहाँ से मुक्ति पाने की हमारी कल्पना काली है। अंग्रेजी सरकार की करतूतें काली है। जेल की दीवारें काली हैं। इन दीवारों के भीतर की हवा काली है, मेरी ये टोपी काली है और जो कम्बल मैं ओढ़ता हूँ वह भी काला है। जिन जंजीरों में मुझे बांधा गया है, वह भी काली है। दिन–रात कठोर यातनायें सहने के अलावा पहरेदारों की गाली भी सुनना पड़ता है। यह डांट और गाली किसी काले सांप की तरह हमें डंसने को दौड़ती हैं।

13. यहां कवि कोयल को संबोधित करते हुए कहता हैं ऐसा क्यों है कि यहां अपार संकट सामने खड़ा है और तुम मरने को उद्यत दिखाई देती हो! तुम तो स्वतंत्र हो, फिर आधी रात में जेल रूपी संकट के सागर पर आशा और उत्साह से भरपूर अपने चमकीले गीतों को क्यों तैरा रही हो? अर्थात जेल के इस उदास सन्नाटे में स्वतंत्रता की भावना जागृत करने वाले मदमस्त करने वाले गीत क्यूँ गाए जा रही हो? कारागार के समीप घूम–फिरकर ओज–तेज का संचार क्यों कर रही हो? हे कोयल! कुछ तो बोलो।

14. कवि कहता है कि हे कोयल! तू मैना जैसी बंदिनी नहीं है, तुम्हारा पालन किसी सोने के पिंजरे में नहीं हुआ है, कोई तुझे कुछ खिलाता भी नहीं है, तूम न तो तोता हो न तूती, तुम हर तरह से आजाद हो, एक सेनानी की तरह तुम्हारा जीवन भी युद्ध भूमि के समान है– सब तरफ संघर्षो से घिरा हुआ। तुम्हारी बोली किसी शंखनाद से कम नहीं है। कोकिला और सेनानी की तुलना करके कवि ने दोनों को समतुल्य बना दिया है।

15. इस बंद में कैदी कोयल से पूछता है कि तुम कहां से आवाज दे रही हो! जेल की दीवारों के उस पार से या भीतर से? अपना हृदय टटोल कर बताओं कि वास्तव में तुम हो कहां (अर्थात तुम किसे जाग्रत करना चाहती हो, सेनानियों को या अंग्रेजों को)। तुम

काली जरूर हो लेकिन तुम्हारा त्याग बहुत धवल है। काली होने के बावजूद आर्यों के इस देश में तुम पूजनीय हो। हे कोयल! कुछ बोलती क्यों नहीं ?

16. इस पद में हर तरह से आजाद कोयल एवं बेड़ियों में जकड़े कैदी की मनःस्थिति की तुलना बड़े ही मार्मिक ढंग से की गयी है। कोयल को संबोधित करते हुए कवि कहता कि हे कोयल! तुम पूरी तरह आजाद हो, तुम्हें हरी भरी डालियों पर बसेरा बनाने की छूट है, पूरा आसमान तुम्हारा है, जहां, जब चाहो जा सकती हो। तुम्हारे गीतों पर लोग खुश होकर तालियां बजाते हैं। वाह–वाह! करते हैं। इधर हम कैदियों का रोना कराहना सुनने के लिए कोई तैयार ही नहीं है। तुम कहीं पर भी विचरण कर सकती हो और मनचाहे गीत गा सकती हो। लेकिन हमें, हमेशा अंधकार से भरी, 10 फुट की छोटी सी कोठरी में रहना पड़ता है। अपनी इच्छानुसार कुछ भी नहीं कर सकना यहां असंभव है। हमारे और तुम्हारे जीवन में जमीन आसमान का फर्क है, तुम्हें आजादी ही आजादी है, जब कि मेरे भाग्य में अंधकार से भरी रात है। समझ में नहीं आता कि युद्ध का यह राग क्यों गाये जा रही हो ? इस रहस्यमय ढंग से तुम्हारे गाने का आशय क्या है? मुझे बताओ कोयल !

17. कवि कोयल की पुकार पर कुछ भी करने को तैयार है। कोयल से कहता है, हे कोयल! बताओ अपनी कृति से और क्या कर दूं। मोहन यहां मोहनदास करमचंद गांधी के लिए प्रयोग किया गया है। मोहन के व्रत पर प्राणों का आसव से कवि का अभिप्राय यह है कि कोयल यदि कहे तो वह गांधी जी के संकल्पों को पूरा करने के लिए अपने प्राणों को न्यौछावर भी कर सकता हूं। देशवासियों के दिलों में गुलामी के खिलाफ लड़ने का मंत्र फूँक सकता हूं।

18. कोयल को लगातार गाते देख कैदी पूछता है, हे कोयल! तुम्हारा यह गाना बंद भी होगा या हर समय गाती ही रहोगी? क्या तुमने अपनी आवाज की मधुरता को गुलामी के अंधकार में दफन कर देने की ठान ली है? अर्थात क्या तुम अंग्रेजों की गुलामी के सामने झुकने को तैयार नहीं हो? क्या तुम्हें पता नहीं कि यह अत्याचारी आकाश कमजोरों को निगल जाता है? आखिर क्यों अपने आप को उसका निवाला बनाने पर आमादा हो? अर्थात आजादी की लड़ाई का जोखिम क्यों उठाना चाहती हो? जेल के जिन बंदियों में तुम करूणा जगाना चाहती हो, वे अभी जेल की कठोर बंदिशों के बीच अपनी स्मृतियों के साथ सो रहे हैं। क्या तुम नींद में अचेत पड़े लोगों को आजादी का संदेश दे पाओगी?

19. अंतिम बंद में कैदी कोयल से पूछता है कि क्या तुम्हें यकीन है कि इन सोये हुए कैदियों की सांसों के रास्ते तुम्हारा रूदन इनकी आत्मा तक पहुंच जायेगा? बताओ कोयल! और यह भी बताओ कि क्या सुबह जब कैदी नींद से जागेंगे तो सब कुछ उलट–पुलट हो जायेगा? क्या गुलामी का राज उखाड़ कर नष्ट हो जायेगा? बोलो कोयल!

काव्य सौष्ठव–

- कविता की संबोधन वाचक और प्रश्न वाचक शैली आत्मीयता की भावना जगाती है।
- कोयल को माध्यम बनाकर लिखी गई इस कविता में अन्योक्ति अलंकार का बड़ा सुंदर प्रयोग किया गया है। इससे कविता का सौंदर्य बहुत बढ़ गया है।
- लय और छंद की झंकार अलग से अपना ध्यान आकर्षित करती है।

- संस्कृतनिष्ठ और तत्सम शब्दों का प्रयोग खूब हुआ है किन्तु भाषा में लालित्य का प्रवाह तनिक भी कम नहीं हुआ है।
- काव्य–भाषा सांकेतिक है। कहीं–कहीं काव्यालंकारों का बड़ा मनोहारी प्रयोग हुआ है।
- कवि ने भावानुकूल तत्सम शब्दों वाली खड़ी बोली का प्रयोग किया है।
- पुष्प का मानवीकरण बहुत सुंदर ढंग से किया गया है।

विशेष–

देश प्रेम और स्वाधीनता की चेतना जगाना इस कविता का प्रमुख उद्देश्य है। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए कवि ने काव्य सौंदर्य को कहीं हल्का नहीं होने दिया है। यह कविता अपनी सघन प्रतीकात्मकता, सांकेतिकता, आलंकारिकता और शब्द योजना की दृष्टि से भी बहुत महत्वपूर्ण है। इसका उदात्त भाव इसे अलग से श्रेष्ठ बनाता है।

बोध प्रश्न–1

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दें।

1. 'पुष्प की अभिलाषा' में कवि क्या संदेश देना चाहता है?

   ....

   ....

   ....

2. 'पुष्प की अभिलाषा' में पुष्प माली से क्या कहता है?

   ....

   ....

   ....

3. 'कैदी और कोकिला' का सारांश लिखिये।

   ....

   ....

   ....

4. 'कैदी और कोकिला' कविता के आधार पर पराधीन भारत की जेलों में स्वतंत्रता संग्राम के सेनानियों को दी जाने वाली यातनाओं का वर्णन कीजिए।

   ....

   ....

   ....

5. 'कैदी और कोकिला' में हथकड़ियों को गहना क्यों कहा गया है?

   ....

   ....

   ....

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

बोध प्रश्न–2

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

i. 'पुष्प की अभिलाषा' शीर्षक कविता, किस पुस्तक से ली गयी है?

क) हिम किरीटिनी ख) हिम तरंगिनी ग) समर्पण घ) वेणु ले गूंजे धरा

ii. पुष्प किस पथ पर बिखेरा जाना चाहता है?

क) राज पथ पर ख) बाजार के पथ पर ग) शहीद पथ पर
घ) जिस पथ से मातृभूमि पर शीश चढ़ाने के लिए वीर सैनिक जाते हैं।

iii. पुष्प अपनी अभिलाषा किसके सामने प्रकट कर रहा है?

क) कवि के सामने ख) सुर बाला के सामने ग) सैनिक के सामने
घ) माली के सामने

iv. 'पुष्प की अभिलाषा' कविता की मूल भावना क्या है?

क) भगवद् भक्ति की भावना ख) देश भक्ति की भावना
ग) अंग्रेजों पर शासन की भावना घ) युद्ध की भावना

v. पुष्प की अभिलाषा कविता के माध्यम से किसकी अभिलाषा व्यक्त हुई है?

क) कवि की अभिलाषा ख) सम्राट की अभिलाषा ग) सुंदरी की अभिलाषा
घ) देश प्रेमी की अभिलाषा

vi. 'कैदी और कोकिला' किस संग्रह में संकलित है?

क) 'हिमकिरीटिनी' ख) बिजुरी काजल आंज रही ग) माता
घ) समय के पांव

vii. 'कैदी और कोकिला' में जंजीरों को क्या कहा गया है?

क) उत्पीड़न का औजार ख) गहना ग) गुलामी का प्रतीक घ) कुछ नहीं

viii. कैदी और कोयल में क्या समानता है?

क) दोनों गायक हैं ख) दोनों कैदी हैं ग) दोनो स्वतंत्रता से प्रेरित हैं
घ) दोनों घायल हैं

ix. कवि ने किस शासन की तुलना तम के प्रभाव से की है?

क) मुगल शासन की ख) रूसी शासन की ग) भारतीय शासन की
घ) ब्रिटिश शासन की

x. पराधीन भारत में कैदियों के साथ कैसा व्यवहार किया जाता था?

क) अमानवीय ख) सामान्य ग) राजसी घ) सम्माननीय

xi. कैदी ने देश की आजादी के लिए किसके विरूद्ध संघर्ष किया?

क) अंग्रेजी शासन ख) कांग्रेस शासन ग) मुगल शासन घ) स्थानीय शासन

xii. हथकड़ियों को कविता में क्या कहा गया है?

क) गहना ख) बेड़ी ग) बंधन घ) पराधीनता

xiii. कोयल किस समय चीख रही थी?

क) दोपहर में ख) आधी रात में ग) कभी नहीं घ) सूरज निकलने पर

xiv. कैदी की कोठरी कितने फुट की थी?

क) 10 फुट ख) 5 फुट ग) 3 मीटर घ) 10 गज

xv. 'कैदी और कोयल' में कवि ने अंग्रेजी शासन की तुलना किस रंग से की है?

क) काला ख) नीला ग) सफेद घ) हरा

16.3 उपयोगी पुस्तके

माखन लाल चतुर्वेदीः एक अध्ययन, लेखक श्री नर्मदा प्रसाद खरे।

16.4 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न– 1

1. 'पुष्प की अभिलाषा' कविता ब्रिटिश शासन की गुलामी से आजादी के लिए देश के नौजवानों में देश प्रेम की भावना जगाने के लिए लिखी गयी थी। इस कविता में कवि ने देश के प्रति समर्पित होने का संदेश दिया है। पुष्प के माध्यम से कवि ने प्रेरणा दी है कि हमें अपने देश के लिए त्याग–बलिदान करने में पीछे नहीं रहना चाहिए।

2. भारत देश के स्वतंत्रता सेनानी अंग्रेजों से आजादी के लिए लड़ाई कर रहे थे। यह कविता जनता में देशप्रेम की भावना पैदा करने के लिए लिखी गयी थी। इस कविता में माली से फूल कहता है, हे माली! सुनो! मैं नहीं चाहता कि मुझे किसी सुंदर स्त्री के आभूषण में गूंथा जाय जिससे कि युवती का आकर्षण बढ़ जाय। मुझे किसी सुंदरी के गले का आभूषण बनने की इच्छा बिल्कुल ही नहीं है। मैं किसी युवती के श्रृंगार का उपकरण नहीं बनना चाहता। किसी प्रेमी की माला में गुंथ कर उसकी प्रेमिका को ललचाने की भी मुझे कोई इच्छा नहीं है। हे माली! तुम मुझे किसी सम्राट के शव पर डाले जाने से बचाना। हमें इस तरह का सम्मान पाने की भूख बिल्कुल नहीं है। किसी देवता के सिर पर चढ़ने का सौभाग्य प्राप्त करने की भी मुझे कोई चाह नहीं है। देशप्रेम के सामने ये सब बहुत तुच्छ इच्छायें हैं। हमारी अभिलाषा तो मातृभूमि को आजाद कराने के लिए शीश कटाने को तैयार वीरों के चरण चूमना चाहते हैं। अतः तुम हमें उस रास्ते पर बिखेर देना जिस रास्ते से देशप्रेमी सैनिक मातृभूमि की रक्षा के लिए शीश कटाने जा रहे होते हैं।

3. कैदी और कोकिला कविता में कवि ने अंग्रेजी शासन द्वारा किये गये अत्याचारों व जेल में कैदियों को दी जाने वाली यातनाओं तथा अपने दुख और असंतोष का वर्णन किया है। कविता का सारांश यह है कि कवि आजादी के आंदोलन में जेल चला गया है। जेल में उसपर बहुत अत्याचार किया जाता है। उसे उम्मीद नहीं है कि ब्रिटिश शासन

कभी खत्म होगा। रात में नींद नहीं आ रही है। आधी रात किसी कोयल के कूकने की आवाज सुनकर वह चौंक जाता है। उसे कोयल का इतनी रात में कूकना बड़ा रहस्यमय लगता है। कविता में वह कोयल को संबोधित करके पूछता है, कि तू इतनी रात को क्या कहना चाह रही है? मैं जेल में हूं, तू स्वतंत्र है, मुझे रोना भी गुनाह है, तू इस अंधेरी रात में चीख–चीख कर क्यों बावली हो रही है? ऐसा लगता है तू मेरे दुख से दुखी होकर इतनी रात में करूणा भरे स्वर में बोल रही हो और अंग्रेजों के अत्याचार का मुकाबला करने के लिए प्रेरित कना चाह रही हो। कवि ने स्वतंत्रता सेनानियों व भारतीय जनता के देश पर न्यौछावर हो जाने की प्रेरणा देने के लिए इस कविता की रचना की है।

4. पराधीन भारत में स्वतंत्रता सेनानियों को जेलों में तरह तरह से अमानवीय यातनायें दी जाती थीं। कविता में इस यातना का वर्णन करते हुए कवि ने कहा है कि ब्रिटिश राज में राजनैतिक कैदियों के साथ चोर डाकुओं जैसा व्यवहार किया जाता था। हथकड़ियों में जकड़ कर उन्हें चोरों डाकुओं के साथ अंधेरी काल कोठरी में रखा जाता था। पेट भर भोजन नहीं दिया जाता था। कोल्हू में उन्हें जोत कर पानी निकलवाया जाता था। जेलर सिपाहियों की निगरानी में रखा जाता था और तरह–तरह से अपमानित किया जाता था।

5. गहना आभूषण को कहते हैं। गहना का हमारे जीवन में महत्व इसलिए है क्योंकि वह धारण करने वाले व्यक्ति के सौंदर्य को बढ़ा देता है। अंग्रेजों से लोहा लेने वाले वीरों को जब जेल भेजा जाता था तो समाज में उनकी प्रतिष्ठा बढ़ जाती थी। बेड़ी और हथकड़ी में जकड़ा हुआ सेनानी गर्व का अनुभव करता था क्योंकि उसके अंदर मातृभूमि के लिए हर कष्ट सहन करने का जज्बा होता था। जेल क्रांतिकारियों का प्रिय आवास होता था तथा पावों में बेड़ियां और हथकड़ियां पहन कर गहना पहने होने जैसा संतोष होता था। इसलिए कैदी ने कोकिला से कहा कि बेड़ियां और हथकड़ियां तो क्रांतिकारियों का गहना है।

बोध प्रश्न–2

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

i. ख

ii. घ

iii. घ

iv. ख

v. घ

vi. क

vii. ख

viii. ग

ix. घ

x. क

xi. क

xii. क

xiii. ख

xiv. क

xv. क

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

इकाई 17 काव्य–वाचन एवं विश्लेषण : प्यारे भारत देश, अमर राष्ट्र, दीप से दीप जले

इकाई की रूप रेखा

17.0 उद्देश्य

17.1 प्रस्तावना

17.2 चयनित कविताओं का पाठ एवं विश्लेषण

17.3 उपयोगी पुस्तकें

17.4 बोध प्रश्नों के उत्तर

17.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- माखनलाल चतुर्वेदी की तीन कविताओं की विस्तृत व्याख्या समझ सकेंगी/सकेंगे;
- माखनलाल चतुर्वेदी की कविताओं का मूल स्वर क्या है, इसे पहचान सकेंगी/सकेंगे;
- इन कविताओं के माध्यम से देश प्रेम और आजादी की भावना को समझ सकेंगी/सकेंगे;
- माखनलाल चतुर्वेदी की काव्य–भाषा के तत्वों की पहचान करना सीख सकेंगी/सकेंगे;
- माखनलाल चतुर्वेदी की कविताओं में शब्द–योजना और प्रयुक्त शब्दावली से परिचित हो जायेंगी/जायेंगे और
- माखनलाल चतुर्वेदी के जीवन और उनकी साहित्यिक–राजनीतिक यात्रा के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकेंगी/सकेंगे।

17.1 प्रस्तावना

कवि का जीवन–

माखनलाल चतुर्वेदी का जन्म 4 अप्रैल सन 1889 को मध्यप्रदेश के होशंगावाद जिले के बाबई नामक स्थान पर हुआ था। इनके पिता जी का नाम नन्दलाल चतुर्वेदी तथा माता जी का नाम सुंदरी बाई था। इनका विवाह ग्यारसी बाई से हुआ था। सन 1905 में जबलपुर से प्राइमरी टीचर्स ट्रेनिंग, नार्मल शिक्षा उत्तीर्ण करने के बाद ये अध्यापक हो गये। इन्हें हिन्दी के अतिरिक्त संस्कृत, बंगला, गुजराती और अंग्रेजी, भाषा पर भी समान अधिकार प्राप्त था। हिन्दी के प्रतिष्ठित कवि, कुशल वक्ता, पत्रकार, सम्पादक तथा लेखक होने के साथ–साथ माखनलाल चतुर्वेदी जी एक स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी भी थे। असहयोग आन्दोलन के दौरान उन्हें लगभग दस माह तक कारावास की सजा हुई। वे बिलासपुर की जेल में बंद रहे। 'पुष्प की अभिलाषा' नामक कालजयी कविता उन्होंने जेल में रहते हुए ही लिखी। बाद में शिक्षक पद से त्याग पत्र देकर, पत्रकारिता के क्षेत्र में आ गये। प्रसिद्ध राष्ट्रवादी पत्रकार गणेश शंकर विद्यार्थी से वे बहुत प्रभावित थे। माखनलाल चतुर्वेदी की पहचान एक राष्ट्रवादी धारा के कवि के रूप रही है। इनके काव्य का मूल स्वर राष्ट्रवादी है। भारतीय राष्ट्रीय स्वाधीनता

की अनुगूंजें इनकी कविताओं में प्रमुखता से देखने को मिलती हैं। इन्होंने कुछ आध्यात्मिक और रहस्यवादी भावबोध की कवितायें भी लिखी हैं। मगर मुख्यतः वे राष्ट्रवादी विचारों के ही कवि थें और इसी कारण से इन्हें साहित्य जगत में 'भारतीय आत्मा' कहा जाता है।

रचनाएं—चतुर्वेदी जी ने गद्य और पद्य दोनों विधाओं में लिखा है। इनकी प्रमुख कृतियों के नाम हैं—

काव्य संग्रह—'हिम किरीटिनी'(सन 1943),

'हिम तरंगिणी' (सन 1949),

'माता' (सन1951),

'युग चरण' (सन 1956)

'समर्पण' (सन 1956)

'वेणु ले गूंजे धरा' (सन 1960),

'बिजुरी काजल आंज रही' (सन 1954 से 64 के बीच की रचनाओं का संकलन, सन 1980 में प्रकाशित)

कहानी संग्रह— 'कला का अनुवाद'

गद्य काव्य— 'साहित्य देवता' (निबंध संग्रह)

नाटक— 'कृष्णार्जुन—युद्ध', 'सिरजन और मंचन'

संपादन— कर्मवीर, प्रताप, प्रभा (पत्रिका एवं समाचार पत्र)

निबंध— 'समय के पांव' (1962, संस्मरणात्मक)

निबंध संग्रह — अमीर इरादे : गरीब इरादे (1960), रंगों की होली (सन 1944 तक के निबंधों का संकलन, 1980 में प्रकाशित)

भाषण संग्रह— चिंतन की लाचारी (1965)

सम्मान— सागर विश्व विद्यालय से डी लिट की उपाधि, सन 1969 में पद्म भूषण सम्मान (सन 1963)

पुरस्कार— साहित्य अकादमी पुरस्कार, देव पुरस्कार

17.2 चयनित कविताओं का पाठ एवं विश्लेषण

एक

प्यारे भारत देश
गगन—गगन तेरा यश फहरा
पवन—पवन तेरा बल गहरा
क्षिति—जल—नभ पर डाल हिंडोले
चरण—चरण संचरण सुनहरा

ओ ऋषियों के त्वेश
प्यारे भारत देश।।

वेदों से बलिदानों तक जो होड़ लगी
प्रथम प्रभात किरण से हिम में जोत जगी
उतर पड़ी गंगा खेतों खलिहानों तक
मानो आँसू आये बलि–महमानों तक

सुख कर जग के क्लेश
प्यारे भारत देश।।

तेरे पर्वत शिखर कि नभ को भू के मौन इशारे
तेरे वन जग उठे पवन से हरित इरादे प्यारे!
राम–कृष्ण के लीलालय में उठे बुद्ध की वाणी
काबा से कैलाश तलक उमड़ी कविता कल्याणी

बातें करे दिनेश
प्यारे भारत देश।।

जपी–तपी, संन्यासी, कर्षक कृष्ण रंग में डूबे
हम सब एक, अनेक रूप में, क्या उभरे क्या ऊबे
सजग एशिया की सीमा में रहता केद नहीं
काले गोरे रंग–बिरंगे हममें भेद नहीं

श्रम के भाग्य निवेश
प्यारे भारत देश।।

वह बज उठी बासुँरी यमुना तट से धीरे–धीरे
उठ आई यह भरत–मेदिनी, शीतल मन्द समीरे
बोल रहा इतिहास, देश सोये रहस्य है खोल रहा
जय प्रयत्न, जिन पर आन्दोलित–जग हँस–हँस जय बोल रहा,

जय–जय अमित अशेष
प्यारे भारत देश।

संदर्भ और प्रसंग–

माखनलाल चतुर्वेदी की 'प्यारे भारत देश' कविता उनके काव्य संग्रह, 'वेणु लो गूंजे धरा' में संकलित है। यह उनकी प्रसिद्ध कविताओं में से एक है। माखनलाल चतुर्वेदी स्वाधीनता आंदोलन से प्रेरित राष्ट्रप्रेमी कवि थे और देशप्रेम ही उनकी अधिकांश कविताओं का केन्द्रीय भाव होता है। इस कविता में भी वही भाव है। यह कविता अंग्रेजी शासन की गुलामी के बोझ से दबी भारत की जनता में देशभक्ति और स्वतंत्रता की चेतना जगाने के लिए लिखी गयी है। इसमें देश के गौरवपूर्ण अतीत की बड़े ही काव्यात्मक गरिमा के साथ प्रशंसा की गयी है। यह देश की अभ्यर्थना का गीत है। पाठकों को अपने प्यारे भारत के विस्मृत गौरव और महिमा से परिचित करा कर, उनके मन में देश प्रेम की भावना जगाना इस कविता का उद्देश्य है।

कठिन शब्द

गगन–आकाश, **यश**– इज्जत, सम्मान, प्रतिष्ठा, **पवन**– हवा, **क्षिति**– आकाश, **नभ**– आसमान, **संचरण**–गतिशील, **त्वेश**–चमक, प्रकाश, **प्रभात**–सवेरा, **जोत**– प्रकाश, रोशनी, **क्लेश**– दुख, **पर्वत**–पहाड़, **शिखर**–चोटी, **भू**–भूमि, **हरित**–हरी भरी, **काबा**–इस्लाम धर्म का तीर्थ, **कैलाश**– भगवान शिव का स्थान, **दिनेश**–सूरज, **जपी तपी**– जप तप करने वाले साधु–संन्यासी, **कर्षक**–किसान, **कृष्ण**–सावला, **निवेश**–निवास, जमा करना, **मेदिनी**– भूमि या पृथ्वी, **समीर**– हवा, **अमित–अशेष**– जिसकी कोई सीमा न हो,

व्याख्या–

1. भारत देश की प्रसंशा में कवि कहता है कि हे ऋषियों मुनियों की पुण्य परम्परा से दीपित हमारे प्यारे देश! तुम्हारा यश सारे संसार में– धरती से आकाश तक फैला हुआ है। हवायें तुम्हारे बल वैभव का गीत गाती हैं। सदियों से तुम्हारी यात्रा का हर कदम सुंनहला रहा है।

2. इस बंद में भारत देश पर प्रकृति की विशेष कृपा का वर्णन करते हुए कवि कहता है कि हे प्यारे भारत देश! ज्ञान और बलिदान दोनों ही क्षेत्रों में दुनिया तुमसे होड़ लेने में लगी है। हिमालय की चोटी पर सुबह–सुबह जब सूरज की सुनहली किरणें पड़ती हैं तो बर्फीली चोटियां चमक उठती हैं। तुम्हारे खेतों खलिहानों को हरा–भरा करने के लिए हिमालय से गंगा स्वयं मैदानों में उतर आयी हैं, मानों बलिदान के लिए तत्पर आजादी के मेहमानों तक आंसू स्वयं चलकर आये हों। हे भारत देश! प्रार्थना है कि संसार के दुखों को सुख में बदल दो।

3. हे मेरे प्यारे भारत देश! तुम्हारे पर्वतों की ऊंची चोटियां, भूमि के मौन इशारों को आकाश तक पहुंचा रही हैं। और सभी हरे भरे वन उपवन हवा के स्पर्श से लहलहा उठे हैं। राम और कृष्ण की लीला भूमि पर बुद्ध के उपदेश गूंज रहे हैं। काबा से लेकर कैलाश तक कल्याण की कामना करती हुई तमाम कविताएं उमड़ी हुई हैं। कल्याण के मार्ग पर सभी धर्म और पंथ एक साथ चल रहे हैं। सूर्य तुमसे बातें करता है।

4. हे मेरे प्यारे भारत देश! तुम इतने महान हो कि तुम्हारे यहां भगवद भजन करने वाले, संन्यासी से लेकर किसान तक सब कृष्ण की भक्ति में रमें रहते हैं। यहां किसी में कोई भेद नहीं है। ऊंची नीची सभी श्रेणियों के लोग एकता के सूत्र में बंधे हैं। तुम्हारा देश एशिया की सीमा में कभी कैद नहीं रहा। यह एक सजग और खुली चेतना वाला देश है। यहां काले और गोरे का भेद–भाव नहीं है यह एक बहुरंगी देश है और सभी रंग के लोग आपस मे प्रेम भाव रखते हैं। सबको श्रमानुसार फल प्राप्त होता है।

5. कवि कहता है कि हे प्यारे भारत देश! इधर यमुना के किनारे कृष्ण की बंसी धीमें सुर में बजनी शुरू होती है, उधर से भारत माता शीतल मंद सुगंधित वायु का झकोरा महसूस कर के जाग जाती है। अपने देश के इतिहास का स्मरण करते हुए कवि कहता है कि हमारा इतिहास तो बोल रहा है। रहस्यमय ढंग से सोये हुए देश को जगाने का प्रयत्न चल रहा है। पूरा संसार आंदोलित होकर हमारी प्रशंसा कर रहा है। कभी न समाप्त होने वाले, निस्सीम संभावनाओं वाले हे प्यारे भारत देश! तुम्हारी जय हो!

काव्य सौष्ठव–

इस कविता में तत्सम शब्द बहुत हैं, और शब्द योजना भी सामासिक है। भाव बहुत रसात्मक हैं।

यह कविता संबोधन शैली में लिखी गयी है। इस कविता का मूल भाव पाठक के मन में भारत भूमि के प्रति प्रेम जाग्रत करना है। कविता इसमें पूरी तरह सफल है।

इस बंद में बर्फीली चोटियों पर पड़ने वाली प्रभात की किरणों से पैदा होने वाली सुनहली चमक और हरे भरे वनों में बहने वाली शीतल मंद सुगंध से भरी हवाओं का बड़ा ही मनोहारी चित्रण किया गया है। गंगा का मैदानों में स्वयं उतर कर आने का बिम्ब बड़ा ही अनूठा है।

कविता में भारत देश का मानवीकरण हुआ है। इससे कविता में वर्णित दृश्यों और विवरणों में सजीवता का संचार हो गया है।

इस कविता में कुल पांच बंद हैं। प्रत्येक बंद मे प्रथम चार पंक्तियां 16 मात्राओं की और अंतिम दो पंक्तियां, जिन्हें टेक कह सकते हैं, नौ मात्राओं की हैं। प्रत्येक बंद के अंत में आया टेक भारत की छवि को नये–नये आयामों से देखने की समझ देते हैं।

विशेष

माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय चेतना का कवि होने के साथ साथ राष्ट्रवाद की भावना से भरे हुए एक सेनानी भी थे। इसलिए देश–प्रेम की धारा उनकी प्रायः सभी कविताओं में प्रवाहित दिखती है। वे देश को कोई भूमि का टुकड़ा नहीं, आजादी के लिए तड़पती हुई आत्मा के रूप में अनुभव करते थे।

दो

अमर राष्ट्र
छोड़ चले, ले तेरी कुटिया,
यह लुटिया–डोरी ले अपनी,
फिर वह पापड़ नहीं बेलने
फिर वह माल पड़े न जपनी।

यह जागृति तेरी तू ले–ले,
मुझको मेरा दे–दे सपना,
तेरे शीतल सिंहासन से
सुखकर सौ युग ज्वाला तपना।

सूली का पथ ही सीखा हूँ,
सुविधा सदा बचाता आया,
मैं बलि–पथ का अंगारा हूँ,
जीवन–ज्वाल जलाता आया।

एक फूँक, मेरा अभिमत है,
फूँक चलूँ जिससे नभ जल थल,
मैं तो हूँ बलि–धारा–पन्थी,
फेंक चुका कब का गंगाजल।

इस चढ़ाव पर चढ़ न सकोगे,
इस उतार से जा न सकोगे,
तो तुम मरने का घर ढूँढ़ो,
जीवन–पथ अपना न सकोगे।

श्वेत केश?– भाई होने को–
हैं ये श्वेत पुतलियाँ बाकी,
आया था इस घर एकाकी,
जाने दो मुझको एकाकी।

अपना कृपा–दान एकत्रित
कर लो, उससे जी बहला लें,
युग की होली माँग रही है,
लाओ उसमें आग लगा दें।

रस उसका जिसकी तरूणाई,
रस उसका जिसने सिर सौंपा,
आगी लगा भभूत रमायी।

जिस रस में कीड़े पड़ते हों,
उस रस पर विष हँस–हँस डालो
आओ गले लगो, ऐ साजन!
रेतो तीर, कमान सँभालो।

हाय, राष्ट्र–मन्दिर में जाकर,
तुमने पत्थर का प्रभू खोजा!
लगे माँगने जाकर रक्षा
और स्वर्ण–रूपे का बोझा?

मैं यह चला पत्थरों पर चढ़,
मेरा दिलबर वहीं मिलेगा,
फूँक जला दें सोना–चाँदी,
तभी क्रान्ति का समुन खिलेगा।

चट्टानें चिंघाड़े हँस–हँस,
सागर गरजे मस्ताना–सा,
प्रलय राग अपना भी उसमें,
गूँथ चलें ताना–बाना–सा,

बहुत हुई यह आँख–मिचौनी,
तुम्हें मुबारक यह वैतरनी,
मैं साँसों के डाँड उठाकर,
पार चला, लेकर युग–तरनी।

मेरी आँखे, मातृ–भूमि से
नक्षत्रों तक, खीचें रेखा,
मेरी पलक–पलक पर गिरता
जग के उथल–पुथल का लेखा !

मैं पहला पत्थर मन्दिर का,
अनजाना पथ जान रहा हूँ,
गूड़ँ नींव में, अपने कन्धों पर
मन्दिर अनुमान रहा हूँ।

मरण और सपनों में
होती है मेरे घर होड़ा–होड़ी,
किसकी यह मरजी–नामरजी,
किसकी यह कौड़ी–दो कौड़ी?

अमर राष्ट्र, उद्दण्ड राष्ट्र, उन्मुक्त राष्ट्र !
यह मेरी बोली
यह 'सुधार' 'समझौतों' वाली
मुझको भाती नहीं ठठोली।

मैं न सहूँगा–मुकुट और
सिंहासन ने वह मूँछ मरोरी,
जाने दे, सिर, लेकर मुझको
ले सँभाल यह लोटा–डोरी !

(विविध कविताएं संग्रह से)

संदर्भ प्रसंग–यह कविता माखनलाल चतुर्वेदी के 'विविध कविताएं' संग्रह में संकलित है। इसे उनकी प्रतिनिधि कविताओं में से एक माना जाता है। दूसरी कविताओं की तरह इस कविता के केन्द्र में भी राष्ट्र–प्रेम ही है। इस कविता में, मातृभूमि की आजादी के लिए हर तरह का त्याग और बलिदान करने की प्रबल भावना मुखरित हुई है।

कठिन शब्द

माल–माला, **जागृति**–जागरूकता, **ज्वाला**–आग की लपट, **सूली**–फांसी, **बलि–धारा पंथी**– उस विचारधारा के लोग जो त्याग बलिदान और कठिनाइयों भरा जीवन पसंद करते हैं, **श्वेत–केश**– सफेद बाल, **तरूणाई**–जवानी, **भभूत**– राख, जिसे साधु लोग शरीर पर लगाते हैं, **विष**–जहर, **स्वर्ण–रूपे**–सोना चांदी, **दिलबर**–प्रेम, **मुबारक**–मनोकामना सफल हो, **सुमन**–फूल, **उन्मुक्त**– पूरी तरह स्वतंत्र।

व्याख्या–

कविता के आरंभ में ही कवि दो विकल्पों की बात करता है–एक, 'सुखी जीवन' का और दूसरा–मातृभूमि के लिए त्याग और बलिदान के रास्ते पर चलने का। वह बड़े साफ शब्दों में कहता है कि यह जो सुख का सांसारिक जीवन है, इसे मैं आज इसी वक्त छोड़ता हूं। अब मुझे इस माया मोह में नहीं पड़ना।

पहले बंद की बात को आगे बढ़ाते हुए कवि कहता है कि मुझे तेरी जागृति नहीं मेरा सपना चाहिए। तुम्हारे राज पाट का सुख भोगने में मेरी कोई रूचि नहीं है। मुझे तो देश के लिए अगर सौ युगों तक अग्नि की ज्वाला में तपना पड़े तो वह तुम्हारे सिंहासन से कई गुना सुखकर लगेगा।

इस बंद से पता चलता है कि कवि बलि–पंथी है। जो बलिदान की भावना से मृत्यु का जयगान करते हैं, जिनकी वाणी और कर्म में अंतर नहीं होता, जो कारागार को कृष्ण मंदिर, हथकड़ी को माता, पृथ्वी को बिस्तर और आकाश को ही छत समझते है और इंद्रपुरी का सुख भी ठुकरा कर स्वयं को राष्ट्र के लिए समर्पित कर सकते हैं, उन्हें बलि–पंथी कहा जाता है। इस बंद में कवि सुख और सुविधा का रास्ता छोड़ जीवन–ज्वाल में तपने की बात करता है।

बलि–पंथी विचारों का प्रतिनिधित्व करते हुए कवि कहता है कि मैं तो नभ से लेकर जल और थल तक में आग लगा देने के लिए तत्पर हूं। मैंने गंगाजल को कब का फेक दिया है।

सुविधा भोगी जनों से कवि अपने बारे में बताता है कि जिस पथ का वह पथिक है, वह ऊंची–ऊंची कठिन चढ़ाइयों और घाटियों से भरा है। इसपर चलना तुम सुविधाभोगियों के वश का नहीं है। यह जीवन–पथ है। तुमलोग मरण के रास्ते पर जाने का रास्ता ढूंढो। इस बंद में कवि देश के लिए मर मिटने मे ही जीवन की सार्थकता देखता है और–

कहता है कि हमारे बाल सफेद हो गये है तो क्या? अभी आंखें सही सलामत हैं। इस संसार में अकेला आया था तो अकेले ही जाने दो। हमें किसी के समर्थन की फिक्र नहीं है।

कवि कहता है कि देश के लिए कठिन से कठिन राह पर चलने में हमें खुशी होगी। मुझे किसी की कृपा नहीं चाहिए। ऐसी कृपाओं का होलिका दहन कर के हम मनोरंजन करना चाहते हैं। यही आज के युग की मांग है।

अंग्रेजी दसता के युग में, सुख सुविधाओं का आनंद लेने में जीवन का रस नहीं है। असली रस तो अपनी तरूणाई के दिनों में ही देश हित में सिर कटा लेने में और अंग्रेजी शासन को जलाकर राख कर देने में है।

गुलामी की भत्सर्ना करते हुए कवि कहना चाहता है कि दासता का जीवन चाहे जितना भी सुख सुविधाओं से भरा हो, व्यर्थ है। इस पराधीन जीवन का रस उस रस के समान होता है जिसमें कीड़े पड़ते हैं। ऐसे रस को पीने से अच्छा है उस पर विष डालकर समाप्त कर देना। अतः हे मित्र दासता का जीवन–रस त्याग कर आओ, हमारे गले लग जाओ और युद्ध के लिए तीर कमान सम्हाल लो।

तुम कैसे हो? राष्ट्र रूपी मंदिर में तुम ऐसे प्रभु की पूजा क्यों करने लगे जो पत्थर का है! और उस पत्थर के देवता से तुम अपनी रक्षा तथा सुख सुविधाओं की मांग करने लगे? तुम कैसे राष्ट्र प्रेमी हो? मुझे तुम्हारे ऊपर तरस आता है।

कवि कहता है कि ऐसे पत्थर के प्रभुओं अर्थात अंग्रेजी शासन के मालिकों के सीने पर चढ़ कर मैं क्रांति का सुमन खिलाने अर्थात दासता से मुक्ति के संघर्ष में शामिल होने जाता हूं। जब तक धन दौलत सोना चांदी का लोभ नहीं छूटेगा, क्रांति भी नहीं होगी। अतः हम देश को आजाद कराने के लिए हर तरह का धन दौलत भस्म करने को तैयार हैं।

इस बंद में प्रलय काल का दृश्य रचा गया है। चट्टानें एक दूसरे से टकरा रही हैं, समुद्र में तेज ऊफान आने से उत्पन्न घोर कठोर ध्वनि से आकाश और धरती पर भयानक अफरा तफरी मच गयी है। कवि भी ऐसे ही प्रलय का राग गाना चाहता है, अर्थात जंगे आजादी की ऐसी प्रलयंकारी कल्पना करना चाहता है जिसमें ब्रिटिश राज का विध्वंश हो जायेगा।

कवि कहता है कि ब्रिटिश राज की वैतरनी पर बैठकर जीवन का सुख पाने के इच्छुक लोगों! तुम्हें यह जीवन मुबारक हो! मैं तो अब शत्रुओं के साथ लुका छिपी के खेल से तंग आ गया हूं। अर्थात अब बहस, समझौते, वार्ता, और हुकूमत में भागीदारी की भीख मांगने वाली जीर्ण शीर्ण नीतियों से तंग आ चुका हूं। अब तो मैं खुद अपनी जिन्दगी को डांड और नाव बनाकर गुलामी की इस नदी को पार करने निकल रहा हूँ।

इस बंद में कवि अपनी आंखों में पल रहे प्रलय दृश्य की तरफ इशारा करता है। मातृ–भूमि के लिए कवि की आंखों में तैर रही यह प्रलय कल्पना बड़े सुंदर ढंग से व्यक्त हुई है।

कवि कहता है कि आजादी की लड़ाई का यह जो भव्य मंदिर बनने जा रहा है, मैं उसकी नींव में रखा गया पहला पत्थर हूं। मंदिर कैसे बनेगा, अर्थात किन–किन रास्तों पर चल कर आजादी की मंजिल मिलेगी, इसका मुझे ठीक पता नहीं है। लेकिन जिस मंदिर को बनाने अर्थात आजादी को पाने के लिए मैंने अपना कंधा समर्पित किया है, उस पर मंदिर की रूपरेखा, अर्थात आजादी मिलने के बाद देश जैसा बनेगा उसका अनुमान तो कर ही सकता हूं।

अपने सपनों को साकार करने के लिए मरने के लिए भी तैयार रहना है। हमारे भीतर आजादी के लिए बलिदान होने की अभिलाषा और आजादी के सपनों में होड़ा होड़ी मची रहती है। इस होड़ा होड़ी में किसी की नहीं चलती।

इस बंद में आजादी के क्रांतिवीरों के स्वभाव का चित्रण संकेतों में किया गया है। अपने शत्रु के साथ समझौता और सुधार की मांग करने वाले नेताओं की निन्दा करते हुए साफ–साफ कहा गया है कि शत्रु के साथ हंसी ठिठोली समझौते और राहत की मांग का तरीका हमें तनिक भी पसंद नहीं है। हमें हर हाल में अपना अमर, उन्मुक्त और हर समय युद्ध के लिये सन्नद्ध आत्म सम्मान से पूर्ण राष्ट्र चाहिए।

अंत में कवि एक बार पुनः कविता के आरम्भ में कही गयी बात को दुहराते हुए कहता है– मैं इन अंग्रेजों के मुकुट, सिंहासन और मूछ मरोड़ी को अब और सहन नहीं कर सकता। हमें तो सब कुछ छोड़–छाड़ कर, केवल सिर लेकर जाना है। आजादी के मैदान में सर कटाने के लिए जाने दो।

काव्य सौष्ठव–

- कविता का मूल भाव राष्ट्र प्रेम है।
- त्याग और बलिदान को श्रेष्ठ मूल्य माना गया है।
- देश की आजादी तथा सम्मान के लिए सर्वस्व त्याग करने की प्रेरणा देना कविता का प्रतिपाद्य है
- रूपकों और उपमाओं का बड़ा सुंदर प्रयोग हुआ है।
- कविता के बंद छोटे और संबोधन शैली में लिखे गये है।
- भाषा का प्रवाह कविता को सरस बनाता है।
- इसमें वीर रस का समावेश हैं।
- जीवन–ज्वाला, जीवन–पथ, बलि–पंथ आदि शब्द युग्मों से कविता का सौंदर्य बढ़ गया है। रूपक की सुंदर रचना देखने को मिलती है।

- मुहावरों का बड़ा सटीक उपयोग हुआ है। कविता के पहले बंद में, 'यह लो अपनी लुटिया –डोरी' और 'हमको पापड़ नहीं बेलने' जैसी मुहावरेदार भाषा का प्रयोग बड़े ही प्रभावी ढंग से किया गया है।

विशेष–

इसमें कविता में तत्सम शब्दों का अपेक्षाकृत कम प्रयोग हुआ है। भाषा संवाद धर्मी है। त्याग और बलिदान की हमारी सदियों पुरानी परंपरा के श्रेष्ठ मूल्यों को प्रतिष्ठा प्रदान की गयी है।

तीन

दीप से दीप जलें

दीप से दीप जलें
सुलग–सुलग री जोत दीप से दीप मिलें
कर–कंकण बज उठे, भूमि पर प्राण फलें।

लक्ष्मी खेतों फली अटल वीराने में
लक्ष्मी बँट–बँट बढ़ती आने–जाने में
लक्ष्मी का आगमन अँधेरी रातों में
लक्ष्मी श्रम के साथ घात–प्रतिघातों में
लक्ष्मी सर्जन हुआ
कमल के फूलों में
लक्ष्मी–पूजन सजे नवीन दुकूलों में।।

गिरि, वन, नद–सागर, भू–नर्तन तेरा नित्य विहार
सतत मानवी की अँगुलियों तेरा हो शृंगार
मानव की गति, मानव की धृति, मानव की कृति ढाल
सदा स्वेद–कण के मोती से चमके मेरा भाल
शकट चले जलयान चले
गतिमान गगन के गान
तू मिहनत से झर–झर पड़ती, गढ़ती नित्य विहान।।

उषा महावर तुझे लगाती, संध्या शोभा वारे
रानी रजनी पल–पल दीपक से आरती उतारे,
सिर बोकर, सिर ऊँचा कर–कर, सिर हथेलियों लेकर
गान और बलिदान किए मानव–अर्चना सँजोकर
भवन–भवन तेरा मंदिर है
स्वर है श्रम की वाणी
राज रही है कालरात्रि को उज्ज्वल कर कल्याणी।।

वह नवांत आ गए खेत से सूख गया है पानी
खेतों की बरसन कि गगन की बरसन किए पुरानी
सजा रहे हैं फुलझड़ियों से जादू करके खेल
आज हुआ श्रम–सीकर के घर हमसे उनसे मेल।

तू ही जगत की जय है,
तू है बुद्धिमयी वरदात्री
तू धात्री, तू भू–नव गात्री, सूझ–बूझ निर्मात्री।।

युग के दीप नए मानव, मानवी ढलें
सुलग–सुलग री जोत! दीप से दीप जलें। (विविध कविताएं संग्रह से)

संदर्भ प्रसंग–

'दीप से दीप जले' शीर्षक कविता माखनलाल चतुर्वेदी जी के ''विविध कवितायें'' नामक संग्रह से ली गयी है। इसमें दीपावली पर्व पर लक्ष्मी की पूजा का वर्णन है। दीपक से दीपक जलाकर प्रकाश का विस्तार करने के लाक्षणिक महत्व के बहाने से कवि भारतीय जनता में राष्ट्रीयता की रक्षा के लिए एकता की भावना भरना चाहता है। इसमें लक्ष्मी और श्रम के सम्बन्ध को बड़े कलात्मक ढंग से व्यंजित किया है।

दीपावली पर उत्साहित होकर कवि कामना करता है कि जिस तरह दीप से दीप जला कर उजाला किया गया है, उसी तरह लोगों को चाहिए कि मिल जुल कर देश में आजादी की चेतना का प्रकाश फैलायें। जिस तरह दीप प्रज्वलित करती महिलाओं के हाथ के कंगन बज रहे हैं उसी तरह राष्ट्रीयता की चेतना का संचार हो।

लक्ष्मी और श्रम को एक दूसरे का पर्याय मानते हुए कवि कहता है कि दीपावली के समय वीराने खेतों में जो फसलें फैली हुई हैं वही लक्ष्मी हैं। अमावस्या की काली रात में लक्ष्मी का आगमन मेहनती लोगों के घरों में होता है। जिस लक्ष्मी जी का कमल के फूल और नये नये वस्त्रों में पूजन अर्चन हो रहा है, वह श्रम की देवी हैं।

कवि प्रार्थना करता है कि हे देवी, पर्वतों, वनों, नदियों, सागर, और भारत भूमि पर तुम हमेशा विचरण करो। देश हमेशा अपने श्रम से तुम्हारा शृंगार करता रहे। श्रम से उत्पन्न पसीने की बूंदें उसके ललाट पर मोतियों की तरह दमती रहें। अर्थात हमारे देश के लोग हमेशा श्रमशील बने रहें। हे देवी! तुम श्रम रूपी पेड़ का फल हो। श्रमशील लोगों के जीवन को तुम सम्पन्न बनाती हो।

इस पद में कवि कहता है कि उषा की किरणें अपनी लाली से तुम्हारे पैरों में महावर लगाती है और संध्या तो तुम्हारे उपर अपनी समस्त सुंदरता ही न्यौछावर कर देती है। रात अपने दीप जला कर तेरी आरती उतारती है। यह समूचा मानव जगत अपना सिर हथेलियों में लेकर तुम्हारी अभ्यर्थना करता रहता है। श्रमिकों का घर ही तेरा मंदिर है और श्रमिक समाज की वाणी में ही तेरी प्रार्थनाओं की गूंज छिपी है। हे जगत का कल्याण करने वाली, तू अमावस्या की काल रात्रि को प्रकाश से उज्जवल कर रही हो।

इस कविता में लक्ष्मी भारत भूमि का प्रतीक बनती हुई देखी जा सकती हैं। जैसे श्रम से लक्ष्मी का अर्जन होता है, वैसे ही बलिदान से स्वतंत्रता की देवी प्रसन्न होती हैं।

दीपावली का समय है। फसल पक गयी है, घर में नया अन्न आ गया है, खेतों का पानी सूख गया है। बच्चे फुलझड़ियों का खेल सजा रहे हैं। ऐसे उत्सवी समय में मेहनत के पसीने से फल रूपी फसल का मेल

कठिन शब्द

कर–कंकण–हाथ का कंगन, **सर्जन**–निर्माण, **दुकूल**–वस्त्र, **भू–नर्तन**–भूमि का नृत्य, **धृति**–धैर्य, **स्वेद–कण**–पसीने की बूंदे, **शकट**–लकड़ी की गाड़ी, **रजनी**–रात, **उषा**–सवेरा, **श्रम–सीकर**–मेहनत का पसीना, **धात्री**–धरती, **गात्री**–शरीर

हुआ है। लक्ष्मी की अभ्यर्थना में कवि कहता है कि हे देवी! तू ही सबको धारण करने वाली, धरती है, तू स्वयं पृथ्वी स्वरूपा है।

देश के पुरूष और महिलायें युग को प्रकाशित करने वाला नया दीप बनें। हे ज्योति तुम जलों! और दीपों से दीप जलते रहें।

काव्य–सौष्ठव :

- सामासिक पदों के प्रयोग से कविता का सौंदर्य बढ़ गया है।
- लक्ष्मी को मानव श्रम की सर्जना कह कर श्रम को पूजनीय महत्व दिया गया है।
- कुछ पदों में प्रकृति का बड़ा ही मनोहारी मानवीकरण किया गया है।
- श्रम–सीकर और कर–कंकण में रूपक अलंकार का बड़ा सुंदर प्रयोग हुआ है।

विशेष–इस कविता में दीवाली पर्व का सुंदर चित्रण हुआ है और लक्ष्मी देवी को श्रम की धात्री और गात्री कह कर श्रम के महत्व को स्थापित किया गया है।

बोध प्रश्न–1

निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर संक्षेप में दें–

1. माखनलाल चतुर्वेदी के बारे में क्या जानते हैं?

   ....

   ....

   ....

   ....

2. 'प्यारे भारत देश कविता' किसे संबोधित कर के लिखी गयी है? इसमें कवि ने क्या कहा है?

   ....

   ....

   ....

   ....

3. 'अमर राष्ट्र' कविता में बलि–धारा–पंथी पद से कवि का क्या आशय है?

   ....

   ....

   ....

   ....

4. 'अमर राष्ट्र' कविता में कवि कुटिया और लोटा–डोरी छोड़ कर कहां जाना चाहता है?

....

....

....

....

5. 'दीप से दीप जले' कविता के चौथे बंद में उषा किसके पांव में महावर लगाती है?

....

....

....

....

6. प्रकृति का मानवीकरण से क्या आशय है? ऊपर की तीनों कविताओं में से प्रकृति के मानवीकरण का कोई उदाहरण दीजिए।

....

....

....

....

बोध प्रश्न–2

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. गगन –गगन में कौन समास है?

   क) तत्पुरूष समास ख) बहुब्रीहि समास ग) कर्मधारय समास
   घ) कोई समास नहीं

2. 'प्यारे भारत देश' कविता किसे सम्बोधित करके लिखी गयी है?

   क) भारत देश ख) उत्तर प्रदेश ग) संसार घ) सेनानी

3. माखनलाल चतुर्वेदी किस भाषा के पत्रकार थे?

   क) हिन्दी ख) अंग्रेजी ग) उर्दू घ) बांग्ला

4. चतुर्वेदी जी की कविता पर किस काव्यप्रवृत्ति का प्रभाव देखने को मिलता है?

   क) छायावाद ख) प्रगतिवाद ग) राष्ट्रवाद घ) प्रयोगवाद

5. 'प्यारे भारत देश' किस संग्रह में संकलित है?

   क) हिम किरीटिनी ख) हिम तरंगिणी ग) बिजुरी काजर आंज रही
   घ) वेणु लो, गूंजे धरा

6. बलि–पंथ किस प्रकार का पंथ है?

   क) त्याग और बलिदान का पंथ   ख) सनातन पंथ
   ग) भोग विलास का पंथ   घ) अघोर पंथ

7. चतुर्वेदी जी की कविता का प्रधान विषय क्या होता है?

   क) देश   ख) प्रकृति   ग) मनुष्य   ध) जीव जगत

8. उषा किसको महावर लगा रही है?

   क) लक्ष्मी को   ख) पार्वती को   ग) धरती को   घ) नदी को

9. नवीन दुकूल का अर्थ क्या है?

   क) नया आभूषण   ख) नया वस्त्र   ग) नया विचार   घ) नया युग

10. लक्ष्मी का सर्जन किससे हुआ बताया गया है?

    क) श्रम से   ख) पसीना से   ग) फसलों से   घ) धन से

11. चतुर्वेदी जी को साहित्य एकादमी किस पुस्तक के लिए मिला था?

    क) हिम तरंगिणी   ख) वेणु लो गूंजे धरा   ग) समर्पण   घ) समय के पांव

12. चतुर्वेदी जी जेल किस कारण गये थे?

    क) असहयोग आंदोलन में भाग लेने के कारण
    ख) आपत्तिजनक लेख लिखने के कारण
    ग) गुप्त गतिविधियों मे शामिल होने के कारण
    घ) कभी जेल नहीं गये

13. श्रम–सीकर में कौन सा अलंकार है?

    क) रूपक   ख) उत्प्रेक्षा   ग) उपमा   घ) अनुप्रास

14. भवन–भवन तेरा मंदिर है। यह किसके लिए कहा गया है?

    क) धरती के लिए   ख) लक्ष्मी के लिए   ग) प्रकृति के लिए
    घ) भारत माता के लिए

15. माखनलाल चतुर्वेदी जी को किस प्रकार का कवि माना जाता है?

    क) प्रगतिवादी   ख) स्वच्छंदतावादी   ग) राष्ट्रवादी   घ) रहस्यवादी

17.3 उपयोगी पुस्तकें

- 'कुछ कविताएं', माखनलाल चतुर्वेदी
- 'वेणु ले गूंजे धरा', माखनलाल चतुर्वेदी

17.4 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न–1

1. माखनलाल चतुर्वेदी का जन्म 4 अप्रैल सन 1889 को मध्यप्रदेश के होशंगावाद में हुआ था। हिन्दी का प्रतिष्ठित राष्ट्रवादी कवि, कुशल वक्ता, पत्रकार, सम्पादक तथा लेखक होने के साथ–साथ चतुर्वेदी जी स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी भी थे। असहयोग आन्दोलन के दौरान उन्हें लगभग दस माह तक कारावास की सजा हुई। 'पुष्प की अभिलाषा'नामक कालजयी कविता की रचना उन्होंने जेल में रहते हुए ही लिखी थी।

2. इसमें देश के गौरव पूर्ण अतीत की बड़े ही काव्यात्मक गरिमा के साथ प्रशंसा की गयी है। यह देश की अभ्यर्थना का गीत है। पाठकों को अपने प्यारे भारत के विस्मृत गौरव और महिमा से परिचित करा कर, उनके मन में देश प्रेम की भावना जगाना इस कविता का उद्‌देश्य है।

3. बलिपंथी धारा देश प्रेमियों की वह धारा है जो देश के हित में हर तरह का कष्ट उठाने में सुख का अनुभव करते हैं। बलिपंथी आकाश को छत, धरती को बिछौना और आंखों से निकले आंसू को जल समझते हैं। मातृभूमि के लिए हथकड़ियों बेड़ियों में बंधना हर बलिपंथी का सपना होता है।

4. कुटिया और लोटा–डोरी छोड़ कर कवि मातृभूमि को आजाद कराने के लिए युद्ध भूमि की ओर निकल जाना चाहता है। उसे घर में रहना बंधन मे रहने जैसा लगता है।

5. उषा लक्ष्मी देवी के पांवों में महावर लगा रही है।

6. साहित्य में किसी वस्तु या जीव जगत के पशु पक्षी पेड़ आदि को मनुष्य रूप में कल्पित कर लिया जाता तो उसे मानवीकरण कहते हैं। प्रकृति का मानवीकरण छायावादी कविता की प्रधान विशेषता रही है। माखन लाल की 'दीप से दीप जले' कविता के चौथे बंद मे उषा, महावर लगा रही है, संध्या अपनी शोभा न्यौछावर कर रही है और रात दीपक जलाकर आरती उतार रही है। यहां उषा, संध्या और रात का मानवीकरण किया गया है।

बोध प्रश्न–2

i. क

ii. क

iii. क

iv. ग

v. घ

vi. क

vii. क

viii. क

ix. ख

x. क

xi. क

xii. क

xiii. ख

xiv. ख

xv. ग

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

इकाई 18 काव्य वाचन एवं विश्लेषण : झाँसी की रानी

इकाई की रूपरेखा

18.0 उद्देश्य

18.1 प्रस्तावना

18.2 चयनित कविता का पाठ एवं विश्लेषण

18.3 उपयोगी पुस्तकें

18.4 बोध प्रश्नों के उत्तर

18.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- इस इकाई को पढ़ने के बाद आप 'झाँसी की रानी' कविता की विस्तृत व्याख्या समझ सकेंगी / सकेंगे;
- सुभद्रा कुमारी चौहान की कविताओं के विषय के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकेंगे / सकेंगी;
- इस कविता के माध्यम से राष्ट्रीय धारा की कविता के बारे में जान सकेंगे / सकेंगी;
- सुभद्रा कुमारी चौहान की कविताओं के काव्य सौंदर्य और भाषा रचना की विशेषताओं को समझ सकेंगे / सकेंगी;
- सुभद्रा कुमारी चौहान के जीवन और रचना कर्म से परिचित हो सकेंगी / सकेंगे और
- 'झाँसी की रानी' कविता पढ़ कर झाँसी की रानी के जीवन और 1857 में उनके भाग लेने की कहानी का संक्षिप्त ज्ञान हासिल कर सकेंगी / सकेंगे

18.1 प्रस्तावना

सुभद्रा कुमारी चौहान का जन्म 16 अगस्त 1904 इलाहाबाद के निकट निहालपुर नामक गांव में एक जमींदार परिवार में हुआ था। उनके पिता का नाम रामनाथ सिंह था। बाल्यकाल में उनकी प्रारंभिक शिक्षा–दीक्षा पिता की देख–रेख में हुई। सन 1919 में उनका विवाह खंडवा के ठाकुर लक्ष्मण सिंह के साथ हो गया। विवाह के उपरांत पिता का घर छोड़ कर वे जबलपुर आ गयी। बाल्य काल में ही उनके भीतरं देश प्रेम की भावना पैदा हो गयी थी। उस जमाने में, मात्र 17 वर्ष की उम्र में, विवाह के मात्र दो वर्ष बाद ही, 1921 में वे गांधी जी के असहयोग आंदोलन में हिस्सा लेने चली गयी थीं। वे पहली महिला थीं जिन्होंने असहयोग आंदोलन में हिस्सा लिया। उन्हें दो बार जेल भी जाना पड़ा। 44 साल की कम उम्र में ही, फरवरी 1948 को, एक कार दुर्घटना में उनका देहांत हो गया था।

स्वाधीनता संग्राम की सेनानी होने के साथ–साथ सुभद्रा कुमारी चौहान राष्ट्रवादी धारा की एक अच्छी रचनाकार भी थीं। 1857 के संग्राम में वीरता पूर्वक अंग्रेजों से लोहा लेने वाली झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई की रणगाथा को आधार बनाकर उन्होंने एक लम्बी कविता लिखी,

जिसके कारण एक राष्ट्रवादी धारा के कवि के रूप में उन्हें खूब प्रसिद्धि मिली। अच्छी कवि होने के साथ–साथ वे एक अच्छी कथाकार भी थीं। जेल यात्राओं के दौरान मिलने वाली यातनाओं का वर्णन उनकी कहानियों में चित्रत हुआ है। उनकी शैली वातावरण–चित्रण प्रधान तथा भाषा सरल ओजपूर्ण और काव्यात्मक है।

रचनाएं–

कविता संग्रह– मुकुल, त्रिधारा

कहानी संग्रह–

बिखरे मोती –1932

उन्मादिनी –1934

सीधे–साधे चित्र –1947

बाल–साहित्य –झाँसी की रानी, कदम्ब का पेड़, सभा का खेल

कविता संकलन–

'मुकुल तथा अन्य कविताएँ'–(बाल कविताओं के अतिरिक्त संकलित–असंकलित समस्त कविताओं का संग्रह, प्रकाशक–हंस प्रकाशन, इलाहाबाद।)

कथा संकलन–सीधे–साधे चित्र–1983 (संकलित–असंकलित समस्त कहानियों का संग्रह। प्रकाशक– हंस प्रकाशन, इलाहाबाद)

सम्मान –

शेकसरिया पारितोषिक (1931) मुकुल (कविता–संग्रह) के लिए

शेकसरिया पारितोषिक– (1932) बिखरे मोती (कहानी–संग्रह) के लिए (दूसरी बार),

अन्य सम्मान–1 भारतीय डाकतार विभाग ने 6 अगस्त 1976 को सुभद्रा कुमारी चौहान के सम्मान में 25 पैसे का एक डाक–टिकट जारी किया ।

28 अप्रैल 2006 को भारतीय तटरक्षक सेना द्वारा एक तटरक्षक जहाज का नाम सुभद्रा कुमारी चौहान रखा गया।

18.2 चयनित कविता का पाठ एवं विश्लेषण

एक

झाँसी की रानी
सिंहासन हिल उठे राजवंशों ने भृकुटी तानी थी,
बूढ़े भारत में भी आई फिर से नयी जवानी थी,
गुमी हुई आजादी की कीमत सबने पहचानी थी,
दूर फिरंगी को करने की सबने मन में ठानी थी।
चमक उठी सन सत्तावन में, वह तलवार पुरानी थी,

बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।।

कानपुर के नाना की, मुँहबोली बहन छबीली थी,
लक्ष्मीबाई नाम, पिता की वह संतान अकेली थी,
नाना के सँग पढ़ती थी वह, नाना के सँग खेली थी,
बरछी, ढाल, कृपाण, कटारी उसकी यही सहेली थी।
वीर शिवाजी की गाथायें उसको याद जबानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।।

लक्ष्मी थी या दुर्गा थी वह स्वयं वीरता की अवतार,
देख मराठे पुलकित होते उसकी तलवारों के वार,
नकली युद्ध–व्यूह की रचना और खेलना खूब शिकार,
सैन्य घेरना, दुर्ग तोड़ना ये थे उसके प्रिय खिलवाड़।
महाराष्ट्र–कुल–देवी उसकी भी आराध्य भवानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।।

हुई वीरता की वैभव के साथ सगाई झाँसी में,
ब्याह हुआ रानी बन आई लक्ष्मीबाई झाँसी में,
राजमहल में बजी बधाई खुशियाँ छाई झाँसी में,
सुघट बुंदेलों की विरुदावलि–सी वह आयी थी झांसी में।
चित्रा ने अर्जुन को पाया, शिव को मिली भवानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।।

उदित हुआ सौभाग्य, मुदित महलों में उजियारी छाई,
किंतु कालगति चुपके–चुपके काली घटा घेर लाई,
तीर चलाने वाले कर में उसे चूड़ियाँ कब भाई,
रानी विधवा हुई, हाय! विधि को भी नहीं दया आई।
निसंतान मरे राजाजी रानी शोक–समानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।।

बुझा दीप झाँसी का तब डलहौजी मन में हरशाया,
राज्य हड़प करने का उसने यह अच्छा अवसर पाया,
फौरन फौजें भेज दुर्ग पर अपना झंडा फहराया,
लावारिस का वारिस बनकर ब्रिटिश राज्य झाँसी आया।
अश्रुपूर्ण रानी ने देखा झाँसी हुई बिरानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।।

अनुनय विनय नहीं सुनती है, विकट शासकों की माया,
व्यापारी बन दया चाहता था जब यह भारत आया,
डलहौजी ने पैर पसारे, अब तो पलट गई काया,
राजाओं नवाबों को भी उसने पैरों ठुकराया।
रानी दासी बनी, बनी यह दासी अब महरानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।।

छिनी राजधानी दिल्ली की, लखनऊ छीना बातों–बात,
कैद पेशवा था बिठूर में, हुआ नागपुर का भी घात,
उदयपुर, तंजौर, सतारा, कर्नाटक की कौन बिसात?
जब कि सिंध, पंजाब ब्रह्म पर अभी हुआ था वज्र–निपात।
बंगाल, मद्रास आदि की भी तो वही कहानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।।

रानी रोयीं रनिवासों में, बेगम गम से थीं बेजार,
उनके गहने कपड़े बिकते थे कलकत्ते के बाजार,
सरे आम नीलाम छापते थे अंग्रेजों के अखबार,
नागपुर के जेवर ले लो लखनऊ के लो नौलखा हार।
यों परदे की इज्जत प्रदेशी के हाथ बिकानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।।

कुटियों में भी विषम वेदना, महलों में आहत अपमान,
वीर सैनिकों के मन में था अपने पुरखों का अभिमान,
नाना धुंधूपंत पेशवा जुटा रहा था सब सामान,
बहिन छबीली ने रण–चण्डी का कर दिया प्रकट आहवान।
हुआ यज्ञ प्रारम्भ उन्हें तो सोई ज्योति जगानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।।

महलों ने दी आग, झोपड़ी ने ज्वाला सुलगाई थी,
यह स्वतंत्रता की चिनगारी अंतरतम से आई थी,
झाँसी चेती, दिल्ली चेती, लखनऊ लपटें छाई थी,
मेरठ, कानपुर, पटना ने भारी धूम मचाई थी,
जबलपुर, कोल्हापुर में भी कुछ हलचल उकसानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।।

इस स्वतंत्रता महायज्ञ में कई वीरवर आए काम,
नाना धुंधूपंत, ताँतिया, चतुर अजीमुल्ला सरनाम,

अहमदशाह मौलवी, ठाकुर कुँवरसिंह सैनिक अभिराम,
भारत के इतिहास गगन में अमर रहेंगे जिनके नाम।
लेकिन आज जुर्म कहलाती उनकी जो कुरबानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।।

इनकी गाथा छोड़, चले हम झाँसी के मैदानों में,
जहाँ खड़ी है लक्ष्मीबाई मर्द बनी मर्दानों में,
लेफ्टिनेंट वाकर आ पहुँचा, आगे बढ़ा जवानों में,
रानी ने तलवार खींच ली, हुआ द्वंद असमानों में।
जख्मी होकर वाकर भागा, उसे अजब हैरानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।।

रानी बढ़ी कालपी आई, कर सौ मील निरंतर पार,
घोड़ा थक कर गिरा भूमि पर गया स्वर्ग तत्काल सिधार,
यमुना तट पर अंग्रेजों ने फिर खाई रानी से हार,
विजयी रानी आगे चल दी, किया ग्वालियर पर अधिकार।
अंग्रेजों के मित्र सिंधिया ने छोड़ी राजधानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।।

विजय मिली, पर अंग्रेजों की फिर सेना घिर आई थी,
अब के जनरल स्मिथ सम्मुख था, उसने मुँह की खाई थी,
काना और मंदरा सखियाँ रानी के संग आई थी,
युद्ध क्षेत्र में उन दोनों ने भारी मार मचाई थी।
पर पीछे ह्यूरोज आ गया, हाय ! घिरी अब रानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।।

तो भी रानी मार काट कर चलती बनी सैन्य के पार,
किन्तु सामने नाला आया, था वह संकट विषम अपार,
घोड़ा अड़ा, नया घोड़ा था, इतने में आ गये सवार,
रानी एक, शत्रु बहुतेरे, होने लगे वार–पर–वार।
घायल होकर गिरी सिंहनी उसे वीर गति पानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।।

रानी गई सिधार चिता अब उसकी दिव्य सवारी थी,
मिला तेज से तेज, तेज की वह सच्ची अधिकारी थी,
अभी उम्र कुल तेइस की थी, मनुज नहीं अवतारी थी,
हमको जीवित करने आयी बन स्वतंत्रता–नारी थी,

दिखा गई पथ, सिखा गई हमको जो सीख सिखानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।।

जाओ रानी याद रखेंगे ये कृतज्ञ भारतवासी,
यह तेरा बलिदान जगावेगा स्वतंत्रता अविनासी,
होवे चुप इतिहास, लगे सच्चाई को चाहे फाँसी,
हो मदमाती विजय, मिटा दे गोलों से चाहे झाँसी।
तेरा स्मारक तू ही होगी, तू खुद अमिट निशानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।।

संदर्भ और प्रसंग–

सुभद्राकुमारी चौहान की यह प्रसिद्ध कविता उनके काव्य संग्रह 'त्रिधारा' में संकलित है। यह उनकी सर्वश्रेष्ठ कविता है। इस कविता में कवयित्री ने 1857 के स्वतंत्रता संग्राम में झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई द्वारा दिखाए गए अदम्य शौर्य का उल्लेख किया है। उस युद्ध में लक्ष्मीबाई ने अपने अद्भुत युद्ध कौशल और साहस का परिचय देकर बड़े–बड़े योद्धाओं को भी हैरान कर दिया था। उनकी वीरता और पराक्रम से उनके दुश्मन भी प्रभावित थे। इस कविता में बताया गया है कि उन्हें बचपन से ही तलवारबाजी, घुड़सवारी, तीरंदाजी और निशानेबाजी का शौक था। इस कविता में झाँसी के युद्ध का इतिहास भी बड़े ही काव्यात्मक ढंग से गुंथा हुआ है। इसे काव्येतिहास की संज्ञा भी दी जा सकती है।

झाँसी की रानी का बचपन का नाम मनु था। परन्तु उनके मुंहबोले भाई नाना उन्हें छबीली कहते थे। वे बहुत छोटी उम्र में ही युद्ध–विद्या में पारंगत हो गई थीं। अपने पति की असमय मृत्यु के बाद उन्होंने एक कुशल शासक की तरह झाँसी का राजपाट संभाला तथा अंतिम सांस तक अपने राज्य को बचाने के लिए अंग्रेजों से अत्यंत वीरता से लड़ती रहीं। उनके पराक्रम की प्रशंसा उनके शत्रु भी करते थे।

व्याख्या–

प्रथम पद में लेखिका ने बताया है कि 1857 के समय भारत के सभी राजवंशों में अंग्रेजों को भारत से दूर भगाने की जागरूकता आने लगी थी। एक तरह से कहें तो बूढ़ा भारत एक बार फिर से नयी जवानी और जोश से भर उठा था। 1857 के संग्राम में रानी लक्ष्मी बाई के साहस को देख हर भारतवासी जोश से भर उठा। अंग्रेजों को दूर भगाने की भावना पूरे देश के मन में पैदा होने लगी। लक्ष्मी बाई की तलवार का जौहर देख कर सबके मन में आजादी की कीमत समझ में आने लगी थी।

इस पद में बताया गया है कि बचपन में ही रानी लक्ष्मीबाई की अद्भुत प्रतिभा से प्रभावित होकर कानपुर के नाना साहब ने उन्हें अपनी मुंह–बोली बहन बना लिया था। नाना साहब उन्हें युद्ध कला भी सिखाया करते थे। लक्ष्मीबाई को बचपन से ही गुड्डे–गुड़ियों के खेल से कोई प्रेम नहीं था। उन्हें तीर, तलवार, बरछी चलाना सीखने में मजा आता था।

कवयित्री बताती हैं कि लक्ष्मीबाई बचपन से ही मानों वीरता की अवतार थीं। व्यूह–रचना, तलवारबाजी, लड़ाई के अभ्यास के दौरान दुर्ग तोड़ने जैसे युद्ध विषयक खेलों में सिद्ध हो

चुकी थीं। मराठा कुल की बेटी होने के कारण वे मराठाओं की कुल देवी भवानी की भक्त थीं। धार्मिक कार्यो में भी उनकी रूचि थी।

इस पद से पता चलता है कि लक्ष्मीबाई का विवाह झाँसी के राजा श्री गंगाधर राव के साथ हुआ था। लेखिका ने इसे बड़े ही सुंदर ढंग से वीरता से वैभव की सगाई कहा है। लक्ष्मीबाई और गंगाधर की जोड़ी की तुलना शिव–पार्वती और अर्जुन–चित्रा की जोड़ी से करके यह बताने का प्रयास किया है कि दोनों की जोड़ी बहुत उत्तम थी। विवाह के उपरांत झांसी के राजमहल में आई खुशियों का इस बंद में बड़ा सुंदर वर्णन हुआ है।

कठिन शब्द

सिंहासन–राजगद्दी, **भृकुटी**– भौंह, **फिरंगी**–अंग्रेज, **नाना**–असली नाम धोडूपंत, नाना साहेब, **कृपाण**–तलवार, **पुलकित**–प्रसन्न, **वार**–आक्रमण, **दुर्ग**–किला, **आराध्य**–पूजा के योग्य, **वैभव**–धन और ताकत, **विरूदावलि**–स्वागत में बजाया जाने वाला बाजा, **उदित**–उत्पन्न, **मुदित**–खुश, **लावारिस**–जिसका कोई मालिक न हो, **अनुनय–विनय**–प्रार्थना, **विकट**–कठोर, **बज्र–निपात**– भारी दुख आ पड़ना, **रण–चंडी**–क्रोधोन्मत्त दुर्गा, **वीरवर**–श्रेष्ठ वीर, **द्वंद्व**–आमने सामने का युद्ध, **जख्मी**–घायल, **तट**–किनारा, **सम्मुख**–सामने, **सिधार जाना**– मर जाना, **मनुज**–मनुष्य की संतान, **कृतज्ञ**–किसी के उपकार को याद रखना, **अमिट**–जिसे कभी मिटाया या नष्ट न किया जा सके,

इस पद में सुभद्रा कुमारी चौहान ने लक्ष्मीबाई के जीवन के दुर्भाग्य का वर्णन किया है। रानी लक्ष्मी बाई के बहू बन कर आने के बाद झाँसी के राजमहल में चारों तरफ खुशियों की बहार आ गयी थी। लेकिन यह खुशी बहुत दिन तक नहीं रह सकी। पति गंगाधर राव की मौत हो गयी। पति की असमय मृत्यु के बाद रानी अत्यंत दुखी थीं। निःसंतान रह जाने से उनका दुख और भी साल रहा था। पति की मृत्यु के बाद वे बिल्कुल अकेली रह गई थीं। झाँसी को संभालने का दायित्व अब उनके कंधों पर आ गया था।

इस पद में बताया गया है कि झाँसी के राजा की असमय मृत्यु के बाद डलहौजी को जब राजा के निःसंतान होने की खबर मिली तो उसके मन में झाँसी पर कब्जा करने का लालच आ गया। उसने सेना भेज कर झाँसी के किले पर अपना झंडा लगा दिया और झाँसी को लावारिस समझ कर खुद को उसका शासक होने की घोषणा कर दी।

इस पद में अंग्रेजों की मतलबपरस्ती को याद करते हुए बताया गया है कि कोई समय था, ये अंग्रेज लोग व्यापारी बनकर आए थे। पहले ये यहां के सभी बड़े–बड़े राजा–महाराजाओं और रानियों से दया और सहायता की भीख मांगते थे। लेकिन अब तो डलहौजी ने पूरे भारत में अपना राज्य जमाना शुरू कर दिया है। फिर जैसे–जैसे अंग्रेज ताकतवर होते गये, उनका ही राज्य हड़पना शुरू कर दिया। रानियों को दासी बनाने पर आमादा हो गया। लेकिन झाँसी की रानी अन्य राजा–रानियों से विपरीत थीं और उन्होंने विषम परिस्थितियों में भी एक महारानी की तरह झाँसी को संभाला।

इस पद में अंग्रेजों द्वारा एक–एक करके हड़प लिये गये राज्यों का नाम गिनाते हुए बताया गया है कि अंग्रेजों ने किस तरह बातों–बातों में इन राज्यों को छीन कर अपना बना लिया। राज्यों के नाम इस प्रकार है–दिल्ली, लखनऊ, बिठुर, नागपुर, उदयपुर, तंजौर, सतारा,

कर्नाटक, सिंध प्रांत, पंजाब, बंगाल और मद्रास। अर्थात् ऐसा कोई क्षेत्र नहीं बचा था, जहां बेईमान अंग्रेजों ने अपना अधिकार नहीं जमाया हो।

इस पद में निर्लज्ज अंग्रेजों की क्रूरता का वर्णन है। अंग्रेज राज्यों पर कब्जा करके राजाओं तथा नवाबों की हत्या कर देते थे। उनकी रानियां बेजार रोती रहती थीं और ये निर्दयी अंग्रेज उनके गहनों को कलकत्ता के बाजारों में खुले आम बेचते थे और बेगमों की इज्जत से भी खिलवाड़ करते थे। लखनऊ की बेगम हों, या कलकत्ता और नागपुर की रानियां, सबके साथ उनका व्यवहार अत्यंत क्रूर और निर्लज्ज था। रानियों के कपड़े और जेवर तक छीन कर नीलाम कर दिए जाते थे। इन अंग्रेजों के हाथ रानियों की इज्जत बिक जाती थी। लेकिन झाँसी की रानी अपनी प्रतिष्ठा के लिए लड़ने मरने को तैयार थी।

कवयित्री ने इस पद में कहा है कि गरीब और अमीर सब अंग्रेजों के अत्याचार और अपमान से पीड़ित थे। लेकिन वीरों के मन में देश के लिए स्वाभिमान भरा था। युद्ध की तैयारी कर रहे नाना के साथ मिल कर बहन लक्ष्मीबाई रणचण्डी की तरह युद्ध के मैदान में उतर आई। देश में आजादी की बुझी हुई ज्वाला फिर से जल चुकी थी। सबके मन में विद्रोह की चिंगारी धधक रही थी।

झाँसी की रानी कविता के इस पद में यह बताया गया है कि विद्रोह की चिंगारी देश के हर राज्य में सुलग रही थी, चाहे वो झाँसी हो या लखनऊ। दिल्ली, मेरठ, कानपुर तथा पटना के राजाओं ने भी पूरा साथ दिया। साथ ही साथ जबलपुर और कोल्हापुर जैसे बड़े शासकों ने भी सन 1857 की क्रांति में बढ़—चढ़ कर हिस्सा लिया था।

इस पद में हमारे स्वतंत्रता संग्राम में नाना धोडूपंत, तांतिया, चतुर अजीमुल्ला सरनाम, अहमदशाह मौलवी, ठाकुर कुंवर सिंह, तथा सैनिक अभिराम आदि अनेक वीर अंग्रजों से लोहा लेते हुए शहीद हो चुके थे। इनके नाम इतिहास में हमेशा के लिए अमर हो गये। लेकिन ये अंग्रेज इन वीरों की कुर्बानियों को अपराध बताकर फाँसी की सजा सुना देते थे।

इस पद में लेखिका कहती हैं कि अब यह कहानी यहीं छोड़ हम उस युद्ध के मैदान का वर्णन करने जा रहे हैं, जिसमें रानी लक्ष्मी बाई मर्दों के बीच एक बहादुर मर्द की तरह अंग्रजों की सेना का मुकाबला कर रही थीं। लक्ष्मीबाई का लेफ्टिनेंट वॉकर से घमासान युद्ध हुआ। इस युद्ध में वाकर लक्ष्मीबाई के तलवारों के आगे टिक नहीं पाया। लक्ष्मीबाई का रणकौशल देख वह हैरान रह गया।

इस पद में झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई की वीरता का अद्भुत वर्णन है। कवयित्री ने बताया है कि सौ मील घोड़े पर बैठकर अंग्रेजों को खदेड़ती हुईं रानी यमुना तट तक ले आईं और अंग्रेज वहां रानी से पराजित हुए। परंतु यहां पर उनके घोड़े ने वीरगति प्राप्त कर ली अर्थात वो मर गया। किन्तु इसके बाद भी उन्होंने ग्वालियर पर भी अपना अधिकार जमाया, जहां के राजा सिंधिया थे उन्होंने अंग्रेजों के डर से उनसे मित्रता कर ली थी और अपनी राजधानी को छोड़कर वहां से चले गए थे।

सुभद्रा कुमारी चौहान ने इस पद में बताया है कि इसके बाद सेना की कमान जनरल स्मिथ ने संभाल ली थी। उधर रानी लक्ष्मीबाई का साथ देने के लिए उनकी दो सहेलियाँ काना और मंदरा भी मैदान में उतर गई थीं। इन तीनों ने अपनी वीरता और साहस के दम पर कई अंग्रेज सैनिकों की लाशें बिछा दी थी। परंतु तभी पीछे से जनरल ह्यूरोज ने आकर रानी को घेर लिया था फिर भी रानी बच निकली थीं।

रानी ह्यूरोज को परास्त कर निकलने में सफल तो हो गयीं थीं किन्तु कुछ ही दूर आगे बढी थीं कि रास्ते में अचानक उनके सामने एक चौड़ा नाला आ गया। उनका घोड़ा नया था। पार नहीं कर पाया और वहीं अड़ गया। रानी को अकेला पाकर शत्रुओं ने चारों तरफ से आक्रमण कर दिया। रानी ने भीषण युद्ध किया। किन्तु शत्रु के प्रहार से बच न सकीं और वहीं वीर गति को प्राप्त हो गयीं।

इस पद में वीर गति को प्राप्त हो चुकी रानी की दिव्यता का वर्णन करते हुए कवयित्री ने बड़े ही मार्मिक शब्दों में लिखा है कि रानी परलोक सिधार चुकी थीं, परन्तु उनका चेहरा दमक रहा था। उनकी उम्र केवल तेईस साल थी। इतनी छोटी–सी उम्र में वह एक अवतारी–नारी की तरह आकर हम सभी देशवासियों को जीवन का सही मार्ग दिखा गई थीं। क्रांति का बीज सही मायनों में उन्होंने ही देशवासियों के मन में बोया था।

अंतिम बंद में सुभद्रा कुमारी चौहान लिखती हैं कि हे रानी! भारतवासी तुम्हारे इस बलिदान को हमेशा याद रखेंगे। इतिहास भले चुप रह जाय, सच को चाहे सूली पर लटका दिया जाए, अंग्रेज तोप के गोलों से झाँसी को भले ही मिटा दे, लेकिन झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई देशवासियों के मन में हमेशा बसी रहेंगी। उनका बलिदान इतिहास में हमेशा अमर रहेगा। उनका कोई स्मारक बने या ना बने, लेकिन वीरता और साहस का जो उदाहरण उन्होंने पेश किया उसे पीढ़ियां याद करेंगी।

काव्य सौष्ठव–

- कविता इतिवृत्तात्मक शैली में लिखी गयी है। लक्ष्मी बाई के जीवन और युद्ध का इतिहास बड़े ही प्रभावकारी ढंग से किया गया है।
- कविता का ओजस्वी राग वीर रस की सृष्टि करता है।
- कविता वीर भावना की सृष्टि करने में पूरी तरह सफल है।
- अलंकारों और वर्णन वैचित्र्य का प्रयोग नहीं किया गया है। कविता फिर भी सरस और स्मरणीय है।
- 'मिला तेज से तेज, तेज की वह सच्ची अधिकारी थी।' इस पंक्ति में अनुप्रास का बड़ा ही सार्थक और प्रभावी प्रयोग किया गया है।
- कविता में हर अंतरा के अंत में 'खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी' का पुनरावर्तन पाठक के मन में जोश और वीर भावना को धीमा नहीं होने देता है।

विशेष–

यह वीर रस की कविता है जो उस दौर में लिखी गयी जब हिंदी भाषा के साहित्य में छायावाद मुखर था। कविता एक तत्कालीन बुंदेली लोकगीत को आधार बना कर लिखी गयी थी। इस कविता में राष्ट्रीय चेतना का विस्तृत रूप देखने को मिलता है। लोगों में राष्ट्रीय चेतना और स्वाधीनता के लिए उत्साह जगाना इस कविता का लक्ष्य रहा है। 1857 के स्वतंत्रता संग्राम के किसी वीर सेनानी के बलिदानी इतिहास पर लिखी गयी यह सबसे अधिक प्रसिद्ध और पढ़ी जाने वाली कविता है।

बोध प्रश्न–1

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दें।

1. सुभद्रा कुमारी चौहान के जीवन के बारे में क्या जानते हैं?

....

....

....

2. इस कविता को पढ़ने के बाद लक्ष्मीबाई के बारे में क्या जानकारी हुई? संक्षेप में लिखें

....

....

....

3. 'बूढ़े भारत में भी आई फिर से नयी जवानी थी।' कवयित्री ने भारत को बूढ़ा क्यों कहा? संक्षेप में बतायें।

....

....

....

4. ''किंतु कालगति चुपके–चुपके काली घटा घेर लाई'' इस पंक्ति में किस घटना की ओर संकेत है?

....

....

....

5. सुभद्रा कुमारी चौहान ने लक्ष्मीबाई को 'मर्दानी' क्यों कहा है?

....

....

....

6. लक्ष्मीबाई किन हथियारों से युद्ध करती थीं?

....

....

....

7. इस कविता में किन–किन रजवाड़ों का नाम आया है और क्या बताने के लिए आया है?

....

....

....

8. कविता में अंग्रेजों के अत्याचारों के विषय में क्या बताया गया है?

....

....

....

....

9. रानी को वीर गति अंग्रेजों के किस सेनापति के साथ युद्ध करते हुए मिली। रानी के वीर गति प्राप्त होने का कारण क्या था? संक्षेप में लिखें।

....

....

....

....

10. इस कविता में रानी लक्ष्मीबाई को किन–किन अंग्रेज सेनापतियों से लोहा लेना पड़ा? संक्षेप में उनके साथ हुए युद्ध का वर्णन कीजिए।

....

....

....

....

बोध प्रश्न–2

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

i) बचपन में लक्ष्मीबाई को क्या करना अच्छा लगता था?

क) गुड्डा गुड़िया का खेल खेलना ख) खो खो कबडी खेलना
ग) किताबें पढ़ना, घ) सैन्य घेरना, दुर्ग तोड़ना।

ii) लक्ष्मीबाई का घोड़ा क्यों अड़ गया था ?

क) घोड़ा थक गया था ख) भूखा था ग) नया था और नाला चौड़ा था
घ) घोड़े को चोट लग गयी थी।

iii) रानी लक्ष्मीबाई को किसकी गाथाएं याद थी?

क) वीर शिवाजी की ख) राणाप्रताप की ग) गांधी जी की
घ) वीर कुंवर सिंह की

iv) वीर गति के समय लक्ष्मीबाई की उम्र क्या थी ?

क) 30 वर्ष ख) 33 वर्ष ग) 43 वर्ष घ) 23 वर्ष

v) सुभद्रा कुमारी चौहान के पिता का नाम क्या था?

क) रामनाथ सिंह ख) रघुनन्दन सिंह ग) राजनाथ सिंह
घ) हरिनाथ सिंह

vi) लक्ष्मीबाई किसकी अवतार थीं?

क) रणचण्डी की अवतार ख) काली की अवतार ग) भवानी,
घ) वीरता की अवतार

vii) नाना लक्ष्मीबाई को क्या कहकर बुलाते थे?

क) मनु ख) दुर्गा ग) छबीली घ) लक्ष्मी

viii) महाराष्ट्र–कुल–देवी का नाम क्या था?

क) दुर्गा ख) काली ग) भवानी घ) रण चंडी

ix) झाँसी का राज्य हड़पने का विचार किसके मन में आया था?

क) डलहौजी ख) जनरल डायर ग) ह्यूरोज घ) लेफ्टीनेंट वाकर

x) मंदरा कौन थी?

क) लक्ष्मीबाई की सखी ख) बहन ग) देवरानी घ) कोई नहीं

xi) अंग्रेज रानियों से लूटे गहने कहां के बाजारों में बेचते थे ?

क) बरेली के बाजार में ख) दिल्ली के बाजार में ग) लंदन के बाजार में
घ) कलकत्ते के बाजार में

xii) लक्ष्मीबाई को कितनी संतानें थीं?

क) कोई नहीं ख) एक ग) दो घ) तीन

xiii) यह कविता किस संग्रह में संकलित है?

क) त्रिधारा ख) मुकुल ग) बिखरे मोती घ) उन्मादिनी

xiv) सुभद्रा कुमारी चौहान को किस ईसवी में जेल जाना पड़ा था?

क) 1931 में ख) 1921 में ग) 1912 में घ) कभी नहीं

xv) सुभद्रा कुमारी चौहान की मृत्यु कैसे हुई?

क) बीमारी से ख) डूबने से ग) हवाई जहाज दुर्घटना में
घ) कार दुर्घटना में

18.3 उपयोगी पुस्तकें

1. त्रिधारा
2. मुकुल तथा अन्य कविताएं
3. मिला तेज से तेज

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

18.4 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न– 1

1. सुभद्रा कुमारी चौहान का जन्म 1904 में हुआ था। उनके पिता का नाम रामनाथ सिंह था। 1919 में उनका विवाह खंडवा के ठाकुर लक्ष्मण सिंह के साथ हो गया। बाल्य काल में ही उनके भीतर देश प्रेम की भावना पैदा हो गयी थी। 1921 में वे गांधी जी के असहयोग आंदोलन में हिस्सा लेने चली गयी थीं। असहयोग आंदोलन में भाग लेने वाली वे पहली महिला थीं। 1857 के संग्राम में अंग्रेजों से लोहा लेने वाली झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई की रणगाथा को आधार बनाकर उन्होंने एक लम्बी कविता लिखी, जिसके कारण एक राष्ट्रवादी धारा के कवि के रूप में उन्हे खूब प्रसिद्धि मिली। उनकी शैली घटना–वर्णन प्रधान तथा भाषा सरल, ओजपूर्ण और काव्यात्मक है।

2. इस कविता को पढ़ने से यह जानकारी मिलती है कि रानी लक्ष्मी बाई का जन्म मराठा कुल में हुआ था। कानपुर के नाना साहब उनके मुंहबोले भाई थे जो उन्हें छबीली कहते थे। लक्ष्मी बाई अपने पिता की अकेली संतान थीं। बचपन से ही उन्हें बरछी, ढाल, कृपाण और तलवारों के साथ खेलने का शौक था। उनका विवाह झाँसी राज में हुआ था। विवाह के दो वर्ष के बाद ही उनके पति का देहांत हो गया। उन्हें कोई संतान नहीं थी। डलहौजी ने उनका राज्य हड़प लेना चाहा किन्तु रानी ने उससे वीरता पूर्वक युद्ध किया। वे एक कुशल योद्धा और बहादुर महिला थीं। कई युद्धों में अंग्रेजों को पराजित करने के बाद एक बार एक नाले के पास घिर जाने के कारण लड़ते हुए, केवल 23 साल की उम्र में ही वीर गति को प्राप्त हो गयीं।

3. अंग्रेजों का गुलाम होने जाने के कारण भारत वर्ष अपने आप को असहाय महसूस करने लगा था। इसी कारण भारत को बूढ़ा कहा गया है। स्वतंत्रता संग्राम में वीरता पूर्वक अंग्रेजों का मुकाबला शुरू किया, इससे भारत के अन्य हिस्सों मे भी विद्रोह की चेतना जाग्रत हुई। देश में फिर से उमंग का वातावरण हो गया था। इसीलिए उसे नई जवानी का नाम दिया गया है।

4. विवाह के दो वर्ष के अंदर ही लक्ष्मी बाई की मृत्यु हो गयी थी। उन्हें कोई संतान भी नहीं थी। झाँसी राज्य का कोई उत्तराधिकारी नहीं रह गया था। पति की असमय मृत्यु के बाद रानी के जीवन में कोई संतान ना होने के कारण झाँसी पर भी अंग्रेजों का कब्जा हो जाने की आशंका थी। इसे ही कालगति की काली घटना कहा गया है।

5. लक्ष्मीबाई महिला होते हुए भी युद्ध के मैदान में अत्यंत वीरता के साथ मर्दों की तरह साहस, निडरता, और बहादुरी से शत्रुओं से लड़ी थीं। उन्होंने युद्ध के दौरान शत्रुओं की नाक में दम कर दिया था और उनके पराक्रम की तारीफ तो अंग्रेज भी करते थे। उनके इसी अद्‌भुत कौशल तथा शौर्य से प्रभावित होकर लेखिका ने उन्हें 'मर्दानी' कहा है।

6. रानी लक्ष्मीबाई के समय में पैदल, घोड़े और हाथी पर बैठ कर युद्ध किया जाता था। घुड़ सवार वीर लड़ने के लिए ढाल तलवार और बरछी का उपयोग करते थे। रानी लक्ष्मी बाई उस जमाने के सभी हथियारों से युद्ध करना जानती थीं। झाँसी के मैदानों में उन्होनें घोड़े पर बैठ कर तलवार ढाल और बर्छी से युद्ध किया था।

7. इस कविता में लगभग उन सभी राज्यों, रियासतों का नाम शामिल है, जिन पर अंग्रेजों ने कब्जा कर लिया था या करने की कोशिश में लगे थे। दिल्ली, लखनऊ बिठूर,

नागपुर, उदयपुर, तंजौर, सतारा, कर्नाटक, सिंध, पंजाब, बंगाल, मद्रास आदि राज्यों, रियासतों का नाम आया है।

8. कवयित्री ने कविता में अंग्रेजों के अमानवीय अत्याचारों का थोड़े से शब्दों में किन्तु बड़े ही मार्मिक ढंग से वर्णन करते हुए लिखा है कि, अंग्रेज कभी व्यापारी बन कर भारत में आये थे। रजवाड़ों के सामने सहायता के लिए याचना करते थे। वे ही अंग्रेज धीरे–धीरे छल बल से पांव पसारते हुए यहां के रजवाड़ों का राज्य छीनने लगे। ये इतने निर्दय थे कि पहले राज्य पर कब्जा करते थे। फिर राजाओं की हत्या कर देते या जेल में कैद कर लेते और उनकी रानियों के साथ जुर्म जबरदस्ती करते थे। अनुनय विनय कुछ नहीं सुनते थे और उनका सब कुछ लूटकर कलकत्ता के बाजारों में बेच देते थे। यह अपमान रानियों को सहन नहीं होता था, किन्तु अंग्रेज इसमें आनन्द का अनुभव करते थे।

9. कालपी और ग्वालियर में अंग्रजों को पराजित करतें हुए लक्ष्मीबाई आगे बढ़ रही थीं कि अंग्रेजों जनरल स्मिथ अपनी सेना लेकर आ गया। उस समय लक्ष्मी बाई की दो सहेलियां, काना और मंदरा भी युद्ध में रानी का साथ दे रही थीं। इन तीनो नें इतना भीषण युद्ध किया कि स्मिथ भी टिक नहीं सका। लेकिन तभी पीछे से ह्यूरोज अपनी सेना लेकर आ गया। अब रानी पुरी तरह घिर चुकी थी। फिर भी रानी ने जिस किसी तरह मार काट मचा कर ह्यूरोज की सेना से बच कर आगे निकलने में कामयाब हो गयी थीं। लेकिन दुर्भाग्य वश सामने एक नाला पड़ गया जिसमें उनका घोड़ा, जो नया था, पार करने की बजाय वहीं अड़ गया। अब रानी के पास कहीं निकलने का रास्ता न था और अंग्रेजों से अकेले ही युद्ध करते–करते वीर गति को प्राप्त हो गयीं।

10. कविता में जिन तीन अंग्रेज सेनापतियों से लक्ष्मी बाई के भीषण युद्ध का जिक्र है, उनके नाम इस प्रकार हैं–1.वाकर 2. मेजर स्मिथ और 3. ह्यूरोज।

बोध प्रश्न–2

i. घ

ii. ग

iii. क

iv. ध

v. क

vi. घ

vii. ग

viii. ग

ix. क

x. क

xi. घ

xii. क

xiii. क

xiv. ख

xv. घ

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

इकाई 19 काव्य–वाचन एवं विश्लेषण : विप्लव गायन

इकाई की रूप रेखा

19.0 उद्देश्य

19.1 प्रस्तावना

19.2 चयनित कविता का पाठ एवं विश्लेषण

19.3 उपयोगी पुस्तकें

19.4 बोध प्रश्नों के उत्तर

19.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप–

- बालकृष्ण शर्मा नवीन की तीन कविताओं की विस्तृत व्याख्या समझ सकेंगी/सकेंगे।
- बालकृष्ण शर्मा नवीन की कविताओं का मूल स्वर क्या है, इसे पहचान सकेंगी/सकेंगे।
- इन कविताओं के माध्यम से राष्ट्रीयता की भावना को समझ सकेंगी/सकेंगे।
- बालकृष्ण शर्मा नवीन की काव्य–भाषा के तत्वों की पहचान करना सीख सकेंगी/सकेंगे।
- बालकृष्ण शर्मा नवीन की कविताओं में शब्द–योजना और प्रयुक्त शब्दावली से परिचित हो जायेंगी/जायेंगे।
- बालकृष्ण शर्मा नवीन के जीवन और उनकी साहित्यिक–राजनीतिक यात्रा के बारे में संक्षिप्त जानकारी प्राप्त कर सकेंगी/सकेंगे।

19.1 प्रस्तावना

बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' का जन्म 8 दिसम्बर 1897 ई० को मध्य प्रदेष के जिला शाजापुर के समीप हुआ था। उनके पिता का नाम जमुनादास शर्मा था। उनकी पढ़ाई 11 वर्ष की अवस्था में शुरू हुई। मिडिल तक की पढ़ाई गृह जनपद में पूरी करने के बाद उन्हें आगे की पढ़ाई के लिए उज्जैन के माधव कॉलेज में दाखिला दिलाया गया। विद्यार्थी जीवन में ही वे कविता लिखने के साथ–साथ आजादी के आंदोलनों में भी भाग लेने लगे थे। सन 1920 ई. में गांधी जी के सत्याग्रह आन्दोलन के आह्वान पर वे कॉलेज छोड़कर राजनीति में आ गये और 29 अप्रैल, 1960 ई. को अपने मृत्युपर्यन्त बराबर सक्रिय रहे। असहयोग आंदोलन, नमक सत्याग्रह और 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन समेत कई आंदोलनों और सत्याग्रहों में भाग लेने के कारण इन्हें छह बार जेल जाना पड़ा। जिन्दगी के नौ साल नवीन जी ने जेल में बिताये।

कवि होने के अलावा 'नवीन' जी एक अच्छे गद्यकार और कुशल सम्पादक भी थे। 1931 में गणेश शंकर विद्यार्थी जी की मृत्यु के बाद उन्हें 'प्रताप' और 'प्रभा' के सम्पादन का स्वतंत्र दायित्व मिला। 'प्रताप' और 'प्रभा' के लिए उन्होंने 'शिमला–समझौते में निराशा का अवतरण', 'मुसलमान भाइयों की खिदमत में', 'तुम्हारे उपवास की चिन्ता', 'एक ही थैली के चट्टे–बट्टे' आदि शीर्षकों से कई एक अग्रलेख और निबंध लिखे। उनके लेख हमेशा चर्चा में

होते थे। नवीन जी में कविता करने की प्रेरणा पं. माखन लाल चतुर्वेदी और मैथिलीशरण गुप्त के संपर्क में आने के बाद पैदा हुई। 'जीव ईश्वर वार्तालाप' उनकी पहली कविता थी। महावीर प्रसाद द्विवेदी जी की पत्रिका 'सरस्वती' में इसके छपने के बाद से ही उन्हें पहचान मिलनी शुरू हो गयी थी। नवीन जी राष्ट्रवादी कवि थे। उनका जीवन अपनी मातृभूमि को समर्पित था। राष्ट्रप्रेम उनकी कविताओं का मुख्य स्वर है। उन्होंने अपनी सर्वश्रेष्ठ रचनाएं जेल यात्राओं के दौरान रची थीं। 29 अप्रैल 1960 को उनका देहान्त हुआ।

कृतियां–

1. कुमकुम, 2. रश्मिरेखा, 3. अपलक, 4. क्वासि, 5. उर्मिला, 6. विनोबा स्तवन, प्राणार्पण तथा हम विषपायी जन्म के।

पुरस्कार, सम्मान–

1. संसद सदस्य (1952 से 1960 तक)
2. राजभाषा आयोग का सदस्य (1955 से 1960 तक)
3. पद्मभूषण सम्मान(1960)

19.2 चयनित कविता का पाठ एवं विश्लेषण

एक

विप्लव गायन

कवि, कुछ ऐसी तान सुनाओ,
जिससे उथल–पुथल मच जाए,
एक हिलोर इधर से आए,
एक हिलोर उधर से आए,
प्राणों के लाले पड़ जाएँ,
त्राहि–त्राहि रव नभ में छाए,
नाश और सत्यानाशों का –
धुँआधार जग में छा जाए,
बरसे आग, जलद जल जाएँ,
भस्मसात भूधर हो जाएँ,
पाप–पुण्य सद्सत भावों की,
धूल उड़ उठे दायें–बायें,
नभ का वक्षस्थल फट जाए–
तारे टूक–टूक हो जाएँ
कवि कुछ ऐसी तान सुनाओ,
जिससे उथल–पुथल मच जाए।

माता की छाती का अमृत–
मय पय काल–कूट हो जाए,

आँखों का पानी सूखे,
वे शोणित की घूँटें हो जाएँ,
एक ओर कायरता काँपे,
गतानुगति विगलित हो जाए,
अँधे मूढ़ विचारों की वह
अचल शिला विचलित हो जाए,
और दूसरी ओर कंपा देने
वाला गर्जन उठ धाए,
अंतरिक्ष में एक उसी नाशक
तर्जन की ध्वनि मंडराए,
कवि कुछ ऐसी तान सुनाओ,
जिससे उथल–पुथल मच जाए,

नियम और उपनियमों के ये
बंधक टूक–टूक हो जाएँ,
विश्म्भर की पोषक वीणा
के सब तार मूक हो जाएँ
शांति–दंड टूटे उस महा–
रुद्र का सिंहासन थर्राए
उसकी श्वासोच्छ्वास–दाहिका,
विश्व के प्रांगण में गहराए,
नाश! नाश!! हा महानाश!!! की
प्रलयंकारी आँख खुल जाए,
कवि, कुछ ऐसी तान सुनाओ
जिससे उथल–पुथल मच जाए।

सावधान! मेरी वीणा में,
चिनगारियाँ आन बैठी हैं,
टूटी हैं मिजराबें, अंगुलियाँ
दोनों मेरी ऐंठी हैं।
कंठ रुका है महानाश का
मारक गीत रुद्ध होता है,
आग लगेगी क्षण में, हृत्तल
में अब क्षुब्ध युद्ध होता है,

झाड़ और झंखाड़ दग्ध हैं –
इस ज्वलंत गायन के स्वर से
रुद्ध गीत की क्रुद्ध तान है
निकली मेरे अंतरतर से!

कण–कण में हैं व्याप्त वही स्वर
रोम–रोम गाता है वह ध्वनि,

वही तान गाती रहती है,
कालकूट फणि की चिंतामणि,

जीवन–ज्योति लुप्त है – आहा!
सुप्त है संरक्षण की घड़ियाँ,
लटक रही हैं प्रतिपल में इस
नासक संभक्षण की लड़ियाँ।
चकनाचूर करो जग को, गूँजे
ब्रह्मांड नाश के स्वर से,
रुद्ध गीत की क्रुद्ध तान है
निकली मेरे अंतरतर से!

दिल को मसल–मसल मैं मेंहदी
रचता आया हूँ यह देखो,
एक–एक अंगुल परिचालन
में नाशक तांडव को देखो!
विश्वमूर्ति! हट जाओ!! मेरा
भीम प्रहार सहे न सहेगा,
टुकड़े–टुकड़े हो जाओगी,
नाशमात्र अवशेष रहेगा,
आज देख आया हूँ – जीवन
के सब राज समझ आया हूँ,
भ्रू–विलास में महानाश के
पोषक सूत्र परख आया हूँ,
जीवन गीत भुला दो – कंठ,
मिला दो मृत्यु गीत के स्वर से
रुद्ध गीत की क्रुद्ध तान है,
निकली मेरे अंतरतर से!
"जीवर में जंजीर पड़ी खन–खन
करती है मोहक स्वर से
बरसों की साथिन हूँ,
तोड़ोगे क्या तुम अपने इस कर से?,
अंदर आग छिपी है,
इसे भड़क उठने दो एक बार अब,
ज्वालामुखी शांत है,
इसे कड़क उठने दो एक बार अब'
दहल जाय दिल, पैर लड़खड़ाएँ,
कंप जाय कलेजा उनका,
सिर चक्कर खाने लग जाए,
टूटे बंधन शासन–गुण का,
नाश स्वयं कह उठे कड़ककर उस गंभीर कर्कश–से स्वर से
शुद्ध गीत की क्रुद्ध तान निकली है मेरे अंतरतर से!"

संदर्भ और प्रसंग–

बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' की 'विप्लव–गायन' शीर्षक यह कविता उनकी प्रसिद्ध कविताओं में से एक है। यह नंदकिशोर नवल द्वारा संपादित पुस्तक 'स्वतंत्रता पुकारती' संग्रह में संकलित है। वैसे तो कविता कवि यानी स्वयं को ही संबोधित करके लिखी गयी है, लेकिन यह एक शिल्प है। वस्तुतः कविता पूरे समाज को संबोधित है। उथल पुथल मचा देने वाली कविता सुनाने के बहाने कवि जनता को सम्बोधित करते हुए कहता है कि समाज में अब एक ऐसी क्रांति करने की जरूरत है कि पूरी तरह शासन व्यवस्था छिन्न भिन्न हो जाये। संसार में महा प्रलय की स्थिति बन जाय। यह समाज अब सुधार के काबिल नहीं है। इसे पूरी तरह नष्ट करके नये सिरे से बनाने की जरूरत है।

कठिन शब्द

त्राहि–त्राहि–बचाओ–बचाओ की पुकार, **रव**–शोर। **नभ**–आकाश, **जग**–संसार, **जलद**–बादल **भस्मसात**– जलकर राख होना, **भूधर**– पहाड, **सद्सत**–अच्छा, **माता की छाती का अमृत**– मां का दूध, **मयपय**–नशीला पेय, **विष**–जहर, **शोणित**–खून, **गतानुगति**–पीछे–पीछे चलना, **तर्जन**–भयानक शोर, **विश्वम्भर**–इन्द्र, **उथल–पुथल**–भयानक परिवर्तन, **तान**– स्वर, **टूट–टूक**–टुकड़े–टुकड़े, **नभ**–आकाश, **जग**–संसार, **पय**– दूध, **काल–कूट**–जहर, **मूढ़**–मूर्ख, **अचल**– निश्चल, स्थिर, **शिला**– विशाल पत्थर, **तर्जन**– तड़कना, **मिजराबें**–वीणा का तार बजाने के लिए अंगुलियों में पहना जाने वाला छल्ला, **रूद्ध**–रुका हुआ, **हृत्तल**– हृदय के अंदर, **क्षुब्ध**– नाराज, **ज्वलंत**– जलता हुआ, **चिंतामणि**–सर्प को अपने मणि की चिंता होती है, **लुप्त**–गायब, **प्रतिपल**–हर समय, **परिचालन**– चलाना, **ताण्डव**– प्रलय के समय भगवान शंकर का नाच, **भीम प्रहार**– बहुत कठोर प्रहार।

व्याख्या–

यह कविता संबोधन की शैली में लिखी गयी है। कवि किसी अनाम कवि को संबोधित करता है,जोकि वस्तुतः वह स्वयं है। कवि अपने आप से कहता है कि हे कवि, तुम एक कविता लिखो और उसे ऐसी तान में सुनाओं कि उसे सुनकर चारों ओर क्रँाति की आँधी आ जाए। सबकुछ उलट–पलट जाए। क्रँाति की हिलोरें कभी इधर से तो कभी उधर से आने लगें। लोग प्राण बचाने के लिए इधर–उधर भागने लगें प्राण बचाना मुश्किल हो जाय। धरती से आकाश तक हाहाकार मच जाय। दृश्य इतना भयंकर हो जाय कि किसी को कुछ दिखाई ही न पड़े। सब तरफ अँधेरा छा जाय। आसमान से इतनी आग बरसे कि बादल भी भस्म हो जाय और पहाड़ तक जलकर राख हो जायेंगें। पाप पुण्य, अच्छा बुरा कुछ भी समझ में न आये। सारे भाव विचार धूल बन कर आसमान में इधर–उधर उड़ने लगें। आसमान फट कर गिर जाय, तारे टुकड़े टुकड़े होकर छितरा जाएँ। हे कवि तुम कुछ ऐसी तान छेड़ों कि जो जहाँ है, नष्ट हो जाय। इन विवरणों से स्पष्ट है कि कवि समाज में क्रांतिकारी उथल–पुथल मचा देना चाहता है।

इस बंद में भी पहले बंद की ही बात कही गयी है। मगर दूसरे ढंग से। कवि कहता है कि हे! तुम ऐसी तान छेड़ो कि जिसे सुनकर चारों ओर सब कुछ उलट–पुलट हो जाए। यहाँ तक कि माता का अमृतमय दूध जहर हो जाए। आँखों का पानी सूखकर खून के घूँट में बदल जाए। कविता की तान ऐसी विकराल होनी चाहिए कि कायरता काँप उठे, सभी प्रकार

की रूढ़ियाँ समाप्त हो जाएँ। अंधविश्वास और मूर्खतापूर्ण विचारों की अटल और स्थिर विशाल शिलाएँ हिल उठें। गर्जना इतनी भयंकर हो कि लोगों को भय के मारे कँपकँपी होने लगे। अंतरिक्ष में भी सर्वनाश करने वाली तर्जन की ध्वनि मँडराने लगे। स्पष्ट है कि इस बंद में रूढ़ियों और अंधविश्वासों के नष्ट होने की कल्पना की गयी है। कवि सम्भवतः कहना चाहता है कि विप्लव के बाद जो नया समाज बनेगा उसमें रूढ़ियाँ न होंगी, कायरता खत्म हो जायेगी, अंधविश्वास समाप्त हो जायेंगे और एक नये संसार का जन्म होगा।

इस बंद में कवि ज्ञान और नियम के नाम पर थोपी गयी विधि–निषेधों की धज्जियाँ उड़ा देने की बात कहता है। वह चाहता है कि छोटे बड़े सभी प्रकार के सामाजिक बंधन, एक–एक करके खण्ड–खण्ड हो जाएँ। संसार का भरण–पोषण करने वाले ईश्वर की वीणा के तार मौन हो जाएँ, अर्थात सृष्टि के सभी काम बाधित हो जाएँ, महाशिव का शान्ति दण्ड टूटकर बिखर जाए और उनका सिंहासन काँप उठे। उनकी श्वासों और उच्छवासों की जलन से संसार के प्रांगण (आँगन) में विध्वंस मच जाये। चारों और नाश–नाश और महानाश की भयंकर ध्वनि गूँज उठे। ऐसा प्रलयंकर शोर शिव का प्रलयंकारी नेत्र खुल जाये और चारों ओर महा विनाश का भयावह दृश्य उपस्थित हो जाय। इस बंद में भी इन विनाशकारी दृश्यों की कल्पना के माध्यम से क्रांति का ही आह्वान किया है।

चौथे बंद का स्वर ऊपर के तीनों बंद से अलग है। इसमें कवि लोगों को सावधान करते हुए कहता है कि मेरी काव्य–वीणा में से चिनगारियाँ निकल रही हैं। अर्थात् अब इसमें से मधुर संगीत नहीं फूटता। मिजराबें, टूट गयी हैं, तारों को टंकार देने वाली अंगुलियाँ टेढ़ी पड़ गयी हैं। कण्ठ अवरूद्ध हो गया है, हृदय तल में भयानक विक्षोभ पैदा हो गया है। अवरूद्ध कण्ठ से महानाश का स्वर फूटने वाला है। विनाश का गीत कण्ठ में रूका हुआ है। ऐसा प्रतीत होता है कि अगले ही क्षण सब कुछ भस्म जो जायेगा। हृदय में युद्ध चल रहा है। गीतों में इतनी ज्वाला भर उठी है कि इसके स्वर से आस पास का पूरा वातावरण ही झुलस गया है। क्रोध की रूकी हुई क्रुद्ध तान भीतर से फूट कर निकल रही है। इस बंद में इन प्रतीकों के माध्यम से कवि समाज में व्याप्त गुस्से और असंतोष के ज्वालामुखी बनकर फूटने की बात कर रहा है। उसे लगता है कि क्रांति का समय आ गया है। अब किसी के रोके यह रूकने वाला नहीं है।

इस काव्यांश में कवि स्पष्ट करता है कि कण–कण में वही कठोर स्वर व्यक्त होगा, रोम–रोम से उसी ज्वलंत गीत की ध्वनि गूँजेगी, विशैले नाग के फण से जिस प्रकार विनाशक चिंगारियाँ फूटती हैं उसी प्रकार का महानाश धरती पर जाग उठेगा। जैसे शेषनाग अपनी मणि की चिंता करता है वैसे ही प्रत्येक मनुष्य नव–निर्माण के चिंतन में अग्रसर होगा। कवि विश्वासपूर्वक कहता है कि मैं उस महानाश के पोषक तत्त्व को स्वयं देख आया हूँ, जो आँख के इशारे से भी व्याप्त हो उठेगा। वास्तव में कवि जड़ता के विरुद्ध देशवासियों में गतिशीलता व उत्साह का संचार करना चाहता है क्योंकि विनाश में ही निर्माण और सृजन के बीज होते हैं इसलिए कवि जीर्ण–शीर्ण व रूढ़िवादी विचारों व रिवाजों को तिलांजलि देकर नवनिर्माण लाने का आह्वान करता है।

कवि ने महाविनाश के लिए खुद को तैयार कर लिया है। कहता है कि मैं अपने हृदय के कोमल भावों को मेंहदी की तरह मसल कर अपने दोनों हाथ रंगा कर आया हूँ। मेरी उँगलियों के संकेत मात्र से कैसे ताण्डव मचता है, उसे देखो। कवि कहता है, हे विश्वमूर्ति! तुम सामने से हट जाओ, मेरा प्रहार तुम सहन नहीं कर पाओगी। मेरा प्रहार तुम्हारे टुकड़े–टुकड़े कर देगा और तुम्हारा नामोनिशान मिट जायेगा। विश्वमूर्ति से आशय शायद

ब्रिटेन की रानी विक्टोरिया से है। कवि कहता है कि मुझे जीवन के सभी राज समझ में आ गये हैं। यह जो भोग विलास है, विनाश का यही कारण बनेगा। इसलिए जीवन का गीत गाना छोड़ अब मृत्यु का गीत गाने की आवश्यकता है। इस बंद में अन्याय तथा अत्याचार के विरुद्ध कवि का विद्रोही मनोभाव स्पष्ट हुआ है।

कवि कहता है कि बरसों से पैरो में पड़ी जंजीरे पूछ रही हैं कि क्या तुम इसे अपने हाथों से तोड़ने का साहस करोगे? मेरे अंदर विद्रोह की आग सुलग रही है, वह एक बार भड़क उठना चाहती है। शांत पड़ी भीतर की ज्वालामुखी अब फूटना चाहती है। मैं चाहता हूँ एक बार विस्फोट इतना भयंकर हो कि अंग्रेजों का दिल काँप जाय और पैर लड़खड़ाने लगें। सिर चक्कर खा कर घूम जाय और शासन सत्ता के सभी बँधन छिन्न–भिन्न हो जाएँ। विनाश स्वयं अपने कड़क आवाज में एक बार कह उठे कि मेरे दिल में अवरूद्ध क्रोध की तान विप्लव का गीत बन कर बजना चाहती है।

काव्य सौष्ठव–

- कविता में शब्दयुग्मों, जैसे–उथल –पुथल, कण–कण आदि का प्रयोग किया गया है जिससे कविता में प्रवाह आ गया है।
- विराम चिन्हों, के प्रयोग से भी अर्थ पैदा करने की कोशिश हुई है। कविता में अंत्यानुप्रास का प्रयोग हुआ है।
- प्रचलित मुहावरों का बहुत सुंदर प्रयोग हुआ है। आँखो का पानी सूख जाना, प्राणों के लाले पड़ जाना और छाती फटना जैसे मुहावरों से कविता का अर्थ सौंदर्य बढ़ गया है।
- रौद्र और भयानक रस की सृष्टि के लिए प्रकृति के विभिन्न उपादानों को बड़ा सुंदर उपयोग हुआ है। इससे कवि के भावों को समझने में सुविधा होती है।
- भाषा में संस्कृतनिष्ठ और सरल दोनों प्रकार के शब्दों का प्रयोग हुआ है।
- इस कविता में वीर रस, रौद्र रस और भयानक रस, का एक साथ प्रयोग हुआ है।
- कविता में जगह जगह प्रकृति का मानवीकरण हुआ है। 'नभ का वक्षस्थल' मानवीकरण का सुंदर उदाहरण है।
- प्रलयंकारी दृश्य का बडा सुंदर चित्रण हुआ है।

विशेष– इसका मूल स्वर क्रांतिकारी है। प्रकृति में प्रलयंकारी परिवर्तन की कल्पना के बहाने से कवि देश की दुरवस्था के विरूद्ध अपने क्षोभ को व्यक्त करता है और कहना चाहता है कि मौजूदा व्यवस्था का समूल नाश करके नयी व्यवस्था का निर्माण आवश्यक है। कवि जैसे समाज का निर्माण करना चाहता है, उसका संकेत भी कविता में दिया गया है। कवि एक ऐसे समाज का निर्माण चाहता है जहा कायरता, गतानुगतिकता, अँधता और मूढ विचार नहीं होंगे। अर्थात कवि एक प्रबुद्ध और प्रगतिशील समाज बनाना चाहता है।

दो

हिन्दुस्तान हमारा है

कोटि–कोटि कंठों से निकली आज यही स्वरधारा है
भारतवर्ष हमारा है यह, हिन्दुस्तान हमारा है।

जिस दिन सबसे पहले जागे, नव–सृजन के स्वप्न घने
जिस दिन देश–काल के दो–दो, विस्तृत विमल वितान तने
जिस दिन नभ में तारे छिटके जिस दिन सूरज–चांद बने
तब से है यह देश हमारा, यह अभिमान हमारा है।

जबकि घटाओं ने सीखा था, सबसे पहले घिर आना
पहले पहल हवाओं ने जब, सीखा था कुछ हहराना
जबकि जलधि सब सीख रहे थे, सबसे पहले लहराना
उसी अनादि आदि–क्षण से, यह जन्म–स्थान हमारा है।

जिस क्षण से जड़ रजकण, गतिमय होकर जंगम कहलाए
जब विहँसी प्रथमा ऊषा वह, जबकि कमल–दल मुस्काए
जब मिट्टी में चेतन चमका, प्राणों के झोंके आए
है तब से यह देश हमारा, यह मन–प्राण हमारा है।
कोटि–कोटि कंठों से निकली आज यही स्वर–धारा है
भारतवर्ष हमारा है यह, हिन्दुस्तान हमारा है।

संदर्भ प्रसंग–

प्रस्तुत 'हिन्दुस्तान हमारा है' शीर्षक कविता राष्ट्रीय धारा के प्रमुख कवियों में से एक, श्री बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' की एक देश प्रेम से भरी रचना है। इस कविता में कवि ने भारतीय इतिहास को अत्यंत प्राचीन बताने का प्रयास किया है। यह देश उतना प्राचीन है जितना कि सूरज चाँद हवा और समुद्र। कवि कहना चाहता है कि भारत देश की सेवा के लिए ही प्रकृति ने सूरज, चाँद, हवा, पानी, और समुद्र आदि प्राकृतिक निधियों को निर्मित किया था। ऐसा कहकर कवि समूची सृष्टि में अपने देश को सबसे प्राचीन और महान बताना चाहता है।

कठिन शब्द

कोटि–कोटि–करोड़ों, **स्वरधारा**–जनता की आवाज, **नव–सृजन**–सृष्टि निर्माण, **विस्तृत**– फैला हुआ, **विमल**–स्वच्छ, **वितान**– आकाश, **नभ**–आकाश, **जलधि**–समुद्र, **अनादि**– जो अजन्मा हो, **प्रथमा**– पहली, **ऊषा**– सवेरा,

व्याख्या–

इस कविता में कहा गया है कि हमारे देश के करोड़ों भारतवासी आज खुले कंठ से एक स्वर में गा रहे हैं कि यह भारत देश हमारा है, इस पर किसी विदेशी का कोई अधिकार नहीं है। जब से ईश्वर ने सृष्टि की सर्जना का स्वप्न देखा, यह देश तब से है। यह देश तब से है जब पहली बार सृष्टि के मूल भूत तत्वों–आकाश और काल की ईश्वरीय कल्पना साकार हुई। सृष्टि की कल्पना का जब जन्म हुआ तभी हमारे देश का भी जन्म हुआ था। सूरज और चाँद और तारों के जन्म के साथ ही हमारे देश का भी जन्म हुआ था। अर्थात यह सृष्टि के आदिकाल से ही विद्यमान दुनिया का सबसे प्राचीन देश है।

दूसरे बंद में भी देश की प्राचीनता का वर्णन किया गया है। इस बंद में कवि कहता है कि हमारा देश तब से है जब सृष्टि बनने की आरम्भिक अवस्था में थी, हवाएँ अभी डोलना सीख

रही थीं, बादल अभी घिरना सीख रहे थे और समुद्र हिलकोरें लेना सीख रहा था, अर्थात सृष्टि का अभी शैशव काल था।

तीसरे बंद में कवि कहता है कि हमारा देश तब से अस्तित्व में है, जब पृथ्वी पर जीवों और वनस्पतियों का विकास धीरे धीरे आरम्भ हुआ था। सूरज की रोशनी पहली बार पृथ्वी पर पड़ी थी और कमल पहली बार खिल रहे थे। मिट्टी में वनस्पतियों का उगना जब शुरू हुआ और हवा के झोंके से वातावरण में प्राण का संचार हुआ, प्राणों से प्यारा हमारा देश भी उसी समय अस्तित्व में आ गया था।

काव्य सौष्ठव–

- इस कविता का ध्वनि माधुर्य बहुत आकर्षक है।
- इसकी गेयता में प्रवाह है, जिससे जल्दी कण्ठस्थ करना आसान हो जाता है

विशेष–देश को सूरज और चाँद जितना प्राचीन सिद्ध करके कवि हमें अपने देश की संस्कृति और सभ्यता के सर्व श्रेष्ठ और प्राचीन होने का बोध कराता है। इससे हमारे मन में देश के प्रति गर्व का भाव पैदा होता है।

तीन

ओ मजदूर किसान उठो

उठो, उठो ओ नंगों भूखों
ओ मजदूर किसान, उठो,
इस गतिमय मानव–समूह के
ओ प्रचंड अभिमान, उठो।

आज मुक्ति के अरमानों ने
मिलकर यों ललकारा है
ओ सब सोनेवालो, जागो,
गूँज रहा नक्कारा है!
कैसी रात? कहाँ के सपने
यह नव प्रभात पधारा है!
ऐसे हँसते–से प्रभात का
तुम करने सम्मान, उठो,
उठो, उठो ओ नंगों भूखों,
ओ मजदूर किसान उठो।

ले प्राणों के फूल करों में,
हिय में अमित उमंग भरे,
कँधों पर ले विजय–पताका,
नयनों में रण–रंग भरे,
नवल प्रभात के स्वागत को तुम
चलो वीर निश्शंक, अरे

क्या भय? क्या डर? आज झिझक क्या?
ओ मानस संतान उठो।
उठो, उठो ओ नंगों भूखों,
ओ मजदूर किसान उठो।

सदियों के आदर्श तुम्हारे
मूर्त रूप धर आये हैं
नव समाज के नवल सृजन का
नया सदेशा लाये हैं
दिशि–दिशि में समता–स्थापन के
ये अभिनव स्वर छाये हैं
महाक्रांति के नव विधान हित
तुम करने बलिदान उठो
उठो, उठो ओ नंगो भूखो,
ओ मजदूर किसान, उठो।

अब न आ सके रात भयंकर
ऐसा कुछ गति–चक्र चले
फिर न अँधेरा छाये जग में
चाल न कोई वक्र चले
चमके स्वतंत्रता का सूरज,
परवशता का अभ्र टले
शोषण के शासन की इति हो,
तुम ऐसा प्रण ठान, उठो,
उठो, उठो ओ नंगो भूखो
ओ मजदूर किसान, उठो।

सभी ओर तव भुज–बल–अंकित,
पृथिवी देखो, हल देखो,
निखिल विश्व के यंत्र–तंत्र में
तुम अपना कौशल देखो
भू–मंडल के सिरजन में तुम
अपनी चहल–पहल देखो
ज्योति जगाते, भीति भगाते,
ओ तुम शक्ति–निधान, उठो
उठो, उठो ओ नंगो भूखो,
ओ मजदूर किसान, उठो।

तुमने पीकर गरल, जगत को
मधुरामृत का दान दिया
शीतल हुआ जगत, जब तुमने
प्रलय–अग्नि का पान किया!

मरण–वरण कर तुमने सबको
नव जीवन, नव प्राण दिया
बहुत पिया विष, अमृत पियो अब,
त्यागी वीर महान उठो
उठो, उठो ओ नंगो भूखो,
ओ मजदूर किसान, उठो।

सुलगा दो निज अंतर्जाला,
विकट लपट लंबी धधके,
होवे भस्म दासता, शोषण,
ऐसी यह होली भभके!
हो जाओ तुम मुक्त, कि विहँसें
ये सब तारागण नभ के
दुर्निवार तुम, सदा मुक्त, तुम,
करो विजय के गान, उठो
उठो, उठो ओ नंगो भूखो,
ओ मजदूर किसान, उठो।

किसका साहस है कि रख सके
तुमको यों चिर बंधन में?
स्वयं मुक्ति ही नाच रही है
सदा तुम्हारे स्पंदन में!
तुममें विप्लव अंतर्हित है,
जैसे ज्वाला चंदन में
टेर रहा है तुम्हें विश्व यह
ओ जग के बलवान, उठो
उठो, उठो ओ नंगो भूखो,
ओ मजदूर किसान, उठो।

संदर्भ और प्रसंग–

बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' द्वारा रचित यह कविता नंदकिशोर नवल द्वारा सम्पादित पुस्तक 'स्वतंत्रता पुकारती' में संकलित है। मजूदरों किसानों को सम्बोधित कर के लिखी गयी इस कविता में कवि ने देश को जागरण का संदेश दिया है। यह कविता उस समय लिखी गयी थी, जब अंगेजों का शासन था आैर देश को आजाद कराने के लिए आंदोलन चल रहे थे। जनता में जागृति पैदा करने के लिए राष्ट्रीय भावना और अपनी सभ्यता संस्कृति के गौरव बोध से ओत–प्रोत कवितायें लिखी जा रही थीं। इस कविता में कवि देश के मजदूर किसानों में आजादी की भावना और जोश भरने के लिए कहता है कि देश से गुलामी का बोझ जल्द ही खत्म होगा और नये समाज का निर्माण होगा। तुम्हें इसके स्वागत के लिए तैयार हो जाना चाहिए। कवि मजदूरों किसानों को कभी भारत के गौरवशाली अतीत की याद दिलाता है तो कभी उसकी कर्मठता का। कविता के हर बंद में तरह–तरह से मजदूरों किसानों को आजादी के आंदोलन में उतर जाने के लिए समझाया गया है।

कठिन शब्द

गतिमय–हमेशा प्रगति करने वाला, **प्रचण्ड**– बहुत प्रभावशाली, **नक्कारा**– नगाड़ा, **नव प्रात**– नया सवेरा, **हिय**–हृदय, **अमित**– बहुत अधिक, **रण–रंग**– युद्ध में जाने का संकल्प, **नवल**– नया, **निश्शंक**– निडर, **दिशि–दिशि**– हर ओर, **अभिनव**–नया, **नव विधान**– नया संविधान, **परवशता**– पराधीनता, **अभ्र**– बादल, **इति**– अंत, **निखिल**–सम्पूर्ण, **गरल**–विष, **अंतर्जाला**– भीतर की आग, **दुर्निवार**– जिसे टाला न जा सके, **स्पंदन**–सांस, **अंतर्हित**– भीतर मौजूद।

व्याख्या–

देश के गरीब किसानों मजदूरों को ललकारते हुए कवि कहता है कि हे नंगे भूखे लोगों, यह मानव समूह तुम्हारे ही श्रम से आगे बढ़ा है, मानव जाति तुम्हारे ही बल पर अभिमान करता है। तुम उठो। तुम उठो, और देखो कि देश में आजाद होने की इच्छा जाग उठी है, चारों ओर जन जागरण का आंदोलन छिड़ चुका है, स्त्री पुरूष सभी में आजादी के लिए आगे बढ़ने का उत्साह पैदा हो चुका है। गुलामी की रात का अंधेरा अब छंटने वाला है आजादी की सुबह होने वाली है अतः आजादी के प्रभात का हंस कर स्वागत करो।

हे मजदूर किसानो! जैसे बीर रण भूमि में जाने के लिए पूरे तन मन से तैयार होते हैं उसी तरह तुम भी जान हथेली पर लेकर, पूरे उत्साह और उमंग के साथ कंधो पर विजय की पताका उठाकर तैयार हो जाओं। आजादी का नया प्रभात होने वाला है। उठो और निडर भावन से उसके स्वागत के लिए तैयार हो जाओ।

इस बंद में कवि किसानों मजदूरों को भारतीय आदर्शों की याद दिलाते हुए कहता है कि सदियों पुराने आदर्श और सिद्धांत तुम्हारे लिए नया संदेश लेकर आये हैं, यह नया संदेश नये भारत के निर्माण का है। चारों दिशाओं में बस एक ही स्वर गूंज रहा है– हमें समानता पर आधारित समाज का निर्माण करना है। अंत में कवि किसानों और मजदूरों से कहता है, महाक्रांति और संविधान की रचना के लिए तुम्हारे बलिदान की आवश्यकता है। अतः उठो।

नव जागरण के नये उमंग से भरा कवि मजदूरों किसानों को संबोधित करते हुए इस बंद में कहता है कि कुछ ऐसा करो कि आजादी जो हमें मिलने वाली है, वह सदैव बनी रहे। देश में कहीं फिर से गुलामी का अंधेरा न छा जाये। कुछ ऐसा करो कि स्वतंत्रता का सूरज चमकता रहे। गुलामी के बादल छंट जायें, शोषण पर आधारित यह शासन सदा के लिए समाप्त हो जाए।

इस पद में कवि मजदूरों किसानों के परिश्रम की प्रशंसा करते हुए कहता है कि यह धरती तुम्हारे ही परिश्रम से बनी है। ये तरह–तरह के यंत्र, खेतों की फसलें, देश दुनिया की ये चहल पहल तुम्हारे ही श्रम कौशल का परिणाम हैं। तुम्हारे श्रम से ही दुनिया में प्रगति का प्रकाश फैला है, तुमने ही सबको जीने लायक निर्भीक जीवन दिया है। अतः हे शक्ति–निधान! तुम उठो और देश की आजादी के आन्दोलन में शामिल हो जाओ।

इस बंद में भी मजदूरों किसानों के त्याग और बलिदान की प्रशंसा की गयी है। कवि कहता है कि तुम्हारे कठिन कठोर परिश्रम से ही यह संसार सुखों का भोग कर रहा है। प्रलय काल में जब सब कुछ नष्ट हो चुका था, तो विनाश रूपी अग्नि को अपने परिश्रम रूपी जल से ठंढा करके तुमने ही संसार में नये जीवन का संचार किया। अर्थात यह समूची सृष्टि तुम्हारे

ही परिश्रम से बनी है। अब तक तुमने बहुत कष्ट उठाये हैं, लेकिन अब तुम्हारे सुख भोगने के दिन नजदीक आ गये हैं, अर्थात आगामी कल अब तुम्हारा होगा। इसलिए उठो और जाग जाओ।

कवि इस बंद मे मजदूरों किसानों से अंग्रेजी राज की दासता और शोषण को मिटा देने के लिए क्रांति की ज्वाला भड़का देने का आह्वान करता है। कहता है कि हे मजदूरों किसानों! तुम्हारे भीतर सदियों से असंतोष की ज्वाला सोई पड़ी है। उस ज्वाला को धधकाने का समय आ गया है। गुलामी और दासता को उसी तरह भस्म कर दो जैसे होलिका में सबकुछ भस्म हो जाता है। अब तुम मुक्ति के संग्राम के लिए तैयार हो जाओ। तुम्हारी मुक्ति में ही संसार की मुक्ति शामिल है। तुम्हारी मुक्ति को अब कोई टाल नहीं सकता। अतः हे मजदूरों, किसानों उठो और विजय के गीत गाओ।

अंतिम बंद में कवि कहता है कि हे मजदूरों, किसानों! तुमको गुलाम बनाकर रख पाना संसार में किसी के लिए संभव नहीं है। अब तो स्वयं मुक्ति खुद तुम्हारा स्वागत करने के लिए तुम्हारे दरवाजे आ कर नृत्य कर रही है। जैसे चंदन की शीतल लकड़ी में आग की ज्वाला छुपी होती है, उसी तरह तुम्हारे भीतर भी क्रांति की आग जल रही है। यह पूरा संसार तुम्हें आवाज दे रहा है। अतः हे बलवान मजदूरों, किसानों उठो और आगे बढ़ो।

काव्य सौष्ठव–

- कविता की भाषा परिष्कृत और परिमार्जित है।
- कई जगह रूपक अलंकार का बड़ा सुंदर प्रयोग हुआ है
- कविता में वीर रस का आनन्द है।
- सामासिक पद बंधों से कविता की भाषा में गंभीर काव्यात्मकता आ गयी है।
- उद्‌बोधन का काव्य शिल्प मजदूरों किसानों में आत्म गौरव और जागरूकता की चेतना पैदा करने में सक्षम है।

विशेष–मजदूरों किसानों पर अलग से केन्द्रित होने के कारण अपने समय की अन्य कविताओं की तुलना में यह कविता अलग ढंग से पाठकों पर प्रभाव डालती है। राष्ट्रीयता की चेतना के साथ इसमें मजदूर किसान चेतना का स्वर भी शामिल है। कविता में रोमेंटिसिज्म और यथार्थ दोनों है। इस कविता को पढ़ कर मजदूरों, किसानों के प्रति मन में सहानुभूति पैदा होती है।

बोध प्रश्न–1

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दें।

1. कवि कैसी तान सुनाना चाहता है?

....

....

....

....

2. कवि विप्लव गान क्यों गाना चाहता है?

....

....

....

....

3. कविता में कालकूट फणि की चिंतामणि शब्दों का अर्थ क्या है?

....

....

....

....

4. उथल पुथल मच जाने से कवि का क्या आशय है?

....

....

....

....

5. बालकृष्ण शर्मा नवीन के जीवन के बारे में क्या जानते हैं?

....

....

....

....

6. 'हिन्दुस्तान हमारा है' कविता का सारांश बताइए।

....

....

....

....

7. 'नव सृजन के स्वप्न घने' से कवि का क्या आशय है? वह किस स्वप्न की बात कर रहा है?

....

....

....

....

8. इस कविता में सृष्टि के विकास क्रम को बड़ी कलात्मकता से दर्शाया गया है। समझाएं।

....

....

....

....

9. 'ओ मजदूर किसान उठो' कविता में मजदूरों किसानों को भूखा नंगा कहने के अलावा मानव समूह का प्रचंड अभिमान भी कहा गया है। क्यों?

....

....

....

....

10. नवीन जी अपने जीवन काल में आजादी की लड़ाई में कितनी बार जेल गये थे।

....

....

....

....

बोध प्रश्न–2

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

i. कवि अपनी कविता के माध्यम से आह्वान कर रहा है

क) स्वतंत्रता सेनानियों से ख) देशवासियों से ग) नवयुवकों से घ) सेना से

ii. 'उथल–पुथल मचने' से कवि का क्या अभिप्राय है?

क) विद्रोह का होना ख) क्रांति का होना ग) आँधी का आना
घ) समाज में परिवर्तन होना

iii. कवि देशवासियों को कैसी तान सुनाना चाहता है?

क) प्राचीन परंपराओं को समाप्त करने की तान ख) परिवर्तन एवं नवनिर्माण की तान
ग) बदलाव की तान घ) उपर्युक्त सभी

iv. इस कविता के रचयिता कौन हैं?

क) रामधारी सिंह दिनकर ख) बालकृष्ण षर्मा 'नवीन'
ग) सुमित्रानंदन पंत घ) निराला

v. कवि की वीणा में कैसी चिनगारियाँ आ बैठी हैं?

क) शांति की ख) भ्रांति की ग) क्रांति की घ) उपर्युक्त सभी

vi. 'कोटि–कोटि कंठ में कौन सा अलंकार है?

क) शब्दालंकार ख) अर्थालंकार ग) अनुप्रास अलंकार

vii. 'कोटि–कोटि कंठ' किसके लिए कहा गया है?

क) अंग्रेजो के लिए ख) भारतीयों के लिए ग) सैनिकों के लिए
घ) आंदोलनकारियों के लिए

viii. 'यह मन–प्राण हमारा है' में कवि मन–प्राण का प्रयोग किसके लिए करता है?

क) वीरों के लिए ख) देशवासियों के लिए ग) भारतवर्ष के लिए
घ) गांधी जी के लिए

ix. 'तुमने पीकर गरल, जगत कोमधुरामृत का दान दिया' किसके लिए कहा गया है?

क) मजदूरों के लिए ख) किसानों के लिए ग) दोनों के लिए
घ) अंग्रेजों के लिए

x. 'नक्कारा' से क्या आशय है?

क) क्रांति का ख) शांति का ग) आंदोलन का घ) जेल का

19.3 उपयोगी पुस्तके

'स्वतंत्रता पुकारती' सम्पादक–नन्द किशोर नवल

19.4 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न – 1

1. कवि ऐसी तान सुनाना चाहता है जिससे चारों तरफ हलचल मच जाय। गर्जन तर्जन का शोर मच जाय, आसमान की छाती फट जाय, तारे टूट–टूट कर बिखर जाय। धरती से आकाश तक धूल ही धूल छा जाय, शिलायें दरकने लगें।

2. विप्लव गान कविता के बहाने से कवि कहना चाहता है कि यह समाज पूरी तरह बेकार हो चुका है। एक नये समाज का निर्माण करना अब आवश्यक हो गया है, इसलिए इसका समूल विनाश आवश्यक है। समाज का विनाश कितना प्रलयंकारी और भयावह होगा इसको व्यक्त करने के लिए कवि ने प्रकृति में प्रलय के दृश्य का चित्रण किया है।

3. शेषनाग को अपने सिर की मणि की चिंता सबसे अधिक सताती रहती है। कवि मनुष्य के मन में वैसा ही नवनिर्माण की चिंता जाग्रत कर देने की कल्पना करता है।

4. उथल पुथल से कवि का आशा एक ऐसे क्रांतिकारी सामाजिक परिवर्तन से है जिसमें समाज की सारी बुराईयां नष्ट हो जायेंगीं। जड़ता, अंधविश्वास, कायरता, का नामों निशान नहीं रह जायेगा। पुराना समाज पूरी तरह समाप्त होकर एक नया समाज बन जायेगा। पुराने समाज के नष्ट होने से जो उलट फेर होगा उसे ही कविता में उथल पुथल कहा गया है।

5. बालकृष्ण शर्मा नवीन का जन्म मध्यप्रदेश में हुआ था। मिडिल स्कूल के बाद पढ़ने के लिए उन्हें उन्नाव के माधवपुर कालेज में भेजा गया। गांधी जी के प्रभाव में पढ़ाई छोड़ कर उन्होनें असहयोग आंदोलन में हिस्सा लेना शुरू कर दिया। स्वतंत्रता आंदोलन में वे कुल छह बार जेल गये। उनके जीवन का कुल 9 साल जेल में ही गुजरे। उनकी अधिकतर रचनायें जेल जीवन के दौरान ही लिखी गयी थी।

6. 'हिन्दुस्तान हमारा है' कविता में कवि ने भारतीय इतिहास का चित्रण किया है। हमारा अतीत हमें बताता है कि हमने समय–समय पर अनेकानेक क्रान्तियों को जन्म दिया है और उन क्रान्तियों के द्वारा हमने नया इतिहास रचा है तथा इतिहास ने भी हमारा सदैव मान रखा है।

7. सृष्टि का सृजन होने से पहले ब्रम्हा के मन में सृष्टि का स्वप्न जाग्रत हुआ था। इस स्वप्न के फलस्वरूप सृष्टि की रचना हुई। नव सृजन के स्वप्न से यहां कवि का आशय यह है कि भारत का अस्तित्व सृष्टि की संकल्पना के समय से ही है। अर्थात यह सृष्टि की आदिभूमि है। इससे प्राचीन इस पृथ्वी पर कोई देश नहीं है। कोई संस्कृति नहीं है। यह हर प्रकार से सर्वश्रेष्ठ है।

8. इस कविता में सृष्टि के विकास क्रम को दर्शाया गया है। पहले बंद में बताया गया है कि सबसे पहले दिक और काल की रचना हुई, फिर हवा चांद और सूरज तारे अर्थात आकाशीय शक्तियां अस्तित्व में आई। बादल और समुद्र आदि बने। इसके बाद पृथ्वी पर जड़ से जंगम जगत अर्थात जीवों और वनस्पतियों का जन्म हुआ। इस प्रकार क्रमशः सृष्टि की रचना हुई।

9. भारत का मजदूर किसान समाज का सबसे गरीब तबका होता है। किसान वैसे तो अन्न उगाकर सबका पेट भरता है और मजूदर मिलों में कपड़ा बुनता है, लेकिन इनका जीवन फिर भी फटे हाल रहता है। मानव सभ्यता का विकास किसानों मजदूरों के श्रम का ही परिणाम है, इसलिए कवि ने उन्हें समाज का प्रचण्ड अभिमान कहा है।

10. सन 1920 में ही नवीन जी गांधी के आंदोलनों में भाग लेने लगे थे। वे कुल दो बार में नौ वर्ष तक जेल में रहे। उनकी अधिकतर रचनाएं जेल में ही लिखी गयीं थी।

बोध प्रश्न–2

i. ख

ii. ख

iii. ग

iv. ख

v. ग

vi. ग

vii. ख

viii. ग

ix. ग

x. क

इकाई 20 काव्य–वाचन एवं विश्लेषण : हिमालय, समर शेष है, कलम आज उनकी जय बोल

इकाई की रूप रेखा

20.0 उद्देश्य

20.1 प्रस्तावना

20.2 चयनित कविताओं का पाठ एवं विश्लेषण

20.3 उपयोगी पुस्तकें

20.4 बोध प्रश्नों के उत्तर

20.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप–

- रामधारी सिंह दिनकर की पांच कविताओं, की विरित्तृत व्याख्या समझ सकेंगी/सकेंगे;
- रामधारी सिंह दिनकर की कविताओं का मूल स्वर पहचान सकेंगी/सकेंगे;
- इन कविताओं के माध्यम से राष्ट्रीयता की भावना को समझ सकेंगी/सकेंगे;
- रामधारी सिंह दिनकर की काव्य–भाषा के तत्वों की पहचान करना सीख सकेंगी/सकेंगे;
- रामधारी सिंह दिनकर की कविताओं में शब्द–योजना और प्रयुक्त शब्दावली से परिचित हो जायेंगी/जायेंगे; और
- रामधारी सिंह दिनकर के जीवन और उनकी साहित्यिक–राजनीतिक यात्रा के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकेंगी/सकेंगे।

20.1 प्रस्तावना

जीवन परिचय–

हिन्दी के सुविख्यात कवि रामाधारी सिंह दिनकर का जन्म 23 सितंबर 1908 ई. में सिमरिया, जिला मुंगेर (बिहार) में हुआ था। दिनकर के पिता एक साधारण किसान थे। उनका बचपन और कैशोर्य देहात में प्रकृति की गोद में बीता। दिनकर जी ने प्राथमिक विद्यालय एवं राष्ट्रीय मिडिल तक की शिक्षा गांव के स्कूल में पूरी की। हाई स्कूल की शिक्षा इन्होंने मोकामाघाट हाई स्कूल से प्राप्त की। 1928 में मैट्रिक के बाद दिनकर ने 1932 में पटना विश्वविद्यालय से इतिहास में बी.ए. ऑनर्स किया। इसके बाद एक स्कूल में प्रधानाध्यापक नियुक्त हुए। 1934 में बिहार सरकार के अधीन सब–रजिस्ट्रार का पद पर इनकी नियुक्ति हो गयी। 1947 में उन्हें बिहार विश्वविद्यालय में हिन्दी विभाग में विभागाध्यक्ष पद पर और 1952 में राज्य सभा का सदस्य नियुक्त किया गया। 12 वर्षों तक राज्यसभा सदस्य रहने के बाद वे भागलपुर विश्वविद्यालय के कुलपति नियुक्त किये गये। लेकिन जल्द ही इन्हें भारत सरकार का हिन्दी सलाहकार बनाकर दिल्ली बुला लिया गया। 24 अप्रैल 1974 को दिनकर जी का स्वर्गवास हो गया।

काव्य कृतियाँ

बारदोली–विजय संदेश (1928), प्रणभंग (1929), रेणुका (1935), हुंकार (1938), रसवन्ती (1939), द्वंद्वगीत (1940), कुरूक्षेत्र (1946), धूप–छाँह (1947), सामधेनी (1947), बापू (1947), इतिहास के आँसू (1951), धूप और धुआँ (1951), मिर्च का मजा (1951), रश्मिरथी (1952), दिल्ली (1954), नीम के पत्ते (1954), नील कुसुम (1955), सूरज का ब्याह (1955), चक्रवाल (1956), कवि–श्री (1957), सीपी और शंख (1957), नये सुभाशित (1957), लोकप्रिय कवि दिनकर (1960), उर्वशी (1961), परशुराम की प्रतीक्षा (1963), आत्मा की आँखें (1964), कोयला और कवित्व (1964), मृत्ति–तिलक (1964), दिनकर की सूक्तियाँ (1964), हारे को हरिनाम (1970), संचियता (1973), दिनकर के गीत (1973), रश्मिलोक (1974), उर्वशी तथा अन्य श्रृंगारिक कविताएँ (1974)।

गद्य कृतियाँ–

मिट्टी की ओर (1946), चित्तौड़ का साका (1948), अर्धनारीश्वर (1952), रेती के फूल (1954), हमारी सांस्कृतिक एकता (1955), भारत की सांस्कृतिक कहानी (1955), संस्कृति के चार अध्याय (1956), उजली आग (1956), देश–विदेश (1957), राष्ट्र–भाषा और राष्ट्रीय एकता (1955), काव्य की भूमिका (1958), पन्त–प्रसाद और मैथिलीशरण (1958), वेणुवन 1958, धर्म, नैतिकता और विज्ञान (1969), वट–पीपल (1961), लोकदेव नेहरू (1965), शुद्ध कविता की खोज (1966), साहित्य–मुखी (1968), राष्ट्रभाषा आंदोलन और गांधी जी (1968), हे राम! (1968), संस्मरण और श्रद्धांजलियाँ (1970), भारतीय एकता (1971), मेरी यात्राएँ (1971),दिनकर की डायरी (1973),चेतना की शिला (1973), विवाह की मुसीबतें (1973), आधुनिक बोध (1973)।

सम्मान–

1. कुरुक्षेत्र के लिये काशी नागरी प्रचारिणी सभा सम्मान
2. 1959 में साहित्य अकादमी पुरस्कार।
3. 1959 में पद्म विभूषण सम्मान।
4. विद्या वाचस्पति सम्मान।
5. 1968 में राजस्थान विद्यापीठ का साहित्य–चूड़ामणि सम्मान।
6. 1972 में उर्वशी के लिये ज्ञानपीठ पुरस्कार।

20.2 चयनित कविताओं का पाठ एवं विश्लेषण

एक

हिमालय

मेरे नगपति! मेरे विशाल!
साकार, दिव्य, गौरव विराट्,
पौरुष के पुन्जीभूत ज्वाल!

मेरी जननी के हिम–किरीट!
मेरे भारत के दिव्य भाल!
मेरे नगपति! मेरे विशाल!
युग–युग अजेय, निर्बन्ध, मुक्त,
युग–युग गर्वोन्नत, नित महान,
निस्सीम व्योम में तान रहा
युग से किस महिमा का वितान?
कैसी अखंड यह चिर–समाधि?
यतिवर! कैसा यह अमर ध्यान?
तू महाशून्य में खोज रहा
किस जटिल समस्या का निदान?
उलझन का कैसा विषम जाल?
मेरे नगपति! मेरे विशाल!
ओ, मौन, तपस्या–लीन यती!
पल भर को तो कर दृगुन्मेष!
रे ज्वालाओं से दग्ध, विकल
है तड़प रहा पद पर स्वदेश।
सुखसिंधु, पंचनद, ब्रह्मपुत्र,
गंगा, यमुना की अमिय–धार
जिस पुण्यभूमि की ओर बही
तेरी विगलित करुणा उदार,
जिसके द्वारों पर खड़ा क्रान्त
सीमापति! तू ने की पुकार,
पद–दलित इसे करना पीछे
पहले ले मेरा सिर उतार।
उस पुण्यभूमि पर आज तपी!
रे, आन पड़ा संकट कराल,
व्याकुल तेरे सुत तड़प रहे
डस रहे चतुर्दिक विविध व्याल।
मेरे नगपति! मेरे विशाल!

कितनी मणियाँ लुट गईं? मिटा
कितना मेरा वैभव अशेष!
तू ध्यान–मग्न ही रहा, इधर
वीरान हुआ प्यारा स्वदेश।
वैशाली के भग्नावशेष से
पूछ लिच्छवी–शान कहाँ?
ओ री उदास गण्डकी! बता
विद्यापति कवि के गान कहाँ?
तू तरुण देश से पूछ अरे,
गूँजा कैसा यह ध्वंस–राग?

अम्बुधि–अन्तस्तल–बीच छिपी
यह सुलग रही है कौन आग?
प्राची के प्रांगण–बीच देख,
जल रहा स्वर्ण–युग–अग्निज्वाल,

मेरे नगपति! मेरे विशाल!
रे, रोक युधिष्ठिर को न यहाँ,
जाने दे उनको स्वर्ग धीर,
पर, फिरा हमें गाण्डीव–गदा,
लौटा दे अर्जुन–भीम वीर।
कह दे शंकर से, आज करें
वे प्रलय–नृत्य फिर एक बार।
सारे भारत में गूँज उठे,
हर–हर–बम का फिर महोच्चार।
ले अंगड़ाई हिल उठे धरा
कर निज विराट स्वर में निनाद
तू शैलीराट हुँकार भरे
फट जाए कुहा, भागे प्रमाद
तू मौन त्याग, कर सिंहनाद
रे तपी आज तप का न काल
नवयुग–शंखध्वनि जगा रही
तू जाग, जाग, मेरे विशाल

('हुंकार' संग्रह से)

संदर्भ प्रसंग–

प्रस्तुत कविता प्रसिद्ध कवि रामधारी सिंह के काव्य संग्रह 'हुंकार' में 'हिमालय' शीर्षक से संकलित है। यह संकलन 1938 में प्रकाशित हुआ था, जबकि हिमालय कविता कवि ने सन 1933 में लिखी थी। रामधारी सिंह राष्ट्रवादी धारा के कवि थे। अंग्रेजों की गुलामी से देश को आजाद कराने के लिए देश की जनता में राष्ट्रीयता और देश प्रेम की भावना जगाना इस कविता का उद्देश्य है। गहरी समाधि में लीन हिमालय को जगाने के बहाने इस कविता में देश की जनता को जगाने का प्रयास किया गया है।

कठिन शब्द

नगपति–हिमालय (नग–पहाड़), **मेरे विशाल**– भारत की विशालता का प्रतीक, हिमालय, **मेरी जननी**– भारत माता, **हिम–किरीट**–बर्फ का मुकुट, **दिव्य–भाल**–चमकता हुआ ललाट, **अजेय**–जिसे जीता न जा सके, **निर्बंध**–बिना बंधन का, **मुक्त**– खुला हुआ, **निस्सीम व्योम**–सीमाहीन आकाश, **वितान**– आवरण, **चिर–समाधि**–लम्बे समय से ध्यान मग्न, **यतिवर**– श्रेष्ठ सन्यासी, **महाशून्य**– विराट आकाश, **यती**–साधना में डूबा हुआ सन्यासी, **दृगोन्मेश**– आंखें खोलना, **सुख–सिंधु**–सिंधु नदी जो देश को सुखी बनाती है, **पंचनद**– पांच नदियां, **अमिय धार**– अमृत की तरह जलधारा, **पुण्य भूमि**–पवित्र भूमि, भारत, **विगलित**–पिघली हुई, **सीमापति**–सीमा का रक्षक, **पद–दलित**–पराजित करना, **भग्नावशेष**– टूटा फूटा, **लिच्छवि**–प्राचीन गणराज्य,

गण्डकी–मिथिला में बहने वाली नदी, **घ्वंस–राग**–विनाश का राग, **अम्बुधि–अंतस्तल**–समुद्र के भीतर, **सिंहनाद**– सिंह की गर्जना, **स्वर्ण–युग–अग्नि जाल**– अच्छे युग के आने की चमक, **शैलराट**– विशाल पर्वत, **कुहा**–कुहासा, **नव–युग–संखध्वनि**– नये जमाने की शुरूआत।

व्याख्या–

हिमालय को विभिन्न विशेषणों से संबोधित किया गया है। हिमालय की प्रशंसा करते हुए कवि कहता है तुम भारत के गौरव का साकार विराट रूप हो। तुम पौरूष का साक्षात प्रतीक हो और भारत माँ के सिर का मुकुट हो।

तुम युगों–युगों से स्वतंत्र हो। तुम्हारी महानता पर आज तक कोई आंच नहीं आई है। तुम्हारे गौरव का वितान युगों–युगों से तना हुआ है। हे ऋषिवर! यह कैसी समाधि है? तुम युगों–युगों से चिर समाधि में यह कब टूटेगी? तुम्हारी ऊंची–ऊंची चोटियां आकाश की ओर सिर उठाये किस समस्या का समाधान खोजने में लगी हैं। तुम क्या सोच रहे हो? ऐसा लगता है तुम किसी कठिन उलझन में फंसे हुए हो।

सदियों से मौन धारण किये हुए हे धीर ब्रती! जरा देर के लिए आखें खोल कर चारों ओर देखो! दुखों की ज्वाला से विकल यह देश तुम्हारे चरणों में बैठकर तुमसे कुछ कह रहा है। सिंधु, गंगा, यमुना, ब्रह्मपुत्र आदि पंचनदियों की धारा जो भारत की पुण्य भूमि पर बह रही हैं, तुम्हारी करूणा की धारायें हैं। तुमने इस देश की हमेशा रक्षा की है और दुश्मनों को अंदर आने नहीं दिया है। हे मौन ब्रती मेरे हिमालय! आज उसी भारत भूमि पर संकट आ पड़ा है। तुम्हारी संताने तड़प रही हैं।

कवि हिमालय से कहता है कि भारत का सारा धन वैभव लुट गया है। उसका कभी न समाप्त होने वाला वैभव भी नष्ट हो गया। तुम अभी तक ध्यान मग्न चुपचाप बैठे हो, जबकि पूरा देश वीरान होता जा रहा है!

कवि हिमालय से कहता है कि वैशाली के भग्नावशेषों को देखो! देखो कि लिच्छवि गणराज्य बरबाद हो चुका है। हे मेरे नगपति! तुम पूछते क्यों नहीं कि विद्यापति का गान कहां गुम हो गया? गंडकी उदास क्यों हैं? पूछो अपने प्यारे युवा देश से कि वह विनाश के दौर से क्यों गुजर रहा है। समुद्र के गर्भ में अग्नि की ज्वाला क्यों धधक रही है?

हे मेरे नगपति! तुम जागो! और देखो! तुम्हारा प्यारा देश वीरान होता जा रहा है। चाहें युधिष्ठिर जैसे धीर को स्वर्ग जाने दो लेकिन हमें अर्जुन और भीम को उनके धनुष और गदा के साथ लौटा दो। भगवान शिव से तांडव नृत्य करने के लिए कहो ताकि हर बम के महोच्चार से धरा एक बार गुंजायमान हो जाय और सारा आलस्य दूर हो जाय। तपस्वी हिमालय से कवि कहता है कि यह समय तप करने का नहीं है। तुम भी मौन त्याग करके उठो और सिंहनाद करो। यह नया युग तुम्हें जगा रहा है। हे मेरे विशाल नगपति उठो!

काव्य सौष्ठव–

- हिमालय का मानवीकरण किया गया है।
- हिमालय की तुलना चिर समाधि में लीन तपस्वी से की गयी है।

- सामासिक चिन्हों से युक्त शब्द–पदों का प्रयोग कविता में अर्थगौरव की सृष्टि करता है।
- प्रत्येक पंक्ति में 16 मात्राएं हैं। छोटी–छोटी पंक्तियों से बनी कविता में प्रवाह है।

विशेष–

यह कविता भारत में क्रांतिकारी जागरण की भावना से लिखी गयी है। देशवासियों में अपने देश प्रेम और स्वतंत्रता की इच्छा जगाने के लिए उस समय अनेक उपाय किये जा रहे थे। इस कविता में भी हिमालय को जगाने के बहाने जनता को जगाने का प्रयास किया गया है।

दो

समर शेष है

ढीली करो धनुष की डोरी, तरकस का कस खोलो ,
किसने कहा, युद्ध की बेला चली गयी, शांति से बोलो?
किसने कहा, और मत बेधो हृदय वह्नि के शर से,
भरो भुवन का अंग कुंकुम से, कुसुम से, केसर से?
कुंकुम? लेपूं किसे? सुनाऊँ किसको कोमल गान?
तड़प रहा आँखों के आगे भूखा हिन्दुस्तान।

फूलों के रंगीन लहर पर ओ उतरनेवाले!
ओ रेशमी नगर के वासी! ओ छवि के मतवाले!
सकल देश में हालाहल है, दिल्ली में हाला है,
दिल्ली में रौशनी, शेष भारत में अंधियाला है।
मखमल के पर्दों के बाहर, फूलों के उस पार,
ज्यों का त्यों है खड़ा, आज भी मरघट–सा संसार।

वह संसार जहाँ तक पहुँची अब तक नहीं किरण है
जहाँ क्षितिज है शून्य, अभी तक अंबर तिमिर वरण है
देख जहाँ का दृश्य आज भी अन्तःस्थल हिलता है
माँ को लज्जा वसन और शिशु को न क्षीर मिलता है
पूज रहा है जहाँ चकित हो जन–जन देख अकाज
सात वर्ष हो गये राह में, अटका कहाँ स्वराज?

अटका कहाँ स्वराज? बोल दिल्ली! तू क्या कहती है?
तू रानी बन गयी वेदना जनता क्यों सहती है?
सबके भाग्य दबा रखे हैं किसने अपने कर में?
उतरी थी जो विभा, हुई बंदिनी बता किस घर में
समर शेष है, यह प्रकाश बंदीगृह से छूटेगा
और नहीं तो तुझ पर पापिनी! महावज्र टूटेगा

समर शेष है, उस स्वराज को सत्य बनाना होगा
जिसका है ये न्यास उसे सत्वर पहुँचाना होगा

धारा के मग में अनेक जो पर्वत खड़े हुए हैं
गंगा का पथ रोक इन्द्र के गज जो अड़े हुए हैं
कह दो उनसे झुके अगर तो जग मे यश पाएंगे
अड़े रहे अगर तो ऐरावत पत्तों से बह जाऐंगे

समर शेष है, जनगंगा को खुल कर लहराने दो
शिखरों को डूबने और मुकुटों को बह जाने दो
पथरीली ऊँची जमीन है? तो उसको तोड़ेंगे
समतल पीटे बिना समर की भूमि नहीं छोड़ेंगे
समर शेष है, चलो ज्योतियों के बरसाते तीर
खण्ड–खण्ड हो गिरे विषमता की काली जंजीर

समर शेष है, अभी मनुज भक्षी हुंकार रहे हैं
गाँधी का पी रुधिर जवाहर पर फुंकार रहे हैं
समर शेष है, अहंकार इनका हरना बाकी है
वृक को दंतहीन, अहि को निर्विष करना बाकी है
समर शेष है, शपथ धर्म की लाना है वह काल
विचरें अभय देश में गाँधी और जवाहर लाल

तिमिर पुत्र ये दस्यु कहीं कोई दुष्काण्ड रचें ना
सावधान! हो खड़ी देश भर में गाँधी की सेना
बलि देकर भी बली! स्नेह का यह मृदु व्रत साधो रे
मंदिर औ मस्जिद दोनों पर एक तार बाँधो रे

समर शेष है, नहीं पाप का भागी केवल व्याध
जो तटस्थ हैं, समय लिखेगा उनके भी अपराध

(परशुराम की प्रतीक्षा)

संदर्भ प्रसंग–

रामधारी सिंह दिनकर ने इस कविता की रचना सन 1954 में की थी। यह कविता 'परशुराम की प्रतीक्षा' नामक संग्रह में संग्रहीत है। भारत को आजाद हुए सात साल हो गये थे किन्तु जिस स्वप्न के साथ आजादी की लड़ाई लड़ी गयी थी, वह स्वप्न पूरा न होते देख कवि के मन में क्षोभ है। कवि एक समतामूलक समाज का पक्षधर है। उसे लगता है कि अंग्रेजों के भारत छोड़ने के बाद भी स्वाधीनता का युद्ध अभी समाप्त नहीं हुआ है। देश में न्याय और बराबरी का समाज स्थापित करने के लिए अभी संघर्ष जारी रखना होगा।

कठिन शब्द

शर– तीर, **हालाहल**– विष, **तिमिर**–अंधकार, **क्षीर**–दूध, **वसन**– कपड़ा, **विभा**–प्रातःकाल, **सत्वर**– तुरंत, **मग**–रास्ता, **एरावत**– इंद्र का हाथी, **जनगंगा**– जनता रूपी गंगा, **रूधिर**– खून, **वृक**– भेड़िया, **अहि**–सर्प, **शपथ**– प्रतिज्ञा, **अभय**– बिना किसी डर के।

व्याख्या–

इस बंद में कवि यह मानने से इनकार करता है कि शांति और हंसी खुशी का समय आ गया है। इसलिए वह पूछता है कि यह किसने कहा कि धनुष की प्रत्यंचा ढीली करने और तरकस को पीठ से उतार देने का समय आ गया, अर्थात अब युद्ध काल समाप्त हो गया? वे कौन लोग हैं जो कह रहे हैं कि अब कठोर आलोचना करने का समय समाप्त हो चुका और समाज में कोमलता की भावना का प्रसार करने का समय आ गया है? कवि बड़े खिन्न भाव से पूछता है कि वह कौन है जिसे कुमकुम केसर लगाऊं और कोमल मधुर गीत सुनाऊं? क्या उस हिन्दुस्तान को जो अभी भी भूख से तड़प रहा है? इस बंद में कवि स्पष्ट रूप से कहना चाहता है कि शांति की बातें करने का समय अभी नहीं आया है। जबतक देश में गरीबी और भुखमरी है, संघर्ष जारी रखना होगा।

इस बंद में कवि महानगरों, खास कर दिल्लीवालों को धिक्कारते हुए कहता है कि ऐ सुख और सुंदरता के मतवाले दिल्लीवालों तुम्हें क्या पता नहीं कि पूरे देश की जनता दुख और संताप का विष पी कर जीवन गुजार रही है? क्या तुम्हें दिख नहीं रहा कि दिल्ली में मौज है, चकाचौंध भरी रोशनी है, लेकिन बाकी देश में चारों ओर अंधेरा ही अधेंरा छाया हुआ है? तुम्हारी रेशमी खुशबूदार दिल्ली के बाहर तो सब तरफ मरघट जैसी उदासी ही छायी हुई है।

कवि यहां कहता है कि देश को आजाद हुए सात साल हो गये, लेकिन जिस स्वराज्य के लिए आजादी मिली वह स्वराज्य तो अभी आया ही नहीं। आज भी देश में पहले जैसा ही अंधेरा छाया हुआ है। न तन ढकने को वस्त्र है न बच्चों को दूध मिल रहा है।

कवि दिल्ली यानी शासन व्यवस्था से सवाल करता है कि दिल्ली देश की रानी बन गयी, सत्ता इसके हाथ में आ गयी, लेकिन देश की जनता का दुख दूर नहीं हुआ। कवि पूछता है कि आखिर वे कौन लोग हैं जो जनता के भाग्य पर कब्जा जमाये बैठे हैं? अंग्रेजी शासन के जाने से जिस प्रकाश से देश का सौभाग्य जगमगाने की उम्मीद थी उस प्रकाश को किसी ने फिर से बंदी बना लिया है। उस प्रकाश को मुक्त कराने के लिए युद्ध अभी जारी रखना होगा।

कवि कहता है कि यह देश जिसका है उसका अपना राज्य जब तक कायम नहीं हो जाता, तब तक लड़ाई चलती रहेगी। देश के शोषकों और सत्ताधारियों की तरफ इशारा करते हुए कवि कहता है कि स्वराज्य की स्थापना के रास्ते में जो लोग बाधा बन कर खड़े हैं, वे अगर झुककर विकास की धारा को साधारण जनता तक पहुंचाने का रास्ता प्रशस्त कर देते हैं तो उनकी महानता की प्रशंसा होगी और अगर नहीं माने तो चाहे वे ऐरावत की तरह ही बलवान क्यों न हों, जनता के विद्रोह के सामने पत्तों की तरह बह जायेंगे। इसलिए अभी युद्ध की गंगा को लहराने देने की आवश्यकता है। अभी और भी युद्ध लड़ने हैं। समाज में जो असमानता है, उसे समाप्त करके समतामूलक समाज की स्थापना करनी होगी। यह काम किये बिना अवकाश नहीं लेना है। विषमता की काली जंजीरों को खण्ड–खण्ड करना होगा।

अंग्रेज गये लेकिन देश में अभी भी बहुत से दुश्मन छिपे हुए हैं। गांधी के हत्यारों और जवाहर के दुश्मनों का अहंकार चूर करने का काम अभी बाकी है। भेड़ियों का दांत तोड़ना और विषधरों को विषहीन करने का काम अभी भी बाकी है। ऐसे खूंखार दुश्मनों को समाप्त कर के देश में निर्भय शासन की स्थापना के लिए संघर्ष करना अभी बाकी है।

अंतिम बंद में कवि देश के दुश्मनों से सावधान करते हुए कहता है कि देश में गांधी की सेना को एक बार फिर बलि देनी होगी। हिन्दुओं और मुसलमानों में एकता और सौहार्द का सम्बन्ध कायम करना होगा। इस युद्ध की बेला में केवल वही हमारा दुश्मन नहीं है जो देश के विकास के रास्ते में रोड़ा बन कर खड़े हैं। जो इस युद्ध में तटस्थ हैं और युद्ध में शामिल नहीं हैं वे भी किसी अपराधी से कम नहीं हैं। भविष्य उन्हें भी इस अपराध के लिए दण्डित करेगा।

काव्य सौष्ठव–

- कविता में आजादी के सात वर्ष बाद भी आम जनता की गरीबी में सुधार न होने पर चिंता व्यक्त की गयी है।
- भारतीय जनता की गरीबी का बड़ा प्रभावशाली चित्र उकेरा गया है।
- देश में बैठे स्वराज्य के दुश्मनों पर कविता में रोष भरा है।
- कविता का शिल्प भाव के अनुरूप है।

विशेष–

इस कविता में गांधी के हत्यारों और नेहरू के निंदकों को देश का दुश्मन माना गया है। और उनसे सावधान रहने की सलाह दी गयी है।

तीन

वीर

सच है, विपत्ति जब आती है,
कायर को ही दहलाती है,
सूरमा नहीं विचलित होते,
क्षण एक नहीं धीरज खोते,
विघ्नों को गले लगाते हैं,
काँटों में राह बनाते हैं।

मुहँ से न कभी उफ कहते हैं,
संकट का चरण न गहते हैं,
जो आ पड़ता सब सहते हैं,
उद्योग–निरत नित रहते हैं,
शूलों का मूल नसाते हैं,
बढ़ खुद विपत्ति पर छाते हैं।

है कौन विघ्न ऐसा जग में,
टिक सके आदमी के मग में?
खम ठोंक ठेलता है जब नर
पर्वत के जाते पाव उखड़,

मानव जब जोर लगाता है,
पत्थर पानी बन जाता है।
गुन बड़े एक से एक प्रखर,
हैं छिपे मानवों के भीतर,
मेंहदी में जैसी लाली हो,
वर्तिका–बीच उजियाली हो,
बत्ती जो नहीं जलाता है,
रोशनी नहीं वह पाता है।

संदर्भ और प्रसंग–

हिन्दी के राष्ट्रवादी कवि रामधारी सिंह दिनकर की यह कविता देश की जनता में सोई हुई आत्मसम्मान और वीरता की भावना को जाग्रत करने के उद्देश्य से लिखी गयी है। आजादी के आंदोलन के दौर में इस तरह की वीर रसात्मक साहस बढ़ाने वाली कविताओं की जरूरत थी। इस कविता में कवि ने एक प्रकार से वीर पुरूष की प्रसंशा करने के साथ यह भी कहना चाहा है कि हर मनुष्य मे साहस और वीरता छिपी होती है।

कठिन शब्द

विपत्ति–संकट, **सूरमा**–वीर, **विघ्न**–बाधाएं, **उद्योग**–निरत–निरंतर काम करते रहना, **शूल**–कांटा, **मूल**–जड़, **मग**–रास्ता, **प्रखर**–तेज, **वर्तिका**–दिये की बाती,

व्याख्या–

वीर और कायर में अंतर बताते हुए कवि कहता है कि जब कोई मुश्किल या संकट का समय आता है तो कायर लोग घबराकर परिस्थिति से समझौता कर लेते हैं, लेकिन वीर लोग मुश्किल से मुश्किल घड़ी में भी घबराते नहीं है। धैर्य पूर्वक विपत्ति का सामना करते हैं। वीर लोग घबरा कर संकट के सामने समर्पण नहीं कर देते। मुश्किलों को सहन करते हुए अपने काम में लगे रहते हैं और एक समय ऐसा आता है कि वे विपत्ति को समूल नष्ट कर के उस पर हमेशा के लिए विजय प्राप्त कर लेते हैं।

वीरों की प्रशंसा करते हुए कवि कहता है कि इस संसार में ऐसा कोई भी संकट या बाधा नहीं है, जिसपर विजय पाना वीरों के लिए असंभव हो। वीर लोग असंभव लगने वाले संकटों पर भी जीत हासिल कर लेते हैं। मनुष्य एक ऐसा प्राणी है जो धैर्य और हिम्मत से यदि मुकाबला करने का संकल्प कर ले तो वह पर्वत को भी रास्ते से हटा सकता है। पत्थर की चट्टानों जैसे संकट भी पानी बन कर बह जाते है।

इस बंद में कवि ने मनुष्यों में छिपी ताकत की ओर ध्यान दिलाते हुए कहा है कि मनुष्य दिखने में साधारण लगता है, लेकिन उसके अंदर एक से बढ़कर एक गुण छिपे होते हैं। मेंहदी और दीपक से तुलना करके कवि समझाता है कि जैसे मेंहदी की पत्तियों में जैसे लाली छिपी होती है और दीपक की बाती में प्रकाश छिपा होता है, उसी प्रकार मनुष्यों में भी बहुत सारी ताकत छिपी होती है।

काव्य सौष्ठव–

- वीर की परिभाषा बड़े सुंदर ढंग से की गयी है।

- दृष्टांत अलंकार का कई जगह प्रयोग हुआ है।
- भाषा सरल और काव्यात्मक है।

विशेष–

लम्बी गुलामी से थके हारे भारतीयों के मन में साहस और संघर्ष का उत्साह पैदा करना इस कविता का प्रतिपाद्य है, जिसमें कवि सफल हुआ है।

चार

कलम आज उनकी जयबोल

कलम आज उनकी जयबोल
जला अस्थियाँ बारी–बारी
चिटकाई जिनमें चिंगारी,
जो चढ़ गये पुण्यवेदी पर
लिए बिना गर्दन का मोल
कलम, आज उनकी जय बोल।

जो अगणित लघु दीप हमारे
तूफानों में एक किनारे,
जल–जलकर बुझ गए किसी दिन
माँगा नहीं स्नेह मुँह खोल
कलम, आज उनकी जय बोल।

पीकर जिनकी लाल शिखाएँ
उगल रही सौ लपट दिशाएं,
जिनके सिंहनाद से सहमी
धरती रही अभी तक डोल
कलम, आज उनकी जय बोल।

अंधा चकाचौंध का मारा
क्या जाने इतिहास बेचारा,
साखी हैं उनकी महिमा के
सूर्य चन्द्र भूगोल खगोल
कलम, आज उनकी जय बोल।

संदर्भ और प्रसंग–

रामधारी सिंह दिनकर की यह कविता नन्द किशोर नवल द्वारा सम्पादित 'दिनकर रचनावली' में संकलित है। यह आजादी की लड़ाई में शहीद हो गये बलिदानियों की याद में लिखी गयी है। इसमें कवियों से शहीदों की जय बोलने के लिए कहा गया है। इस कविता का लक्ष्य जनता में देशप्रेम की भावना पैदा करना है।

कठिन शब्द

अस्थियां–हड्डियां, **पुण्यवेदी**–बलिवेदी, **अगणित**–जिसकी गणना न हो सके, अंसख्य, **शिखाएं**–ज्वालाएं, **सिंहनाद**– सिंह की गर्जना। **साखी**– साक्षी, गवाह, **खगोल**–आकाश

व्याख्या–

शहीदों की याद में लिखी गयी इस कविता में कवि कहता है कि जिन शहीदों की चिताओं से निकली चिंगारियों से देश में स्वतंत्रता के लिए मर मिटने की भावना रूपी आग फैल गयी, जिन्होनें निःस्वार्थ भाव से अपना बलिदान कर दिया, हे मेरी कलम आज उनकी जय बोलो!

आजादी की लड़ाई में ऐसे अगणित लोगों ने बलिदान दिये जिन्हें हम नहीं जानते। वे चाहते तो बलिदान होने से बच सकते थे। लेकिन उन्होनें किसी प्रकार का समझौता करने की बजाय देश की बलिवेदी पर मर मिटना ही अच्छा समझा, हे मेरी कलम ! तुम उनको याद करो।

जिन शहीदों के लहू की लपट से दिशायें लाल हो गयी थीं, जिनकी वीर गर्जना से धरती अभी तक डोल रही है, हे मेरी कलम! आज तुम उनका जयगान करो।

जो इतिहास के अंधे हैं, जिन्हें देश का कोई ज्ञान ही नहीं है, वे लोग इन शहीदों के बारे नहीं जानते। लेकिन ये सूरज, ये चांद, ये सम्पूर्ण पृथ्वी और आकाश जिन वीरों की शहादत का साक्षी रहे हैं, हे मेरी कलम ! उन वीरों का जयगान करो।

काव्य सौष्ठव–

- यह कविता अपने कलेवर में छोटी है।
- भाषा सरल और सुबोध है।
- इसमें दीपक को शहीदों का प्रतीक माना गया है।
- प्रत्येक पंक्ति में 15 मात्रायें, प्रत्येक पद में पांच पंक्तियां और कविता में कुल चार पद हैं।

विशेष–इस कविता को पढ़कर मन में आजादी की लड़ाई में शहीद हुए ज्ञात अज्ञात सभी शहीदों के प्रति आदर भाव उत्पन्न होता है।

पांच

जियो जियो अय हिन्दुस्तान

जियो जियो अय हिन्दुस्तान
जाग रहे हम वीर जवान,
जियो जियो अय हिन्दुस्तान !
हम प्रभात की नई किरण हैं, हम दिन के आलोक नवल,
हम नवीन भारत के सैनिक, धीर ,वीर, गंभीर, अचल ।
हम प्रहरी उँचे हिमाद्रि के, सुरभि स्वर्ग की लेते हैं ।
हम हैं शान्तिदूत धरणी के, छाँह सभी को देते हैं।
वीर–प्रसू माँ की आँखों के हम नवीन उजियाले हैं
गंगा, यमुना, हिन्द महासागर के हम रखवाले हैं।
तन मन धन तुम पर कुर्बान,
जियो जियो अय हिन्दुस्तान !

हम सपूत उनके जो नर थे अनल और मधु मिश्रण,
जिसमें नर का तेज प्रखर था, भीतर था नारी का मन !
एक नयन संजीवन जिनका, एक नयन था हालाहल,
जितना कठिन खड्ग था कर में उतना ही अंतर कोमल।
थर–थर तीनों लोक काँपते थे जिनकी ललकारों पर,
स्वर्ग नाचता था रण में जिनकी पवित्र तलवारों पर
हम उन वीरों की सन्तान,
जियो जियो अय हिन्दुस्तान !

हम शकारि विक्रमादित्य हैं अरिदल को दलनेवाले,
रण में जमीं नहीं, दुश्मन की लाशों पर चलनेंवाले।
हम अर्जुन, हम भीम, शान्ति के लिये जगत में जीते हैं
मगर, शत्रु हठ करे अगर तो, लहू वक्ष का पीते हैं।
हम हैं शिवा–प्रताप रोटियाँ भले घास की खाएंगे,
मगर, किसी जुल्मी के आगे मस्तक नहीं झुकायेंगे।
देंगे जान, नहीं ईमान,
जियो जियो अय हिन्दुस्तान।

जियो, जियो अय देश! कि पहरे पर ही जगे हुए हैं हम।
वन, पर्वत, हर तरफ चौकसी में ही लगे हुए हैं हम।
हिन्द–सिन्धु की कसम, कौन इस पर जहाज ला सकता ।
सरहद के भीतर कोई दुश्मन कैसे आ सकता है ?
पर की हम कुछ नहीं चाहते, अपनी किन्तु बचायेंगे,
जिसकी उँगली उठी उसे हम यमपुर को पहुँचायेंगे।
हम प्रहरी यमराज समान
जियो जियो अय हिन्दुस्तान!

संदर्भ और प्रसंग–

'जियो जियो अय हिन्दुस्तान' कविता नन्दकिशोर नवल द्वारा सम्पादित 'दिनकर रचनावली' में संकलित है। राष्ट्रीय सीमाओं की रक्षा में सन्नद्ध वीर जवानों की ओर से लिखी गयी है। इसमें वीर जवानों की ओर से भारत देश के गरिमामय इतिहास और संस्कृति को स्मरण किया गया है।

कठिन शब्द

आलोक–प्रकाश, **नवल**– नया, **प्रहरी**– रखवाला, **हिमाद्रि**– हिमालय, **सुरभि**– सुगंध, **धरणी**– धरती, **वीर–प्रसू**– वीर पुत्रों को पैदा करने वाली, **कुर्बान**–बलिदान, **प्रखर**– तेज, **हालाहल**–विष, **खड्ग**–तलवार, **शकारि**– शकों के शत्रु, विक्रमादित्य, **शिवा–प्रताप**– शिवाजी और राणा प्रताप,

व्याख्या–

इस कविता में सैनिक कहते हैं कि हम वीर हैं। हमारे अंदर गंभीरता है। हम मुश्किलों में भी कभी विचलित नहीं होते। हिमालय की चोटियों पर देश की रक्षा करते हुए इतनी ऊंचाई

पर होते हैं कि वहां से स्वर्ग की सुगंध महसूस होती है। अपने बारे में कवि कहता है कि हम भारतीय जवान स्वभाव से शांतिपूर्ण होते हैं और सभी को अपना सहयोग देने के लिए हमेशा तैयार रहते हैं। हमारी भारत माँ जो वीरों को जन्म देती है, हम उसी की प्यारी संतानें हैं। देश की रक्षा के लिए हम अपना तनमन और जान भी देने के लिए तैयार रहते हैं।

इस कविता में कवि वीर जवानों की ओर से यह कहना चाहता है कि हमारे पूर्वज शांति में विश्वास रखते थे लेकिन आवश्यकता पड़ने पर क्रांति अथवा युद्ध से भी पीछे नहीं हटते थे। शांति और युद्ध दोनों में उनका विश्वास था। पुरूषोचित कठोरता और स्त्रियोचित कोमलता दोनों से हमारे स्वभाव का निर्माण हुआ है। हम उन वीरों की संतान है जिनके हाथों में तलवारें होती थीं, लेकिन दिल फिर भी कोमल होता था। उनकी ललकारों पर पूरी दुनिया हिल उठती थी। स्वर्ग भी नृत्य करने लगता था।

इस बंद में कवि अपने पूर्वजों का स्मरण करते हुए वीर जवानों के माध्यम से कहता है कि हम शकों का समूल नाश करने वाले विक्रमादित्य की संतानें हैं। युद्ध भूमि में हम लोग दुश्मनों की लाशें बिछा देते हैं।

अर्जुन और भीम जैसे योद्धाओं की तरह वैसे तो हम लोग शांति के प्रेमी हैं, लेकिन अगर कोई हमसे शत्रुता करने की ठान ही लेता है तो उसको जीवित नहीं छोड़ते। हम उस राणा प्रताप के वंशज हैं जिन्हें घास की रोटियां खाना मंजूर था लेकिन किसी दुश्मन के आगे सिर झुकाना मंजूर नहीं था। हम उस देश के वासी हैं जिसे जान से अधिक ईमान प्यारा है।

हे प्यारे देश वासियों! तुम्हारी रक्षा में हम सीमा पर हमेशा जाग रहे हैं। वनों पर्वतों में घूम–घूम कर हम शत्रुओं से देश का बचाव कर रहे हैं। हमारे देश पर आक्रमण करने की हिम्मत कोई भी देश नहीं कर सकता। हमें पराये देश पर आक्रमण करने की कोई अभिलाषा नहीं है। दूसरे की जमीन और सम्पत्ति का हमारे अंदर कोई मोह नहीं है, लेकिन हम अपनी सम्पत्ति पर भी किसी को हाथ नहीं लगाने देंगे। इस मामले में हक यमराज से कम नहीं हैं।

काव्य सौष्ठव–

- अलंकारों का प्रयोग स्वाभाविक ढंग से हुआ है।
- भाषा सरल ओजपूर्ण किन्तु आलंकारिक है।
- छंद बड़ा ही प्रभावी और विषय बोध के अनुरूप है।
- सीमा के सैनिकों का बड़ा सुन्दर चित्रण हुआ है।
- कविता का मूल स्वर देश प्रेम है।

विशेष–इस कविता से हमें शांति और युद्ध के बारे में हमारी भारतीय समझ और विचारधारा का पता चलता है। शांति की स्थापना के लिए अनिवार्य होने पर युद्ध करना हमारे पूर्वजों का सिद्धांत रहा है।

बोध प्रश्न–1

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दें।

1. 'जननी के हिम–किरीट' से क्या आशय है ?

....

....

....

2. हिमालय के लिए किन–किन विशेषणों का प्रयोग हुआ है ?

....

....

....

3. शमर शेष है कविता में दिल्ली से कवि क्या पूछ रहा है?

....

....

....

4. तिमिर पुत्र और दस्यु किसे कहा गया है?

....

....

....

5. 'कांटों में राह बनाते हैं' से कवि का क्या तात्पर्य है?

....

....

....

6. वीर कविता में पर्वत किस चीज का प्रतीक है ?

....

....

....

7. 'कलम आज उनकी जय बोल' कविता में क्या कहा गया है।

....

....

....

8. विपत्ति आने पर बहादुर लोग क्या करते हैं?

....

....

....

9. 'जियो जियो अय हिन्दुस्तान' में वीर जवान अपने को किसका सपूत बताता है?

....

....

....

बोध प्रश्न–2

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

i. हिम किरीट किसे कहा गया है,?

क) हिमालय ख) हिमखण्ड ग) चीन घ) ठंढे प्रदेश

ii. प्रलय–नृत्य करने को किससे कहा गया है?

क) भगवान शंकर से ख) विष्णु से ग) ब्रम्हा से घ) कृष्ण से

iii. 'हिमालय' कविता किस संग्रह में संकलित है?

क) रश्मिरथी ख) उर्वशी ग) हुंकार घ) नील कुसुम

iv. दिनकर को किस पुस्तक के लिए ज्ञान पीठ दिया गया था?

क) उर्वशी के लिए ख) नील कुसुम ग) हुंकार घ) पुरूरवा

v. ओ रेशमी नगर के वासी में किस नगर के वासी की तरफ संकेत है?

क) दिल्ली ख) लंदन ग) कलकत्ता घ) बम्बई

vi. रानी किसे कहा गया है?

क) विक्टोरिया को ख) लक्ष्मी बाई को ग) दिल्ली को घ) सरोजनी नायडू को

vii. कवि अपनी कलम से किसकी जय बोलने को कहता है?

क) महात्मा गांधी की ख) नेहरू की ग) शहीदों की घ) भगत सिंह की

viii. 'कलम आज उनकी जय बोल' कविता में लघु दीपों ने क्या नहीं मांगा?

क) धन ख) सहयोग ग) स्नेह घ) बाती

ix. 'जियो जियो अय हिन्दुस्तान' कविता का वाचक कौन है?

क) कवि ख) स्वतंत्रता के आंदोलनकारी ग) वीर जवान
घ) गांधी जी

20.3 उपयोगी पुस्तके

दिनकर रचनावली, संपादक– नन्द किशोर नवल

20.4 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न–1

1. यहाँ जननी शब्द कवि ने भारत माता के लिए प्रयोग किया है। हिमालय पर्वत भारत देश के उत्तर दिशा में फैला हुआ है, वो वर्ष के ज्यादातर समय बर्फ से ढँका हुआ होता है, इसलिए ऐसा लगता है जैसे भारत माता के सर पर बर्फ का मुकुट है, इसलिए यहाँ कवि ने हिमालय को मेरी जननी के हिम–किरीट कहा है।

2. हिमालय को नगपति, विशाल, साकार, दिव्य, गौरव विराट जैसे विशेषणों से संबोधित किया गया है इसके अलावा उसे भारत माता का बर्फ से बना मुकुट, युगों–युगों से अजेय, निर्बंध, मुक्त, गर्वोन्नत और महान भी कहा गया है ।

3. दिल्ली स्वाधीन भारत की सत्ता का प्रतीक है। आजादी मिलने के बाद दिल्ली यानी सत्ता से जुड़े लोगों का उत्थान खूब हुआ, लेकिन साधारण जनता के जीवन में कोई बदलाव नहीं आया। दिल्ली चमक उठी लेकिन देश का अंधकार जैसे का तैसा ही रहा।

4. तिमिर पुत्र और दस्यु उन लोगों को कहा गया है जो अंग्रेजों के चले जाने के बाद भी देश में गुलामी का शासन बनाये रखना चाहते थे।

5. कांटों में राह बनाना एक मुहावरा है। इस मुहावरे का अर्थ है जहां कोई रास्ता न हो, या रास्ता निकालना एक दम असंभव हो, वहां भी रास्ता निकाल लेना। अर्थात मुश्किल से मुश्किल समय पर भी विजय प्राप्त कर लेना। 'वीर' कविता में कवि कहता है कि वीर लोग बड़ी से बड़ी मुश्किलों पर भी विजय प्राप्त कर लेते हैं।

6. वीर कविता में पर्वत विघ्न–बाधाओं का प्रतीक है। पहाड़ों को पार करना जिस तरह मुश्किल होता है, उसी तरह विघ्न भी जीवन में प्रगति का रास्ता रोक देते हैं।

7. इस कविता में आजादी की लड़ाई में शहीद हुए ज्ञात अज्ञात सभी शहीदों को याद किया गया है। उनके निःस्वार्थ बलिदान की प्रशंसा के लिए कवियों को प्रेरित किया गया है। राष्ट्रवाद इस कविता का मूल स्वर है।

8. विपत्ति आने पर बहादुर लोग नहीं घबराते। वे विपत्ति का धैर्य से मुकाबला करते हैं। वे काँटों में रास्ता बनाते हैं और परिश्रम करके उपलब्धि प्राप्त करते हैं।

9. वीर जवान अपने को ऐसे पूर्वजों का सपूत बता रहा है जो स्वभाव से अग्नि और शहद के मिश्रण थे। जिनमें पुरूष की कठोरता और स्त्री जैसी कोमलता साथ–साथ विद्यमान थी। जिनके हाथ में कठोर तलवार होती थी लेकिन आत्मा बहुत कोमल थी।

बोध प्रश्न–2

i. क

ii. क

iii. ग

iv. क

v. क

vi. ग

vii. ग

viii. ग

ix. ग

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

इकाई 21 काव्य–वाचन एवं विश्लेषण : हल्दीघाटी 'द्वादस सर्ग'

इकाई की रूप रेखा

21.0 उद्देश्य

21.1 प्रस्तावना

21.2 चयनित कविता का पाठ एवं विश्लेषण

21.3 उपयोगी पुस्तकें

21.4 बोध प्रश्नों के उत्तर

21.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप–

- श्यामनारायण पाण्डेय की कविता, 'हल्दी घाटी 'के द्वादस सर्ग के आरम्भिक बीस पदों की विस्तृत व्याख्या समझ सकेंगी/सकेंगे;
- श्याम नारायण पाण्डेय की कविता का मूल स्वर पहचान सकेंगी/सकेंगे;
- इस कविता के माध्यम से कवि की राष्ट्रीयता की भावना को समझ सकेंगी/सकेंगे;
- श्याम नारायण पाण्डेय की काव्य–भाषा के तत्वों की पहचान करना सीख सकेंगी/सकेंगे;
- श्याम नारायण पाण्डेय की कविता में शब्द–योजना और प्रयुक्त शब्दावली से परिचित हो जायेंगी/जायेंगे; और
- श्याम नारायण पाण्डेय के जीवन और उनकी साहित्यिक–राजनीतिक यात्रा के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकेंगी/सकेंगे।

21.1 प्रस्तावना

श्यामनारायण पाण्डेय का जन्म श्रावण कृष्ण पंचमी सम्वत् 1964, तदनुसार ईसवी सन् 1907 में ग्राम डुमराँव, जिला मऊ, (उत्तर प्रदेश) में हुआ। आरम्भिक शिक्षा के बाद ये संस्कृत अध्ययन के लिए काशी चले गये। यहीं रहकर काशी विद्यापीठ से हिन्दी में साहित्याचार्य किया। डुमराँव में अपने घर पर रहते हुए ईसवी सन् 1991 में 84 वर्ष की आयु में उनका निधन हुआ। मृत्यु से तीन वर्ष पूर्व आकाशवाणी गोरखपुर में अभिलेखागार हेतु उनकी आवाज में उनके जीवन के संस्मरण रिकार्ड किये गये। श्याम नारायण पाण्डेय जी ने चार उत्कृष्ट महाकाव्य रचे, जिनमें 'हल्दीघाटी' (काव्य) सर्वाधिक लोकप्रिय और 'जौहर' (काव्य) विशेष चर्चित हुए। 'हल्दीघाटी' में महाराणा प्रताप के जीवन और 'जौहर' में चित्तौड़ की रानी पद्मिनी के आख्यान हैं। हल्दीघाटी के नाम से विख्यात राजस्थान की इस ऐतिहासिक वीर भूमि के लोकप्रिय नाम पर लिखे गये हल्दीघाटी महाकाव्य पर उनको उस समय का सर्वश्रेष्ठ सम्मान देव पुरस्कार प्राप्त हुआ था। अपनी ओजस्वी वाणी के कारण आप कवि सम्मेलन के

मंचों पर अत्यधिक लोकप्रिय हुए। उनकी आवाज मरते दम तक चौरासी वर्ष की आयु में भी वैसी ही कड़कदार और प्रभावशाली बनी रही जैसी युवावस्था में थी।

रचनायें–

1. 'हल्दी घाटी' (1937–39 ई०)।
2. 'जौहर' (1939–44 ई०)
3. 'आरती' (1945–46 ई०)
4. 'तुमुल' (1948 ई०)। यह पुस्तक 'त्रेता के दो वीर' नामक खण्डकाव्य का ही परिवर्धित संस्करण है।
5. रूपांतर' (1948 ई०)
6. 'जय हनुमान' (1956 ई०) उनकी प्रमुख प्रकाशित काव्य पुस्तकें हैं।
7. 'माधव', 'रिमझिम', 'आँसू के कण' और 'गोरा वध' उनकी प्रारम्भिक लघु कृतियाँ हैं।
8. 'परशुराम' अप्रकाशित काव्य है तथा वीर सुभाष' रचनाधीन ग्रंथ है। श्यामनारायण पाण्डेय के संस्कृत में लिखे कुछ काव्य–ग्रंथ भी अप्रकाशित ही हैं।

पुरस्कार, सम्मान– देव सम्मान (हल्दी घाटी)

21.2 चयनित कविता का पाठ एवं विश्लेषण

एक

हल्दीघाटी द्वादस सर्ग

निर्बल बकरों से बाघ लड़े
भिड़ गये सिंह मृग–छौनों से।
घोड़े गिर पड़े गिरे हाथी,
पैदल बिछ गये बिछौनों से।।1।।

हाथी से हाथी जूझ पड़े,
भिड़ गये सवार सवारों से।
घोड़ों पर घोड़े टूट पड़े,
तलवार लड़ी तलवारों से।।।2।।

हय–रूण्ड गिरे, गज–मुण्ड गिरे,
कट–कट अवनी पर शुण्ड गिरे।
लड़ते–लड़ते अरि झूण्ड गिरे
भू पर हय विकल बितुण्ड गिरे।।3।।

क्षण महाप्रलय की बिजली सी
तलवार हाथ की तड़प–तड़प।

हय–गज–रथ–पैदल भगा भगा
लेती थी बैरी वीर हड़प।।4।।

क्षण पेट फट गया घोड़े का
हो गया पतन कर कोड़े का।
भू पर सातंक सवार गिरा,
क्षण पता न था हय–जोड़े का।।5।।

चिंग्घाड़ भगा भय से हाथी
लेकर अंकुश पिलवान गिरा।
झटका लग गया, फटी झालर
हौदा गिर गया निशान गिर गया।।16।।

कोई नत–मुख बेजान गिरा
करवट कोई उत्तान गिरा।
रण–बीच अमित भीषणता से
लड़ते–लड़ते बलवान गिरे।।।।

होती थी भीषण मार–काट
अतिशय रण से छाया था भय।
था हार–जीत का पता नहीं
क्षण इधर विजय क्षण उधर विजय।।18।।

कोई व्याकुल भर आह रहा
कोई था विकल कराह रहा।
लोहू से लथपथ लोथों पर
कोई चिल्ला अल्लाह रहा।।19।।

धड़ कहीं पड़ा, सिर कहीं पड़ा,
कुछ भी उनकी पहचान नहीं।
शोणित का ऐसा वेग बढ़ा,
मुर्दे बह गये निशान नहीं ।।10।।

मेवाड़–केसरी देख रहा
केवल रण का न तमाशा था।
वह दौड़–दौड़ करता था रण,
वह मान–रक्त का प्यासा था।।11।।

चढ़कर चेतक पर घूम–घूम
करता सेना–रखवाली था।
ले महा–मृत्यु को साथ–साथ,
मानो प्रत्यक्ष कपाली था।।12।।

रण–बीच चौकड़ी भर–भरकर
चेतक बन गया निराला था।
राणा प्रताप के घोड़े से,
पड़ गया हवा को पाला था।।13।।

गिरता न कभी चेतक–तन पर,
राणा प्रताप का कोड़ा था।
वह दौड़ रहा अरि–मस्तक पर
या आसमान पर घोड़ा था।।14।।

जो तनिक हवा से बाग हिली,
लेकर सवार उड़ जाता था।
राणा की पुतली फिरी नहीं,
तब तक चेतक मुड़ जाता था।।15।।

कौशल दिखलाया चालों में
उड़ गया भयानक भालों में।
निर्भीक गया वह ढालों में,
सरपट दौड़ा करवालों में।।16।।

है यहीं रहा, अब यहाँ नहीं,
वह वहीं रहा है वहाँ नहीं।
थी जगह न कोई जहाँ नहीं,
किस अरि–मस्तक पर कहाँ नहीं।।17।।

बढ़ते नद–सा वह लहर गया,
वह गया गया फिर ठहर गया।
विकराल ब्रज–मय बादल–सा
अरि की सेना पर घहर गया।।18।।

भाला गिर गया, गिरा निशंग,
हय–टापों से खन गया अंग।
वैरी–समाज रह गया दंग
घोड़े का ऐसा देख रंग।।19।।

चढ़ चेतक पर तलवार उठा
रखता था भूतल–पानी को।
राणा प्रताप सिर काट–काट
करता था सफल जवानी को।।20।।

संदर्भ और प्रसंग–

प्रस्तुत कविता वीर रस के यशस्वी कवि श्याम नारायण पाण्डेय के प्रसिद्ध काव्य 'हल्दीघाटी' के द्वादस सर्ग का एक अंश है। 'हल्दी घाटी' काव्य में महाराणा प्रताप और अकबर के

सेनापति मानसिंह के बीच हल्दीघाटी के मैदान में हुए भीषण युद्ध में महाराणा प्रताप के रणकौशल और वीरता का वर्णन है। प्रस्तुत पद्यांश में हल्दीघाटी युद्ध के एक दृश्य का बड़ा ही रोचक वर्णन है। इसे पढ़ कर युद्ध का साक्षात दृश्य (आंखों के सामने साकार होने लगता है। श्यामनारायण पाण्डेय को इस काव्य की रचना के लिए उस समय के सर्वश्रेष्ठ 'देव पुरस्कार' से सम्मानित किया गया था। इस पद्यांश को पढ़ कर राष्ट्रीय भावना से मन रोमांचित हो जाता है।)

कठिन शब्द

मृग–छौना– हिरन के बच्चे, **हय–रूण्ड**– घोड़े का सिर हीन धड़, **गज–मुण्ड**– हाथी का सिर, **शुण्ड**– हाथी का सूंड, **अरि**–दुश्मन, **अवनी**–पृथ्वी, **वितुण्ड**– हाथी, **कर**–हाथ, **उत्तान**– पीठ के बल, **शोणित**–खून, **केसरी**– सिंह, **मान–रक्त**– मानसिंह का खून, **चेतक**– राणाप्रताप के घोड़े का नाम, **कपाली**– रक्त पीने वाला, **बाग**– घोड़े की लगाम, **नद**–नदी, **निषंग**– तलवार

व्याख्या–

कवि युद्ध का दृश्य वर्णन करते हुए कहता है कि हल्दी घाटी के मैदान में निर्बल बकरों से बाघ और हिरनों के छौनों से शेर लड़ रहे थे। अर्थात कोई भी किसी से लड़ रहा था। कहीं घायल होकर घोड़े गिरे पड़े थे तो कहीं हाथी। पैदल सेना की लाशें बिछौनों की तरह बिछी हुई थीं।

हाथी से हाथी जूझ रहे थे तो कहीं सवार सवारों से लड़ रहे थे। घोड़ों पर घोड़े आक्रमण कर रहे थे और तलवार वाले तलवार वालों से युद्ध करने में लगे थे।

युद्ध इतना भीषण हो रहा था कि कहीं घोड़ों के धड़ कट कर गिरे पड़े थे तो कहीं हाथियों के सिर पड़े हुए थे। हाथियों के सूंड भी यहां वहां कट कर गिरे पड़े थे। दुश्मनों की सेना के झुंड के झुण्ड सैनिक कटकर धरती पर गिरते जा रहे थे।

युद्ध इतना भीषण था कि सैनिकों की तलवारें महाप्रलय की बिजली की तरह चमक रही थी। वीरों की सेना दुश्मन सेना के हाथी घोड़े रथ और पैदल सैनिकों को दौड़ा–दौड़ा कर मार रहे थे।

किसी के घोड़े का क्षण भर में पेट फट गया तो किसी के हाथ से छूट कर कोड़ा नीचे गिर गया। कहीं डर के मारे घोड़े का सवार ही गिर गया तो कही क्षण भर में ही घोड़े मैदान छोड़ लापता हो जाते थे।

दुश्मनों के हाथी भय के मारे भागने लगे। पिलवान हाथी पर से अंकुश लिये लिए भूमि पर गिर पड़े। जोर का झटका लगने से हाथी का झालर फट गया और हौदा और निशान सब नीचे जमीन पर आ गया।

कोई मुंह के बल गिरा पड़ा था तो कोई करवट तो कोई पीठ के बल गिरा पड़ा था। युद्ध इतना भीषण था कि लड़ते–लड़ते एक से एक वीर जवान कट कर धरती पर गिरे जा रहे थे।

इतनी भीषण मार काट मची थी कि चारों ओर मौत का खौफ मडरा रहा था। सब एक दूसरे को मारने और मरने पर उतारू थे। कब किस पक्ष की जीत हुई और कब जीत हार में बदल गयी, कुछ पता नहीं चलता था। जीत कभी इस तो कभी उस पाले में डोल रही थी।

जमीन पर पड़े घायल दर्द से व्याकुल होकर कराह रहे थे। सब तरफ खून से लथपथ लाशों के बीच हर तरफ से अल्लाल अल्लाह की आवाजें आ रही थी।

पूरा मैदान कटे हुए सिर और धड़ों से भरा पड़ा था। किसी का सिर यहां तो धड़ वहां पड़ा था। कौन किसका धड़ है और कौन सिर, इसकी पहचान करना मुश्किल था। खून का प्रवाह इतना ज्यादा था कि कितने मुरदे बह कर किस तरफ गये इसका कोई पता ही नहीं चला। इस कविता में अतिश्योक्ति अलंकार का बहुत अनूठा प्रयोग किया गया है।

युद्ध के इस मारकाट के बीच राणाप्रताप केवल तमाशा नहीं देख रहे थे। वे खुद भी दौड़–दौड़ कर शत्रुओं पर वार कर रहे थे। उनकी तलवार अकबर के सेनापति मान सिंह के रक्त की प्यासी थी।

राणा प्रताप के बारे में कवि कहता है कि चेतक पर चढ़ कर वे घूम–घूम कर रण भूमि में अपनी सेना की रखवाली करते थे। उन्हें मृत्यु का तनिक भय न था। मानों उन्होंने खुद कपाली का रूप धारण कर लिया था।

इस बंद में राणा प्रताप और उनके घोड़े चेतक की बहादुरी का वर्णन किया गया है। कवि कहता है कि चेतक युद्ध के मैदान में इस छोर से उस छोर तक मतवाला होकर चौकड़ी भर रहा था। अपनी फुर्ती और चुस्ती मे वह एक दम निराला था। वह हवा के वेग से भी तेज गति से दौड़ लगा रहा था। ऐसा लगता था मानों हवा और चेतक में प्रतियोगिता ठन गयी हो।

चेतक रण कौशल में इतना सिद्ध था कि उसे राणा प्रताप के इशारों का पहले से ही अनुमान हो जाता था। इसलिए राणा प्रताप को कभी उसे कोड़ा या एड लगाने की आवश्यकता नहीं पड़ती थी। वह खुद ही हवा के वेग से शत्रु सेना के सिर पर होता हुआ मैदान के एक छोर से दूसरे छोर तक का चक्कर लगा आता था। उसकी कलाबाजी को देख कर उसे आसमान का घोड़ा कहा जाता था।

चेतक की फुर्ती और चुस्ती की प्रसंशा करते हुए कवि इस बंद में कहता है कि लगाम के जरा सा हिलते ही वह सरपट हवा की गति से उड़ने लगता था। चेतक ऐसा रण–सिद्ध घोड़ा था कि राणा की निगाह जिस तरफ मुड़ती थी वह खुद ब खुद उसी तरफ मुड़ जाता था।

चेतक के रण कौशल और तीव्रता की प्रसंशा करते हुए इस बंद मे कवि ने कहा है कि वह इतना रण–कुशल था कि भाला वाले सैनिकों में उड़ कर पहुंच जाता था। कभी ढाल वालों के बीच बिना डर भय के चला जाता तो कभी तलवार से लड़ रहे सैनिकों के बीच भी घुस जाता था।

चेतक इतनी छिप्र गति से दौड़ लगाता था कि अनुमान करना मुश्किल था कि वह कब किस क्षण में कहां होते हुए भी वहां नहीं होगा। चेतक जरा देर में कहीं से कहीं पहुंच जाता था। शत्रुओं के मस्तक पर दौड़ता हुआ वह पूरे रणक्षेत्र में व्याप्त हो जाता था।

इस बंद में कवि ने चेतक की गति की तुलना तेजी से बढ़ती हुई नदी से किया है। जिस तरह नदी की बाढ़ क्षण भर में सर्वनाश का दृश्य पैदा कर देती है, वही हाल चेतक का था। दौड़ते–दौड़ते अचानक वह कहीं भी कभी भी रूक सकता था। उसके आक्रमण के बारे में कोई अनुमान लगाना कठिन था। कभी नदी की तरह हहराते हुए आगे बढ़ता था तो कभी

बादल की तरह शत्रु की सेना पर बज्रपात बन कर टूट पड़ता था और शत्रु सेना का सर्वनाश हो जाता था।

चेतक का आक्रमण ऐसा होता था कि उसके भय से सैनिकों के हाथ से छूट कर भाले और तलवार गिर जाते थे। उसके टापों के नीचे कुचल कर शत्रुदल के सैनिक प्राण गवां देते थे। कवि कहता है कि चेतक का यह कारनामा देख कर अकबर की सेना के लोग आश्चर्य चकित रह जाते थे।

इसके पूर्व राणा प्रताप के घोड़े– चेतक की वीरता और रण कौशल का वर्णन किया गया था। इस पद में राणा प्रताप को चेतक पर चढ़ कर युद्ध करते हुए दिखाया गया है। कवि कह रहा है कि तलवार लेकर राणा प्रताप चेतक पर चढ़ कर राणा प्रताप अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिए शत्रुओं का सिर काट–काट कर अपनी जवानी को सफल बना रहे थे।

काव्य सौष्ठव–

- कविता में हल्दीघाटी की युद्धभूमि का दृश्य वर्णन इतना जीवंत है मानों युद्ध सामने घट रहा हो।
- यह कविता वीर रस प्रधान है। इसे पढ़कर मन में वीरता का भाव संचार होता है।
- इस कविता की शैली में ओज की प्रधानता है।
- भाषा वीर रस पूर्ण और प्रवाह पूर्ण है।
- भाषा तत्सम और विषय वस्तु के अनुरूप है।
- श्लेष, अतिशयोक्ति, पुनरुक्तिप्रकाश, उत्प्रेक्षा, अनुप्रास आदि अलंकार से कविता का सौंदर्य बढ़ गया है।
- राणा प्रताप और उनके घोड़े चेतक की वीरता और कौशल का बड़ा ही अदभुत वर्णन हुआ है।

विशेष–

यह कविता मध्यकालीन भारत में अकबर और राणा प्रताप के बीच युद्ध की पृष्ठ भूमि पर रची गयी है। मातृभूमि की रक्षा के लिए मर मिटने वाले राणाप्रताप के माध्यम से यह कविता हमारे भीतर स्वाधीनता की सोई हुई चेतना को जाग्रत करती है। इसका भाषा सौष्ठव और दृश्य चित्रण बड़ा ही प्रभावशाली है। वीर रस प्रधान होने के कारण इसे पढ़ने से मन में उत्साह का संचार होता है।

बोध प्रश्न–1

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दें–

1. इस कविता का सारांश लिखिये।

   ....

   ....

   ....

2. मेवाड़ केसरी किसे और क्यों कहा गया है?

....

....

....

3. चेतक के बारे में संक्षेप में बताइए।

....

....

....

4. इस कविता में किस रस का संचार हुआ है? संक्षेप में लिखें।

....

....

....

5. यह कविता वीर रसप्रधान है, क्यों?

....

....

....

6. कविता में अतिशयोक्ति अलंकार का कहां–कहां प्रयोग हुआ है, उदाहरण देकर बताइए।

....

....

....

7. हल्दीघाटी युद्ध के बारे में क्या जानते/जानती हैं, संक्षेप में लिखें।

....

....

....

8. श्यामनारायण पाण्डेय के बारे में क्या जानते हैं? संक्षेप में लिखें।

....

....

....

9. इस कविता को पढ़ कर पाठक के मन पर क्या प्रभाव पड़ता है?

....

....

....

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

10. कविता की शब्द योजना और ध्वनि सौंदर्य पर संक्षेप में अपने विचार व्यक्त करें।

....

....

....

बोध प्रश्न–2

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

i. चेतक किसका नाम था

क) अकबर के सेना पति का ख) राणा प्रताप के सेनापति का
ग) राणा प्रताप के घोड़े का घ) अकबर के हाथी का।

ii. हल्दीघाटी किसका नाम है?

क) राणा प्रताप के किले का ख) राणा प्रताप के राज्य का
ग) युद्ध के मैदान का घ) जंगल का

iii. मेवाड़ केसरी किसे कहा गया है?

क) राणा प्रताप को ख) मान सिहं को ग) चेतक को घ) अकबर को।

iv. 'शोणित का ऐसा वेग बढ़ा, मुरदे बह गये, निशान नहीं' में कौन सा अलंकार है?

क) वक्रोक्ति अलंकार ख) अतिशयोक्ति अलंकार ग) रूपक अलंकार
घ) अनुप्रास अलंकार।

v. 'चढ़कर चेतक पर घूम–घूम, करता सेना–रखवाली था।' किसके लिए कहा गया है?

क) राणा प्रताप के लिए ख) मान सिंह के लिए ग) अकबर के लिए
घ) सैनिकों के लिए

vi. श्यामनारायण पाण्डेय का जन्म किस सन में हुआ था?

क) सन 1964 मे ख) 1907 में ग) 1864 में घ) 1909 में।

vii. श्यामनारायण पाण्डेय को कौन सा सम्मान मिला था?

क) बिहारी सम्मान ख) देव सम्मान ग) बिड़ला सम्मान
घ) साहित्य अकादमी सम्मान

viii. कवि को किस रचना के लिए सम्मान मिला था?

क) जौहर ख) हल्दी घाटी ग) जय हनुमान घ) रूपांतर

ix. कवि की मृत्य किस उम्र में हुई थी?

क) 90वर्ष ख) 80 वर्ष ग) 84 वर्ष घ) 91वर्ष

x. हल्दीघाटी कविता किस बोली में लिखी गयी है?

क) भोजपुरी ख) अवधी ग) खड़ी बोली घ) बुंदेली

21.3 उपयोगी पुस्तके

'हल्दी घाटी' – श्याम नारायण पाण्डेय

21.4 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न–1

1. इस कविता में राणा प्रताप और उनके घोड़े द्वारा हल्दीघाटी के मैदान में अकबर की सेना से युद्ध के दौरान दिखाई गयी वीरता और रणकौशल का वीर रसात्मक शिल्प में बड़ा ही सुंदर वर्णन किया गया है। इस पद्यांश का आरम्भ हल्दी घाटी में युद्ध के दृश्य वर्णन से होता है। राणा प्रताप के सैनिक शत्रुओं की सेना पर खदेड़–खदेड़ कर हमला कर रहे थे। युद्धभूमि नरमुण्डों से पटी हुई दिखाई पड़ रही थी। कहीं हाथी का मस्तक तो कहीं सूंड कहीं घोड़े का सिर तो कहीं धड़ कट कर भूमि पर पड़े हुए थे। सैनिकों की लाशें बिछौने की तरह बिछी हुई थीं। किसका धड़ कौन है और सिर कहां है, पहचानना मुश्किल हो गया था। युद्ध भूमि में ऐसा लगता था मानों रक्त की नदी बह रही हो और उसमें लाशें बह कर बिला गयी हों। युद्ध इतना भीषण था कि किस पक्ष की जीत हुई और कब जीत हार में बदल गयी, कुछ पता नहीं चलता था। ऐसे भीषण रक्तपात भरे युद्ध में राणा प्रताप अपने घोड़े पर बैठकर रण क्षेत्र में इस छोर से उस छोर तक घूम–घूम कर निडर भाव से अपने सैनिकों की रखवाली कर रहा था। राणा प्रताप का घोड़ा, जिसका नाम चेतक था, उसकी प्रसंशा में कवि कहता है कि सैनिकों के बीच बिना रोक टोक घुस जाता था। इतनी छिप्र गति से दौड़ लगाता था कि अनुमान करना मुश्किल था कि वह कब किस क्षण में कहां पहुंच गया। कवि ने उसकी गति की तुलना हवा की गति से की है। शत्रुओं के मस्तक पर दौड़ता हुआ वह पूरे रणक्षेत्र में व्याप्त हो जाता था। उसके बारे में कोई अनुमान लगाना कठिन था। कभी नदी की तरह हहराते हुए आगे बढ़ता था तो कभी बादल की तरह शत्रु की सेना पर वज्रपात बन कर टूट पड़ता था और शत्रु सेना का सर्वनाश हो जाता था।

2. महाराणा प्रताप को मुगलों से अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिए वीरता पूर्वक अकबर की सेना से युद्ध में विजय हासिल करने के कारण मेवाड़ केसरी कहा गया। मेवाड़ राज्य की बागडोर संभालते समय राणा प्रताप के पास न राजधानी थी न राज वैभव। उनके पास केवल आत्म सम्मान था। उनमें राष्ट्रीयता कूट–कूट के भरी थी। उन्होनें अकबर का संधि प्रस्ताव ठुकरा दिया था। इसलिए हल्दी घाटी का युद्ध हुआ। हल्दीघाटी के मैदान में हार कर भी राणा प्रताप ने हार नहीं मानी और एक एक कर अपने सभी किलों को फिर से जीत लिया। मेवाड़ को खोकर उसे फिर से पा लेने के कारण उन्हें मेवाड़ केसरी कहा जाता है।

3. चेतक महाराणा प्रताप का सबसे प्रिय घोड़ा था। जब–जब महाराणा प्रताप और मुगलों के बीच युद्ध का जिक्र होता है, चेतक का जिक्र अपने आप आ जाता है। चेतक केवल घोड़ा ही नहीं, अपने आप में एक इतिहास है, स्वामिभक्ति और देशभक्ति की ऐसी मिसाल जो इतिहास में कभी–कभी देखने को मिलते हैं। स्वामिभक्ति, वफादारी, कर्तव्यनिष्ठा और राष्ट्र के प्रति समर्पण की भावना का चेतक से उत्तम उदाहरण इतिहास में कम ही देखने को मिलता है। चेतक की वीरता और स्वामिभक्ति की पराकाष्ठा को हिंदी साहित्य

के वीर रस के कवि श्यामनारायण पांडेय जी ने अपनी कविता में उसकी वीरता और स्वामिभक्ति का मार्मिक चित्रण करके उसे इतिहास में अमर कर दिया है।

4. श्यामनारायण पाण्डेय मुख्यतः वीर रस के प्रसिद्ध कवि हैं। हल्दीघाटी खण्ड काव्य एक वीर रस प्रधान काव्य है। जिस काव्य में वीरता पूर्ण विचारों या घटनाओं का वर्णन होता है, वहां वीर रस की सृष्टि होती है। वीर रस शरीर में उत्साह का संचार करते हुए गर्व की अनुभूति कराने में सक्षम होता है। युद्ध वर्णन में इस रस की निष्पत्ति होती है। हल्दीघाटी कविता में कवि नें राणा प्रताप और चेतक की वीरता का बखान जिस काव्यात्मक शैली में किया है, वह वीर रस का सर्वोत्तम उदाहरण है।

5. इस पाठ में चयनित काव्यांश हल्दीघाटी से लिया गया है। इसमें राणा प्रताप के घोड़े चेतक के रण कौशल और युद्ध भूमि में चल रही मार काट का जिस शैली और भाषा में वर्णन किया गया है, उसे पढ़ कर मन मे वीर रस का संचार होता है। युद्ध भूमि का साक्षात अपनी सेनाओं का विजय अभियान देखने का अनुभव कराकर कवि ने हमारे भीतर उत्साह और वीर भाव का सफल सृजन किया है। जिस तरह युद्ध भूमि में सैनिको का उत्साहवर्द्धन करने के लिए नगाड़े आदि बजाये जाते थे, उससे वीरता का भाव पैदा करने में ध्वनियों के महत्व का पता चलता है। काव्य रचना में भी उसी तरह कवि भाषा और शब्दों के माध्यम से एक खास किस्म का नाद पैदा करता है जिससे वीर रस का जन्म होता है। हल्दी घाटी कविता में प्रायः सभी बंद वीररसात्मक नाद की सृष्टि करते हैं। यहां एक उदाहरण पर्याप्त होगा।

   हय–रूण्ड गिरे, गज–मुण्ड गिरे,
   कट–कट अवनी पर षुण्ड गिरे।
   लड़ते–लड़ते अरि झुण्ड गिरे?
   भू पर हय विकल बितुण्ड गिरे।।3।।

6. वर्णन और विवरण को प्रभावशाली ध्यानाकर्षक बनाने के लिए कवि इस अलंकार का उपयोग करते हैं। वैसे तो इस अलंकार का प्रयोग किसी भी भाव भूमि की कविता में किया जा सकता है, लेकिन वीर रस और अतिशयोक्ति अलंकार में गहरा सम्बन्ध होता है। जहाँ किसी घटना, स्थिति या वस्तु के गुण दोष आदि का वर्णन अविश्वसनीय स्तर तक बढ़ा कर किया जाय तो अतिशयोक्ति अलंकार कहलाता है। अतिशयोक्ति अलंकार का उद्देश्य चमत्कृत कर देना होता है। हल्दी घाटी कविता में चेतक की वीरता और राणा प्रताप के बल और रणकौशल का वीर रसात्मक वर्णन करने के लिए श्याम नारायण पाण्डेय जी ने इस अलंकार का खूब प्रयोग किया है। यहां कुछ एक उदाहरण से अतिशयोक्ति अलंकार को समझा जा सकता है–

   जो तनिक हवा से बाग हिली,
   लेकर सवार उड़ जाता था।
   राणा की पुतली फिरी नहीं,
   तब तक चेतक मुड़ जाता था।।15।।

चेतक की बुद्धिमत्ता और फुर्ती की प्रसंशा में कवि ने यहां अतिशयोक्ति अलंकार का बड़ा सुंदर प्रयोग किया है। यहां घोड़े का उड़ना और राणा प्रताप की आंख की पुतली

फिरने के पहले ही मुड़ जाने का वर्णन विश्वसनीय नहीं है, इसलिए इसमें अतिशयोक्ति अलंकार है।

7. महाराणा प्रताप और अकबर की सेना के बीच का प्रसिद्ध युद्ध हल्दी घाटी के मैदान में हुआ था। मुगलों का नेतृत्व आमेर के राजा मान सिंह ने किया था, उनके पास लगभग 5,000–10,000 लोगों की सेना थी। इसका नाम हल्दीघाटी इसलिये पड़ा क्योंकि यहाँ की मिट्टी हल्दी जैसी पीली है। हल्दी घाटी का युद्ध राणा प्रताप हार गये थे। किन्तु उनका घोड़ा चेतक घायल होने के बावजूद उन्हें सुरक्षित निकाल लेने में सफल हुआ था। राणा प्रताप बहुत दिनों तक जंगलों में छिपकर अपना सैन्य संगठन मजबूत करते रहे और बाद में उन्होनें एक–एक कर के मेवाड़ के सभी किलों को अपने कब्जे में लेकर मेवाड़ की सत्ता पुनः हासिल करने में सफल हो गये थे।

8. श्यामनारायण पाण्डेय वीर रस के कवि थे। वे वीर रस की जितनी सुंदर कविताएं लिखते थे, उतने ही भावपूर्ण ढंग से कवि सम्मेलनों में ओजस्वी स्वर में पाठ भी करते थे। पाण्डेय जी काशी विद्यापीठ से हिन्दी में साहित्याचार्य थे। उनकी रचना का प्रधान विषय मुगलकालीन भारत में हुए युद्ध होते थे। उन्होंने चार उत्कृष्ट महाकाव्य रचे, जिनमें हल्दीघाटी (काव्य) को सर्वाधिक लोकप्रियता मिली। यह महाराणा प्रताप के जीवन, अकबर से हुए युद्ध पर केन्द्रित एक आख्यान है। हल्दीघाटी पर पाण्डेय जी को देव पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। देव सम्मान उनके समय का हिन्दी में सर्वश्रेष्ठ सम्मान माना जाता था। अपनी ओजस्वी वाणी के कारण सम्मेलन के मंचों पर उन्हें अपार लोकप्रियता प्राप्त थी। आकाशवाणी से उन्हें अनेक बार अपनी रचनायें प्रसारित करने का अवसर मिला था। चौरासी वर्ष की उम्र में, उनकी सन 1991 में मृत्यु हुई थी।

9. यह एक वीर रस प्रधान देश प्रेम की भावना पैदा करने वाली कविता है। इस कविता में अपनी मातृभूमि को गुलामी की जंजीरों से आजाद करने के लिए राणा प्रताप द्वारा लड़े गये भीषण युद्ध का वर्णन है। यह वर्णन पढ़ कर हमारे मन में अपनी मातृभूमि की रक्षा की भावना पैदा होती है। यह कविता जब लिखी गयी थी, देश में अंग्रेजी शासन था। उस समय राष्ट्रीयता की चेतना जगा कर जनता के मन में आजादी के लिए लड़ने की भावना पैदा करना आवश्यक था। माखनलाल चतुर्वेदी, बालकृष्ण शर्मा नवीन, मैथिलीशरण गुप्त और दिनकर जी समेत तमाम कवि देश प्रेम की कवितायें लिख रहे थे। श्यामनारायण पाण्डये भी उसी राष्ट्रवादी धारा के प्रमुख कवि थे। इनकी कविता का जनता के मन पर गहरा प्रभाव पड़ता था। आजादी के आंदोलन में उनकी कविताओं की भूमिका को अस्वीकार नही ंकिया जा सकता।

10. किसी काव्यकृति को प्रभावशाली बनाने में भावों के अनुरूप शब्द चयन बहुत महत्वपूर्ण होता है। शब्दों की अपनी ध्वनियां होती हैं। कुछ कर्ण कटु तो कुछ कर्णप्रिय शब्द होते हैं। उदाहरण के लिए टकार वाले शब्द अकसर कर्ण कटु होते हैं। लेकिन वीर रस की कविताओं में इन्हीं वर्णों से युद्ध का वीरोचित वातावरण बनता है। अतः वीर रस की कविताओं में कवि लोग अकसर टंकार की ध्वनि वाले शब्दों का ज्यादा प्रयोग करते हैं। इस दृष्टि से देखें तो हल्दीघाटी कविता में रस के अनुरूप शब्दों का बड़ा ही सटीक प्रयोग हुआ हैः

हय–रूण्ड गिरे, गज–मुण्ड गिरे,
कट–कट अवनी पर षुण्ड गिरे।
लड़ते–लड़ते अरि झुण्ड गिरे
भू पर हय विकल बितुण्ड गिरे।।3।।

बोध प्रश्न–2

i. ग

ii. ग

iii. क

iv. ख

v. क

vi. ख

vii. ख

viii. ख

ix. ग

x. ग

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY